



VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA



'बिदेह' १३० म अंक १३ मई २०१३ (वर्ष ६ मास ६५ अंक १३०)

ई अंकमे अछि:-

गद्य



जगदीशमन सा 'मन' - बिहारी कथा

गद्य



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अग्नि' - गजब १-४

गद्य-गद्य आवृत्ति: पाथला (कौकशी उपास) -  
डा. गीतु कुमार सिंह



तुकाबाग बागा मैथिली - मैथिली अग्रवाद-



बिदेह बुतन अंक भाषागत बचनलेखन-



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE



VIDEHA

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ( ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीटाँक लिंकपव उगएँ अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link .

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कएमे Videha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिन ३० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.एफ़ीड एनीमेटरकेँ अपन साँठे/ रीगपव जगाँउ ।



बिग "लेआउट" पव "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगप केनसँ सेहो बिदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरौ लेन <http://reader.google.com/> पव जा कए Add a Subscription रीषन लिंक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक आ Add रीषन दराँउ ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह लेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन पोडकास्ट साँठे

<http://videha123radio.wordpress.com/>



## VIDEHA

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहन छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mithilakshar follow links below or contact at [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)) तँ एहि हेतु नीटाँक लिंक सभ पब जाई । संगहि बिदेहक सुँत मैथिली भाषापाक/ बरना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू ।  
<http://devanaagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँकमे आँनताँन देरनागरी टाँगप कक, रीँकमे कापी कक आ रई डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रई फाँगनेँ मेर कक । विशेष जानकारीक लेन [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब सम्पर्क कक ।) (Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM) )/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maitthili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maitthili e magazine in .pdf format and Maitthili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अंक आ अडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ ह्याँठेँ सभक फाँगन सभ (उँचाव, रँड सुँथ साव आ दूरस्थित मँत्र सहित) डाँडनलाड कवरॉक हेतु नीटाँक लिंक पब जाई ।

### VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबीम्बेव पुरी महाकरि रिन्यापति । भावत आ लगानक मारुँमे पसबन मिथिलाक धवती प्राँटन कानहिसँ महान प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मतमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



लौबी-नीकबक पानरुँमे कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० बर्य पुरीक) अलिनेथ अकित अछि । मिथिलाक भावत आ लगानक मारुँमे पसबन एहि तबहक अत्याच प्राँटन आ नर स्थापन, चित्र, अलिनेथ आ मुर्तिकलाक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अग्रयण संगहि बिदेहक सर्ट-गँजन आ नुँज सर्बिस आ



## VIDEHA

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित लेखमाओषे सभक समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्पिक  
अद्ययणी

बिदेह ज्ञानरुतक डिस्कसन फोरमपर जाड ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पर जाड ।

### गद्य



जगदाशुद मा 'मल्ल'- रिहसि कथा



जगदाशुद मा 'मल्ल'- रिहसि कथा

ग्राम पोस्ट हबिधुव डीहठेन, मधुबनी

### गालेष्ठी

सृजितजी मेठेव सागकिन डागर करेत पाँडा प्रशित जीकेँ रैमोले । मिशिव जीक दनाशपर कनना ।  
आँगा-आँगा सृजितजी लुक पाडु प्रशितजी, मिशिवजी नग जा सृमितजी, "नमाकाव मिशिवजी, हम कहल  
बही ले आहारदेसँ समरित, माँजीक गठियाक दराग । हिनकासँ मित्र आ प्रशितजी, हमव सीमियव डधि ।  
अपलक सभ गप्पक उचैत उतव देत ।

"मिशिवजी, "नमाकाव- नमाकाव (कसी दिस गशिवा कए) रैसन जाड ।"

तिस्र गोष्ठी कसी ग्रहण कएना, तदुपरांत मिशिवजी, "हाँ कहियो ।"

प्रशितजी, "हम एकगोष्ठी आहारदेदिक कसणीसँ जुड़न डी आ हमवा सभ नग किछ असाधा बोग जेना  
मधुमेह, गठिया, रींगी, हाडि प्रार्लेम आदिक सफल उगटाव अछि । सृजित भागसँ ज्ञात भेल अपलक  
माए गठिया---"

मिशिवजी, प्रशित जीक गप्प रिचमे बोकेत, "हाँ, से सभ ठीके पहिले कहू गालेष्ठी डैक ।"

प्रशितजी, "गालेष्ठी ! गालेष्ठी कोणा कहू रुदा ठीक होराक सए ठका रिन्नान डैक ।"

मिशिवजी, "हाँ गहे, जखन गालेष्ठीए बहि तखन हम अपलक गप्प कोणा मागर ।"



**VIDEHA**

प्रशोतजी, “सुनु-सुनु, हमर सभक गहृति सुनना राद अहाँ अगला रूमरै आ मागरै जे गठियाक उपाचार सभर डेक ।”

मिषिबजी, “कोणा माणु, अगल गालेष्ठी देरै तहन ल मागर । आग रिम रबखसँ कोणा डाकठव कोणा अस्पतानसँ ठीक नहि भेलै, अहूँ गालेष्ठी नहि नए बहन छी आ अही की दुनियाँक कोणा डाकठव गालेष्ठी नहि नएत तखन कोणा माणु ।”

प्रशोतजी, “देखु अ गप्प ठीके अछि जे दुनियाँक कोणा डाकठव गालेष्ठी नहि जेत किएक तँ दुनियाँक कोणा डाकठव नग एकव गनाह नहि डेक । गठिया की भेलै ? .... अगल ठेहक दूनु हस्तीके जोड़क रीटमे एकठाँ मसुक धूकड़ । हेअय डेक जेकवा कार्टिलेज कहन जाग डेक आ ओहि कार्टिलेजकेँ ठीक आ तन्दुकुत बाथेक जेन, हम जे भोजन खाए छी ओहि भोजनसँ एकठाँ ग्रीस जकाँ टिपटिपा पदार्थ निकले डेक जेकवा सागलारियस ह्यूड कहन जाग डेक । भोजनमे पोष्टिक तत्वक कमी, अदुषा, रैसकेँ रैसी भेनासँ, आन आन कतेको कारणे अगल देहमे सागलारियस ह्यूड रैसनाग रैस भए जाग छै । जखन सागलारियस ह्यूड अर्थाँ टिपटिपा पदार्थ ग्रीस खमे जेन तखन दूनु हस्तीक रिटमे दराँ पिटा कए मसुक धूकड़ । अर्थाँ कार्टिलेज कण्ट जाग डेक । दूनु हस्तीक रिटमे गअग भए जाग डेक आ दूनु हस्तीमे हस्ती घसेनासँ असहाय दर्द होगत डेक । कतेक गोठेकेँ तँ चनना उँतव हस्तीमे हस्ती घसेनासँ आराज सेहो होगत छै । आरँ देथियो एहिठाम डाकठव कहत अछि जे सागलारियस ह्यूड अर्थाँ टिपटिपा पदार्थ ग्रीस रैसनाग रैद तँ रैद एकव कोणा गनाज नहि, रैससँ रैसी जीरण भवि दर्द निरावक गोष्ठी खाए कए दर्दसँ रैटि सके छी । रैसी दर्द निरावक दराँग खेनासँ हाडि आ किडनीपव से खवारँअसव । आरँ देथियो, हमरा सभ नग अछि समुद्री जडुँ रैसीसँ निर्मित -----, आ जिनक शीरीबमे एकाँ आना सागलारियस ह्यूड रैटन अछि एकव नियमित सेरण कएना रैद हूक शीरीबमे अ सागलारियस ह्यूड रैसनाग शुक कवत आ जखन सागलारियस ह्यूड रैसनाग शुक होएत, मसुक धूकड़ । अर्थाँ कार्टिलेज अगः मरनात भेनाग आवस्य भए जाएत । शीरीबमे रतमान सागलारियस ह्यूडकेँ उपस्थित मात्राक हिसारै ७ महिनासँ एक सरी रैबखक अधिकतम सेरण कएना रैद कोणा रात्रि अगल पएवपव चनएछी नहि दोड़न नगता ।”

एतेक रैडका गठियापव राथान सुनि मिषिबजी टुप्पा, टुप्पी तोलेत, “हूँ ! सभ ठीक दूदा गालेष्ठी....”

प्रशोतजी, “अछा निअ हम अहाँक माए केव ठीक होलैक गालेष्ठी ले छी, अहाँक माए हमर माए । अहाँ एक सरी रैबख हमर दराँग दियोन, ठीक नहि भेली तँ पाग रापिस ।”

आरँ तँ मिषिबजीक रौन रैस, जेरैसँ मोराँअन निकागन रौमे हाथे कएकठाँ न० नगेना रैद, “यो सभ ठीक, आरँ तँ अहाँ गालेष्ठीयो नए जेनहूँ दूदा एखन हमर जोष्टका भाग हएन नहि उँठा बहन अछि रैदमे ओकवासँ गप्प कएना रैद हम कहरँ किएक तँ गप्प एक दु महिनाक नहि छै एक सरी रैबखक छै ।”

एतरामे दनाक कोष्ठासँ मिषिबजीकेँ कनियाँक टुडुँकेँ खनखनागक आराज एनहि । मिषिबजी घुमि कए देखना उँतव प्रशोतजीसँ, “कणीक अरै छी ।” कहत उँटि कनियाँ दिस छनि गेना ।

मिषिब जीसँ हूक कनियाँ, “हम सभछी सुननहूँ, अ तँ ठीके अचुक गनाज छै आ अहाँ रूमिमे छी जे हमरो माए गठियासँ पलेसन छै । अहाँ अगल माए जेन नी की ले हमरा ले रूमन दूदा कागल टिष्टु गाम जा बहन छै, ७ महिनाक दराँग नए क२ टिष्टु दिया हमरा माए जेन पठा दियो रैकी ७ महिना रैद हएरो कियो गाम जेरै कवटे तखन ।”



## VIDEHA

कनियाँक गप्पा सुनि मिशिवज्जी रागम आरि कर्मागव रैसैत, “ठीक सब, आरि अगल एतेक कहैत छी तँ उ महिनाक दराग हमरा दए दिख |”

प्रशोतज्जी, “ठीक छैक गवशु सुज्जीतज्जी अहाँकेँ दए देत |”

मिशिवज्जी, “गवशु बहि हमरा कागलु भोले चाली किएक तँ उ हमर माए जेन बहि हमर मासु जेन छहि आ कागलु भोले १० रँजे हमर माव चिष्टु गाम जा बहन छथि | तँ तँ एकर रँव उ महिनाक दराग रंगा बहन छी |”

प्रशोतज्जी, “कौला रौत ले कागलु भोले ९ रँजे तक गिन जाएत | सुज्जीत ज्जीकेँ पाग दए दियोन्ह दूदा हाँ गएलेखी बहि छैत |”

मिशिवज्जी, “किएक |”

प्रशोतज्जी, “उ गालेखी अहाँक माए जेन छन, किएक तँ अहाँक माए हमर माए दोसब उ हमर आँखिक सोनाँ छथि हुनका हम देखो सकै छीएहि, ठीक भेली की बहि दूदा अहाँक मासु...”

मिशिव ज्जी, जेरीसँ पाग निकालि कए दैत, “यो प्रशोतज्जी अहूँ की गप्पा करै छी अहाँ देनहुँ हमरा रिसुनि भए गेन उ पाग बाखु दूदा हाँ भोले ९ रँजे धरि दराग छैत जेरी चाली बहि तँ अगल रूमिमे छिये कनियाँ माव मासु |”

प्रशोतज्जी, “हाँ अरुण, (उठैत) अछा आरि आजा दिख |”

दुनु गोठे रिदा भेला | मोठेव माङ्कनिगव रैसना रौद रैसने- रैसने सुज्जीतज्जी, “प्रशोत भाग देखियोन्ह, माए जेन गालेखी चाली भाग सबक सहमति चाली आ मासु नामे छै उ महिनाक पाग निकैत गेलहि |”

\*\*\*\*\*

ए बचनगव अगल मंत्र [ggajendr@videha.com](mailto:ggajendr@videha.com) गव गँड ।

गद्य



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अग्नि'-गजन १-४



VIDEHA



जगन्मोहि चन्द्र ठाकुर 'अभिनव'

४ थी गजल

1

हम डी मीता आ बाग अहाँ डी

हमले ले रँदनाग अहाँ डी ।

मन्दिर-मन्दिर कथी ले दौड़

हमर त चाक बाग अहाँ डी ।

डर कथी के होयत हमरा

मूँ ग-मूँ ग आठो गाम अहाँ डी ।

आरँ दौड़ि ले चनु रँष्टे पव

गाडक पाकन आम अहाँ डी ।

ताकथि बागक रँष्टे अहिना

कौमीक कातक गाम अहाँ डी ।

ककरो गवदसि के माना डी



**VIDEHA**

ककरो जेन खवाम अहाँ छी ।

आग अहाँके देखन छी तबि

मानन पूर्ण बिबाम अहाँ छी ।

सबन रार्पिक रँहव, रर्पी-11

2

माछ दही केवा केव भाव थिक गज्जत

ककरो जेसहस्र कहाव थिक गज्जत ।

ककरो जे सौखवि गषाव आ कि मन्दिब

ककरो जे हष्ट आ रँजाव थिक गज्जत ।

जिनगीमे कष्ट-कुस कष्टहिमे जिनगी

जिनगीमे जंगल, गहाड थिक गज्जत ।

जिनगीमे साउन आ साउनमे रौदवि

रौदविके विमिमि हूहाव छी गज्जत ।

ककरो जे' वातिक चकमक गजेविया

ककरो जे गुजगुज अहाव छी गज्जत ।





दीयारौती छुट्टि जूडशीतन आ फगुआ

जिणगीमे पारनि-तिहाव थिक गज्जत ।

ककरो शुभकामना, ककणी आ ममाता

ककरो मिलह आ दुआव थिक गज्जत ।

ककरो जे रवदान हसी आ ठहक्काक

ककरो जे लावक छयाव थिक गज्जत ।

ककरो जे सपना छुव ककरो जे नावा

हमवा जे झुडिक रिटाव थिक गज्जत ।

सबन रार्फिक रँहव, रर्फ-15

3

टाष बहन टगिते अहिना

रीतन हाग तकिते अहिना ।

सुन्दर गीत अहं रँनि गेलौ

बहलौ हम गरिते अहिना ।



**VIDEHA**

रौह कक जे छन्दस कहैए

लोक बहत रँजिते अहिना ।

भोव अरैए दुपुन सभदिस

साम बहन ठबिते अहिना ।

भोजि गेन पन्ना अखराबक

लाव बहन चूरिते अहिना ।

अपनहि सोना ठाठ भेन डी

हारी गेनहुं नडरि ते अहिना ।

हुनक गाढ निहारै डी हम

नाज होगढ डरिते अहिना ।

एहि डारि सँ ओहि डारि पव

लोक बहन उँडिते अहिना ।

सवन रारिंक रँहव, ररि-11

4

लोक जतेक डरि दूनिगामे ।

सभ मगन डरि अपनगामे ।



**VIDEHA**

दाक पीरि अरै डुधि अगल

गनती तके डुधि कनियामे ।

हम अहा त कठलो जिनगी

भोज, भजन ओव कबजामे ।

सीता रैठी, जमाए बास डुधि

कथीक कमी अछि गिनियामे ।

पौआ- घरआ परेशान अछि

रब ओव कनिया महलामे ।

बूढ़ी के दिन-बाति रिंते डुधि

उनहन आ किडु हकबामे ।

सोटु की असुब अछि राँचन

रिश्तेरिहानय आ रिनियामे ।

सबन रार्पिक रँहव, रर्प-11

**ए बचोपव अपन मतलब [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाउ ।**

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक **उदय शंकर** (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद रिणीत उपेन)





## VIDEHA

हम ओझाओले पब पड़न-पड़न मोटेते बली । गोबिन्द लोकरवी कबरौक लेन पंजी शिबमे  
डन । रौरौजीक ऋगनाक पश्चात् ओ अणन मागकेँ अणना रंगहि पंजी न गेन डन । हम दूनु गोठे  
एहि घबमे बहेत बली । हम आ हमर भगिनी ।

हम उठनहुँ, थिड़की खोननहुँ, आ दरबारा खोनहि रना बली कि एतरेहिमे आलेसक  
आराज सुन मे आएन ।

“यो पाखना ! एखन धरि सुतले छी ? पाखना... यो पाखना....”

रिना किछ रोजनहि हम दरबारा खोनि देनहुँ । हम दरबारा रैन केनहुँ आ एकठा  
रौसन न कए नगीचक लेहन जेअरौक लेन ओकरा पाछु-पाछु टुंगटाप टलि देनहुँ ।

आलेस हमर लेणनक मीत थिक । हमसभ एखनहुँ नीक मीता छी । एकहि ठाम काज  
करैत छी । ओहो ड्रागवर आ हमरुँ । एकहि कम्पनीमे लोकरवी करैत छी आ एकहि बंगक ट्रेक चनरैत  
छी ।

हमरा गुमसुमा टलेत देखि ओ राजन-

“ओ छी ! कोन मोटमे डुरेन छी ?

“किछओ तँ बहि ? चेतना अनाक रौद हम कहनहुँ ।

“किछ कोना बहि ? ओहिना रौजि बहन छी की ? कल मोटु, जँ अहाँक रिगारु भ  
जाय तँ भगिनीकेँ देख रानी किओ तँ भ जेतीह ? ”

एहि रात पब हँसैत हम पुछि देनिअँक-

“के देत हमरा अणन रैती ? ” ओ रात सुनितहि ओ जेब-जेबसँ हँसए नागन । ओकर हँसी  
बोकरौक लेन आ किछ आव रौजरौक लेन हम ओकरा सँ पुछनहुँ-

“अँ यो आलेस, अहाँक पासपोर्ट रनि गेन की ? ”

“हँ । ”

“तखन दुरंग कहिया जा बहन छी ? ” हम पुछनिगनि ।

“अगिना सगुार, कपेन (छेष्ट गिबिजाघर)क प्रार्थनासेर केब रौद । ”



“कसैनक प्रार्थनासेर केव रौद ? ”

“है, रैक ओहि दिन । ”

“ओहि दिन किअक ? उंसेरक रौद चनि जाअरै... । ”

“बहि, असनमे ओहि दिन हमर मीत जा बहन अछि, एहि जेन हम ओकबहि संगे जा चाहित  
छी । ”

“तखन तँ अहाँकेँ हमरा कसणीक लोकबी छोड़ पड़त । ”

“एहन बिखरणा लोकबी कवरौ के कबए ? ओहूना भावतमे बहि कए के नीक पाग कमा  
सकेत अछि ? ओतए मज्जुबीयो तँ रैसी छैक ? ”

“तखन अहाँक रिदेशे जायरै एकदम पक्का ल ? ”

“है”, एतरी कहि ओ अगन पेल्लक रैल्ले आव कसय नागन ।

“रिदेशे जूनि जाऊ । ”, हम पछिना किछु दिनसँ आजेससँ कहत बहिअक ।

“हमरा रैल्ले अड़ंगा जूनि नगाड । ”, ओहि समय ओ हमरा कहनि । हम टूपाटाप रैल्ले  
छलेत बहनहूँ । जखन गोरिन्द गाम छोड़ि पणजी शहर गेल छलाह, तखन हमरा रैल्ले खवाप नागन  
छन, दूदा आरै तँ आजेस अगन गाम आ देशे छोड़ि पबदेस जा बहन छन, आग हमरा कलको खवाप  
बहि नागि बहन अछि ।

हम दूनु गोठे छेठन पहुँचनहूँ । तीतब जगतहि सत किओ हमरा घुरि-घुरि कए देखय  
नागन । हम मोनहि-मोन सोचनहूँ, “बूनागत अछि जे ओकरा सतक नजबि हमर केन छेठन केने आ  
केन बोग्याँ पब चनि गेल छैक, हमर नहसुनियाँ आँधि, उल्लर चाम आ गसगब देह...”

“पाखला, अहाँक रौसनमे दू दू आकि चाह ? ” छेठनरना हमरासँ पुछनक । हम भवि  
रौसन चाह न जेनहूँ । दू ठी रैल्ले पारबोठी आ एकठी ककष (रनयाकाव पारबोठी) जेनहूँ । आजेस  
अगन मीतक संग दूरंग जागरना रौत करैत बहन । ओकब मीत ओतसँ ओकरा जेन कोला रिदेशी



## VIDEHA

समान जेना जेन कहत बहेक । बिदेशी जगरोसँ संरक्षित रात कबरना आजेसकेँ जोड़ा हम अपना घबक राँठ जेनहूँ ।

पाड़ सक कछिणी मोसी हमरा घब आसन छनीह । ओ स्रनुकेँ उठा कए झूठ धोरोक जेन कहनथि आ ओकरा छीठपव तान ब्रोक पहिनेनथि । हमहूँ अपन हाथ-झूठ धो जेनहूँ । दु ठी गिनासमे दाह उावनेहूँ आ कछिणी मोसीकेँ दाह पीरोक जेन पुछिनियनि, “अहाँकेँ दाह दाही की ? ”

“नहि राँड ! हम एखनि घबसँ दाह पीरि कए आसन छी, ओहूना हम होठनक दाह नहि पीरैत छी ।” कछिणी मोसीक एहि जेरारै पव हम टूपा भ जेनहूँ । हम स्रनुकेँ रँजेनहूँ । ओ थपड़ी पाड़ैत हमरा नग आयनि आ पुछा नागनि, “मामा आग बरि छियेक न ? आग तँ अहाँ काज पव नहि जाएँ ? ” हम “हँ” कहि अपन माथ जोलौनहूँ । “मोसी आग अहाँ हमरा अपना ओहिठाम नहि न जाएँ । आग हम एतहि बहरँ...मामाक संगे । ” ओ मोसीसँ राजनि ।

“ठीक छैक दाग....आग हम अहाँकेँ नहि न जाएँ ।” हम दूनु गोष्ठी दाह पीरैते बली तारत कछिणी मोसी अपन डाँबक साड़ी सन्तारेत घबक रँवतन-रँसन धोरोक जेन छनि गेनीह ।

स्रनुक रौरूजी ओकरा सन्तारोक जेन तैसाव नहि बहथि । ओहि समय ओ मात्र डेठ रँवथक छनीह । नीक जकाँ रौजियो नहि होगक । केरन दूग टाबि शेरुहि रौजि सकेत छनीह । आरँ तँ ओ साठ तैण रँवथक भ गेन अछि, झुदा देखरामे पाँट-साठ पाँट रँवथक रूमागत छनीह । गोब-नाव चेहवा ! हम ओकरा माथ पव अपन हाथ खेबनेहूँ । मोम-मन नवम केने आ नहस्रनियाँ आँथि ! हम ओकरा आँथिमे देखनेहूँ, आ ओ हमरा आँथिमे देखनक । ओ अपन आँथि पेष कए जेनक । ओकर नहस्रनियाँ आँथिमे एकहि संग केकठी दृष्टि उतवि गेन ।

एहन रूमागत छन जेना ओ किछ पुछए चाहत छनीह ! हमरा कल आश्चर्य भेन । “अहाँक नहस्रनियाँ आँथिसँ हमर कोला पुवाण संरिध अछि ।” हमर नजवि ओकर गुनारी केने पव गेन । न जानि किएक ओकर गोब-नाव चाम गुनारी केने देखि हमरा एहन रूमागत जेना पुवा आकानि मेघसँ आछादित भ गेन होअए, ठीक तहिना हमर मोन अतीतक सवासँ भवि गेन... । ताधवि कछिणी मोसी घबक काज पुवा क कए अपन घब जाहि पव बहथि, कि हम स्रनुकेँ हुनका संगहि न जयरोक जेन कहिनियनि ।

“हम नहि जायँ ।” स्रनु अपन माथ जोना कए जेरारै देनक ।

“नहि, हमरा काज पव जयरोक अछि, अहाँ मोसीक संग छनि जाड । दुपहबमे हम जन्दिअ आरि अहाँकेँ न जाएँ ।” एतरी कहि हम स्रनुकेँ समस्ररोक प्रयास कएनेहूँ ।

स्रनु काणस नागनीह, झुदा पछाति जा कए ओ मोसीक संगे जयरोक जेन तैसाव भ गेनीह । कछिणी मोसी स्रनुकेँ न कए छनि गेनीह । हम दवरौजा रँन क जेनेहूँ । हमरा दिमागमे



## VIDEHA

आयन सञ्ज्या प्रवास स्मृति एकठा गवज्ज आ चमक केव रंगहि रीखवि गेल ! रूँमु ह्य अगना आगकेँ पूर्ण कसोँ ओकबहिमे तोक नागनहूँ... अगण पहिटाणक खोज कवय नागनहूँ... ।

## दु

गोरिन्दक दानी द्वावा कहन गेल थिम्सा एख धरि पाखजो केँ सवा डननि । शानी आ सोनु दुनु भाय-रहिण बहनि । गामक सीमान पव हूणक घब डननि आ अगण किडु खेती-रौबी सेहो । ओ अगणहूँ खेती-रौबी करैत डन आ दोसरोक खेतमे काज कवरौक लेन छनि जागत डन । एकब अतिविडु ओ गवमीमे मज्जुरीयोक काज करैत डन ।

एकदिन शानी नकड़ी काठरौक लेन जंगन गेल डनीह । फुमावि शानीक रंग तीन ठाँ आव म्नी लोकिनि डनीह । आष दिन जकाँ ओ सभ नकड़ी काठि कए ओकब रौम सेहो रौना लेल बहनि; तखनि हूणका सभकेँ सीठीक आराज स्वरौमे अयनि । ओ टाक गोठे डवि गेलीह । तहि दिन पाखजो (पुर्तगाली फिर्बगी) जंगनमे शिकार कवरौक लेन अरैत डनाह, ओ सभ एहन स्वणल डनीह । फिर्बगी सभक मणमाणी आ म्नीगना पव कयन गेल अवाचवसँ ओ सभ परिवर्तित डनीह । ओहि सीठीक आराज सुनि कए ओकवा सभक तँ जेना होमे-हराम प्रम भ गेल । ओ सभ रूँत घरवा गेलीह । तारत हाथमे रँदुक लेल तीगठाँ पाखजो ओतए पहुँचि गेल । रौघ केँ सोनाँ आरि गेनाक पश्चात् जेना लोकि नक न लेत अडि गीक ओहिना ओ सभ नकड़ीक रौम छोडि भागन । तीनु पाखजो ओकवा सभक पीछा कवय नागन । अगण जाण रँचरौक लेन भाग रानी शानी गिलैत-पडैत रूँत थकि गेल डनीह । आरि आव रौमी गतिँ दौडरँ ओकवा रूँता केव रौत बहि बहि गेल डन । ओ पाडु तोकनक, तँ देखनक जे एकठाँ फिर्बगी अगण कसोँ पव रँदुक आ ड्वाती पव एकठाँ तमगा नगौल गिनिष्ट्री रेशिभुयामे ओकबहि पाडु दौडन आरि बहन डन । ओहि पाखजोकेँ देखि शानी अगण जाण रँचरौक लेन अगण अतिम शक्ति नगा कए दौडनीह । ओ सभठाँ म्नीगणकेँ पाडु छोडैत आव ज्जी-ज्जामसँ दौड नागनीह । रूँत रौमी दौडरौक कावसेँ आरि ओ थकि कए चकणाटुव भ गेल डनीह । जौब-जौवसँ उँपव नीटाँ करैत ओकब ड्वाती आरि हाँष्टि कए रौहव निकनि जेतेक, ओकवा एहले रूँमारि नागलैक । ओकब दौडरौक गति मँद होम नागलैक आ एतँरहिमे ओ पाखजो ओकवा नगीट पहुँचि गेल । नगीटक आष-आष म्नीगणकेँ छोडि ओ पाखजो शानिक दिन रँडन आ अततः ओ शानीकेँ अगण रौँहिमे कसि लेनक ।

एतँरहिमे पाडुसँ दुँ ठाँ आव पाखजो ओतए पहुँचि गेल । ओहो सभ शानीक दिन अगण हाथ रँड लैक, रुँदा ओ पाखजो ओहि दुनु पाखजोकेँ पुर्तगाली भायामे किडु कहनकेक । ज्जा सुनि ओ दुनु पाडु छैन आ आगु भागए रानी म्नी सभक पीछा कवय नागन ।

पाखजोकेँ रौँहिमे शानीक सँड फुल नागलैक आ ओकब राक सेहो रँडन भ गेलैक । ओहि फिर्बगीक देहमे शैतान आरि गेल डलैक ।

शानीकेँ होम आरि गेलैक । एख धरि सँड पवि गेल बहक । पूवा जंगनमे अन्धार ब्याँ भ गेल बहक ।





## VIDEHA

एहि अन्हावकेँ देखि शोलीकेँ बुनागक जे जेना ह्येव ओकव दम निकलि जेतैक । ओकवा देह पव कोलाठी बुझा नहि बहैक, झुदा ओकवा देह पव किछु फर्छन-टिछन बुझा बाधि देन गेन बहैक ।

ओकवा माथक नीचाँ कोला कडगव टिज बहैक, झुदा की ? से पता नहि छनि सकलैक । ओ जडरत भ गेलीह । ओकव कलेज धक-धक करैत बहैक, देहक पोष-पोषमे दबद होगत बहैक । ओ जतय कतहुँ अपन हाथ बथेक ओकवा सुखन खून हाथ नालैक । ओ रहुत डरि गेन छनीह, झुदा काहि नहि सकैत छनीह ।

ओ उँटि कए लेसि गेलीह; तखन अकस्मात् ठाँटिक गजोत भेलैक । ओकव गजोत ओकवा देह पव पछलैक त ओकव आँधि टोहिया गेलैक । छन भविक जेन अपन आँधि रँग क कए ह्येव थोननक त देखनक जे रौन पाखजो ओकवा नगीच आरि बहन छलैक । आन दूरी पाखजो जतए ठाँट बहैक ओतहि बहन । पढाति जा कए ओ दूनु ओहि ठाँटिक गजोतमे आगु रँठि गेन ।

शोली दिस आरि बहन पाखजो नागठे देह छन । ओ ह्येव डबसँ सिहवि गेलीह । ओ फर्छनका बुझा-फर्छा न कए अपना छातीकेँ माँपैत ठाँट हेरौक प्रगाम कबए नागलीह, झुदा छुँछन गाछु जकाँ धरती पव गिब गेलीह । ताधरि ओ पाखजो शोलीकेँ नष्ट दए अपन हाथेँ पकड़ि लेनक । ओ पाखजो शोलीक देहक नीचाँ ओछाओन गेन कपड । उँठा लेनक । शोलीक माथक नीचाँ बाखन ठेपी शोलीक माथ पव बाधि ओ जेव-जेवसँ हँसय नागन । शोलीक घरबाहष्टे रँठिते जा बहन छलैक । ओ डलेँ खबखब काँपय नागलीह । ओकवा बुनेलैक जे एकठाँ रँडका अजगव खुरै पौघ झूह रौल ओकवा अपन ग्राम रँषा जेतैक । ओ जेवसँ टिकबनीह, झुदा ओकव आराज ओकवा झूहसँ नहि निकलि सकन ।

ओ ह्येवसँ शोलीकेँ दुना-चाँटी कवरै स्वह क देनकैक आ ओकवा अपन रौँहिमे कसि जेनकैक ।

ओहि अन्हाव घुष्प जँगनमे ओ अजगव सविगँहँ ओकवा अपना कारुमे क जेनकैक । नाव-सँखाव आ पात सभसँ अजीरै तबहँ आराज आरि नागलैक ।

साँस पडतहि आ राँत सौँसे गाममे पसवि गेलैक । सीता कहत छनीह, जे कोला ओ पाखजोक टंगनसँ रौँटि गेलीह । शोलीक घबणी रँतरैत छनीह जे कोला पाखजो फुमावि शोलीकेँ उँठा कए भागि गेन ओ ओकव गच्छति नुष्टि लेनक । शोलीकेँ उँ पाखजो लाँटि-टोधि लल लेतैक, आ सभ सोचि-सोचि आन सभ लोक ओकवा प्रति अपन दया भार देखरैत बहैक ।

“पाखजो शोलीक शीनउंग क देनकैक ।” आ राँत सौँसे गाममे आगिक भाति पसवि गेलैक । ओकव भाग जे लोकबीसँ घब घुरैत बहैक ओकवहुँ आ राँत बुनागामे आरि गेलैक । ओ



## VIDEHA

गोस्मार्स नान भ गोलोक, मंगलि डरि मेहो गोलोक । ओकरा हाथमे फुडहबि बहेक झकवा ओ अपन कथा पब बाधि जेनक ।

“एहि फुडहबिसँ जँ हम ओहि पाखलोकें जित्त नहि काष्ट देलियनि तँ हमरहुँ नाम नहि ।” ओ रेंव-रेंव येह शिष्ट, दोहवारेंत बहेक । शोनीकेँ तोक जएरी जेन ओ कतेको लोकसँ मिता केनक झुदा किओ ओहि अहाव जंगनमे जएरी जेन किएक तैयाव होगतिक ? ओ एकठा नानठैम जबोनक आ एसगले छनि देनक । लोक सब ओकरा पागन कहए नागलोक । “पाखलो अहाँकेँ गोनी माबि देत ।” ज्ञ कहि लोक-सब ओकरा डबएरीक प्रवास केनकेक झुदा ओ अपन जिनद पब अडन बहन । ओ एसगले छनि देनक, तखन दादी मेहो ओकरा मंगे जएरीक जेन तैयाव भ गोलोक । दादी कार्देव (रँस) क टानक बहेक । शिकन-सुबतमे ओ मोषुई-मन बहेक । दुषु हरा जएरीक जेन तैयाव भ जेन । दादी शोनीक काणमे किड कहनकेक । ओ दुषु पातोलेक राँठे जंगन नहि जा कए सीधे गामक पुनिस सृशेन दिस छनि देनक । एहन देधि गामक किड आव बुँठ आ जूखान सब ओकरा मंग भ गोलोक । मरँ किओ पुनिस-सृशेन पहुँचि जेन । दादी पुनिस-सृशेनक केर, (पुर्तगानी पुनिस अधिकारी) देसाङ्ग साहेरँकेँ शोब पावनेकेक । ओ दवरँञ्जा नहि खोलि थिडकी खोननक आ ओतिसँ राँहबक दृष्ट देखनक ।

“पाखलो तीतवमे डिक की ?” दादी कान्स्ट्रैनसँ पृढनकेक ।

“नहि ।” साधाका भेयमे कान्स्ट्रैन कहनकेक ।

“तखन गोलोक कत ?” दादी खेब पृढनकेक ।

“कार्मोक प्रधाण आ हुषक दुङ्गा थी मंगी भोले-भोव शिकाव पब जेन छुधि, एखन धरि नहि आएन छुधि । हुषका पाज्जी शोब मेहो जेरौक छुनि, एहिजेन आरँ ओ कान्हि उताह ।” कान्स्ट्रैन कहनकेक ।

“साँचे ?”

“हँ, साँचे”, देरकीपुष्ट भगराणक किविया । कान्स्ट्रैन देसाङ्ग कहनकेक ।

नहि, नहि ओ नुठँ राजि बहन अछि । हमरा सबकेँ पुनिस सृशेनक तीतव जा कए देखरीक चाही ।

“पहिल दवरँञ्जा खोलु, हमरा सबकेँ देधि कए पाखलो तीतले पुरँदी माबि देल हत ।” मोषु जेबसँ टिकडि कए कहनक आ अपन फुडहबि नचरँ नागन ।



जाँ ! जाँ ! रँग कक अगन अ नष्टक । कान्स्ट्रैण गोम्सामँ कहनकैक ।

“एखन जँ अहाँक रँहिनक गच्छति पाखनो नुष्ट लल बहितए तँ अहाँ कि एहिना चूग रँगि बहितहूँ ? ” सोनु गोम्सामँ राजन ।

“आरँ अहाँ किछ रँगि राजए नागनहूँ अछि, एहिँ रँगि जँ किछ राजनहूँ तँ हमरा रँदुक निकानए पड़त । ”

“अहाँ एना किएक राजि बहन छी कान्स्ट्रैण ? ” दादी रीचहिमे ठेकनक । काबी शीशमक नकड़ ी मन देहरना दादी कोयना जकाँ गवम भ' गेन ।

“अहाँ कि कोना रँहवी लोक छी ? बिबंगीक प्छेपोम्सा, अगन आ अगनक कोनहूँ गविस बहि ? एहन-एहन केँ तँ पाखनोएक रंग भगा देरौक चाही । ”

“हाँ साँटे ! ” एतरो कहि सब लोक हँ मे हँ मिलनकैक ।

बहि, बहि हमरा सबकेँ अहाँक रँत पब भवाम बहि अछि । हमरा सबकेँ देखि दिअ, पाखनो निश्चिते भीतव दूरकन अछि । एतरो कहि सोनु भीतव जएरौक जिद करए नागन ।

‘बहि, बहि एहन रँत बहि छैक । जँ एहन बहतेक तँ अहाँ सब एखन धरि पड़ ी गेन बहितो । पाखनो सँ अहाँ सबकेँ गोनी थाए पड़ तए । अहाँ सबकेँ जँ एखनहूँ रिश्यास बहि होगत अछि तँ भीतव आरि जाँ दूदा जन्दीए रँहवा जएरँ । ”

सब किउ पुनिस सृशिनक भीतव टूकि गेन । ओतए तीनठी पुनिसक अतिरिउ किउ बहि बहैक । एक कान्स्ट्रैण देसाँ, दोसर नायक कामीम आ तेसर पोषु पुनिस ।

सोनु आ दादी, दूनु शीरीकेँ तकरौक लेन पाखनोक जंगन दिस चलि देनक । सोनु शीरीक नाम न' न' कए टिकड़ नागन, दूदा ओकरा कोना जरौर बहि भेठैकैक । जंगनमे तानु सब कालेत बहैक । टाक दिस कीड़ 1-मकोड़ 1क आरौज अहार आ सल्लहष्ट पसबन बहैक । दूनुगोठे वाति भवि जंगनक थाक छालेत बहन दूदा ओकरा काणमे मात्र ओकबहि द्वावा नगाउन गेन आरौजक प्रतिधुनि सुवागत बहलैक । सोनु छन भविक लेन रँहूत निवाशि भ' गेन । गाम-घबमे ककरो देहमे भा आरि गेनासँ जे स्थिति होगत छैक ओहिना सोनुक देह कएँ नागतैक । ओ अगन देह पब निरुपण केनक आ अगन आरि नमरव क कए गोम्सामँ राजए नागन-



“हम सौंसे जंगनमे आगि नगा देलैक, आ जवा कए स्रष्टाह क देलैक। येह जंगन पाखला केँ शेरवा देल ढैक। स्रष्टाह क देलैक एकरा, स्रष्टाह क देलैक। ओ बुंदरुंदर नागन।”

एतरो कहैत ओ काँपए नागन। ओ नानठैमक रतिहवि उकसा देनकैक। नानठैमक गजोत भुतक नागलैक। ओहि रतिहविसेँ ओ सौंसे जंगनकेँ जवएरौक तैगारी करब नागन, ह्रदा दादी ओकरा बोकि लेनकैक।

“अहाँ ओ कोन पगनपन क बहन छी ?”

“ओ पगनपन नहि छैक दादी। एहि जंगनमे आगि नगा कए हम ओहि पाखलाकेँ स्रष्टाह क देलैक।” सोनु अगन दाँत आ ठोव पीसित रोजन।

“नहि, नहि, एना ओ तँ नहि मरि सकत, हँ जंगन अरमस जखि कए स्रष्टाह तँ जेतैक। एतरो कहि दादी ओकरा बोकरौक प्रयास लेनकैक। एहि रातकेँ न कए दुनुमे घिचतानी तँ गेलैक, आ एहि राँट सोनुक हाथसेँ नानठैम गिब गेलैक आ बुँता गेलैक। टाक दिस घुँप अहाव तँ गेलैक।

बहुँत राति बीजना पव ओ दुनु गाम घुवन।

एखन ह्रगा पहिजे-पहिन राँग देल हेतैक। खान्सेँ उगठि कए लेसन सोनुकेँ निग्न आरैए नागलैक, तखनहि दवरौजा पव खँ-खँ केव आरौज भेलैक। सोनु उठि कए दवरौजा नग गेल। ओकरा दवरौजा नग गहुँट सेँ पहिनहि दवरौजा धकेलि कए तीरठी पाखले तीव आरि गेलैक। सोनु ओहि दवरौजा नग खान्सेँ जकाँ ठाँठ बहन। घबरे रलैत नानठैमक गजोतमे ओ पुनिस प्रधाष कार्मे लेसन केँ टिह गेलैक। गोव-गहूमा टाम आ तहिपव गुनारी मोडि। पुनिस प्रधाष अगन कन्हासेँ शोलीकेँ नीटाँ उतारि देनकैक। ओ शोलीकेँ कहुना लेसएरौक प्रयास लेनक ह्रदा अमहन बहन, हारि कए ओ अगन अगा खोनि उडा देनकैक आ ओहि पव शोलीकेँ स्रता कए तीनु पाखले घुबि गेल। ओकरा सतक जूताक आरौज शैले:-शैले: कम लेन जा बहन छन।

शोली धवतीए पव घोरठन छनीह। ओकर आँधि खूजले बहैक। सोनुकेँ तँ बुँसु जे किओ ओकरा पएवमे काँठी ठोकि देनकैक, ओ तारशुगु ठाँठ तँ सरकिछ देखेत बहन। ओकर नज्जि कोनमे बाखन ह्रहवि पव गेलैक। नानठैमक गजोतमे ओहि ह्रहविक चमकेत धाव सोनुक अमहायता पव हँसैत बहैक। ओ चमक सोनुक करेजकेँ टाननि लेल जा बहन छन।



## VIDEHA

सोणु जखन शोनी नग आएन, तँ शोनी नहूँ-नहूँ अपन आँधि खोलनक । दूनुक अराके रँग  
भ गेन बहेक । सोणु शोनीकेँ शोव पावनकेँक तँ ओ आँहि-आँहि कहि कए जखरौँ देनकेँक । सोणु  
ओकवा पाणि पीरौँक जेन देनकेँक । एतँरहिमे सोणुक अदबक भार रौँहव निकनि गेलैक ।

शोनीक शीतलंग कएनाक पशुचात् पाखनो ओकवा सोणुक ओहिठाम डोर्डा देल छलैक  
एहिजेन गामक लोक सब सोणुकेँ समाज सँ रौँडा देल छलैक । शोनीकेँ गर्ड छनि ए रौँत सौँसे  
गाममे पसरि गेलैक । सौँसे गाममे ल तँ किओ सोणुसँ रौँत करैक आ ल किओ ओकवा काज पव  
रँजलैक । सोणुक बोजी रँग भ गेलैक ।

ओहि घण्टाक दोसबहि दिन शोनी आमेहवा कवरौँक प्रयास कएल छनीह, दूदा सोणुकेँ रीचहि  
मे घब आँरि जखरौँक कावणैँ ओकव जिणगी रौँटि गेलैक । गर्डरती हेरौँक नाजक कावणैँ ओ केँक रौँव  
घबसँ भाणि गेन छनीह दूदा सरँ रौँव सोणु ओकवा घुवा लैक ।

ओकव घब गामक सीमा पव बहेक । एहि जेन गामक आँष लोकसँ ओकवा रिशेय संपर्क  
बहि बहेक । तकरा रौँदो गामक सौँगी सब शोनीकेँ देखि ओकवा नाम पव खुक छलैक । ओकवा पव  
खरौँती कसत बहेक । शोनी रौँटावी सब किछ महण केले ज्ञा बहन छनीह । “चाहे जे किछ भ ज्ञा  
दूदा अपन ज्ञान बहि देरँ शोनी !” सोणु ओकवा कहनकेँक । ओ ओहो कहनकेँक-“रीया चाहे कखु हो  
रा केहलो हो जँ एकरेव ओ माँष्टिमे पडि ज्ञागत छैक तँ ओकव पानन-पौषण माँष्टि कए कबहि  
पडत छैक । माँष्टि रँजव बहि हेरौँक छली ।”

सोणुकेँ काज भेष्टरँ मोसकिन भ गेलैक, आ ओ दूनु प्रायः उँगामे बहय नागन । उँगरसँ  
लोक सबक डूँट-नीट सुलेत-सुलेत ओ आँजिज भ गेन छन । ओ रँहूँत पनेशोण बहय नागन । “जँ  
आँव किछ दिन गाममे बहनहूँ तँ तुखसँ मरि ज्ञाएँ आ लोकक डूँट-नीट तँ सुबहि पडत ।”, एहना  
सोँटि कए ओ एकदिन गाम डोर्डा कए शेरनेपेँ छनि गेन । शोनी घबमे एसगरे बहि गेलीह । सोणु  
कहियो-कान गाम आँरैक आ शोनीकेँ अन्न-पाणि द कए आपस छनि ज्ञागत ।

भोवका पहव बहेक । शोनी दरौँजसँ ननकेँत सरंग दिन मिहारेत छनीह । तखन ओ  
दरौँजसँ भितव अँरैत कार्मो प्रधाणकेँ देखनकेँक । ओकव तँ करेजा धक् द बहि गेलैक । अपन  
कनहा आँ डारा पव तमगा नगौँल कार्मो प्रधाण अपना हाथक रँदुक धवती पव बाँथेत ओतहि रँसि  
गेन । शोनी तँ डबक मावन काँपन नागनीह । कार्मो प्रधाण ओकवा किछ कहय छहित छन दूदा रौँजि  
बहि सकन । ओकवा लोकगी बहि अँरैत बहेक मागत एहि जेन ओ छुप बहि गेन । पडाति ज्ञा कए ओ  
जे किछ पुरतगाली भायामे कहनकेँक ओकवा शोनी बहि रँसि सकनीह । ओ शोनीकेँ अपना नगहि मे  
रँसराक गशिवा केनकेँक । आ हँव किछ धिन भ कए छुप बहि गेन । भ सकैछ जे ओकवा  
पशुचातप भेन हो, “एहन शोनी केँ नागलैक ।” ओ उँठन, अपन रँदुक अपना कनहा पव बाँथनक आ  
छनि देनक । ओकवा जूँताक आँरौँज शोनीक करेजक धुकुकीक पाडाँ गन्य भ गेलैक ।





“डी ! डी ! ओ नाज-शेवम गीरि गेन अछि ।”

“ओडी ! नाज-शेवम बहतेक कतए सँ ! ओ तँ अपन जातिओ-धरम श्रुत क लेल अछि ।”

## तीन

गामरनाक नजबिमे हम पाखजोएक कपमे एहि धरती पब जन्म जेनहूँ । ठीक ओहि सान पुतगानी सबकार गामसँ पुनिम-सृष्टिमे लष्टी जेनकेक । हमर रौप ओहि समय गाम जोडा पणजी शेरव चलि गेलाह । हुनकर कप कहियो हमरा आर्थिक समझ नहि आरि सकन । लक्षणमे हम हुनका कहियो देखल बहियनि की नहि ? सेहो हमरा सवण नहि अछि ।

हमर माए शानी, रासुरमे एकठो देरीक कपमे एहि समाव मे आएन डनीह । हुनकर रसँ तँ श्याम डननि रुदा सुननि डनीह । एकदम सेठन देह । ओ प्रायः नान आ कि हरियर बगक साड १ पहिले डनीह आ माथ पब सिनुबक शीका नगरोत डनीह । एहि परिवारमे ओ एकदम सुननि नालीत डनीह । एकदम सातेवी माए-सण । हमर जन्म एकादशी दिन भेन डन, एहि जेन माए हमर नाम 'रिहूँन' बाखल डनीह । ओहि एकादशीक दिन सातेवी मायक मदिब मे बाबाव त्र बहन डनेक । एहि धरतीक पाखसँ रैनाओन गेन श्री रिहूँन केव काबी प्रतिमा ओहि दिन ओहि मदिबमे स्थापित कएन गेन बहेक । ओ रात हमर माए रँतोले डनीह । ओ अपन मबू आराजसँ हमरा 'रिहूँ' कहि रँजरोत डनीह ।

कार्मो प्रधाणकेँ पणजी शेरव चलि गेलाक पश्चात् हमर मायक हावति आरि सविपहूँ रँहूत खवाप होमए नागन डन । सौमे गाम ओकवा मदिबक दसिक सदृश देखेत बहेक जखन कि ओ एकठो पतिव्रता नारी डनीह । गामहिमे एकठो ब्रह्मणक घबमे लौवीक काज क कए ओसँ प्राणु मजुवीसँ ओ हमर पावण-पौवण कएल डनीह ।

दादी अपन रँठी गोरिन्दक रंग हमरहूँ युन भेजए नागन । ओहि दिनसँ हम आ गोरिन्द दूनु गोठे खास मीत रँनि गेनहूँ । रिवाजमे प्रवेश-पञ्जीमे शिक्षक हमर नाम पाखजो लिख देननि । अली नाम सँ हम ओहि रिवाजमे मवाठी माधमसँ चारिम कक्षा धरि पठ १७ केनहूँ । हाजवी दैत कान हमर एहि नाम पब हमरा कक्षाक आन-आन डान जोकनि हमर खुर मज्जाक उँड रँए जे हमरा रँहूत खवाप नालीत डन । प्रवेश-पञ्जीमे हमर नाम पाखजो लिख देन गेन बहए गेलो जेन हमरा रँहूत खवाप नालीत डन ।

गोरिन्द हमरा सँ एक कक्षा आगु डन तकर पश्चातो हमरा ओकरासँ दोसती त्रगेन डन । हम ओकरा रंगहि मान-जान न क जंगन धरि जागत बली । जंगन जागत कान हमरा काँठ-कशेक कोला डब नहि होगत डन । ओतए हम सब कशेवा-काणा, चावा-दूमा (जंगनी फन) खागत डनेहूँ । 'युस-गे राये युस (गोरिक फेदमे खेनन जापरना एकठो खेनमे प्रयाज गेह, जाहिमे एहन



## VIDEHA

मायता छैक जे जे शेट्टे, राजवाम कोला थाम लोकक देखे कोला आमोक प्रवेशे भ जेतैक । ) शेट्टे, राजि कए एक दोसरा पव भा आरैए धरि कोयगा-रौन, गड्डाणी (गोरा फेकने लेना सभक द्वावा खेनन जएरौना एकठा खेन । ) आदि खेलेत छनहूँ । आन-आन चवराह सभक संग हमहूँ चवराह रैनि गेन छनहूँ ।

गोरा केँ स्रुतव हेरौम पहिनुके रौत थिक । तखन हमर उँचिब षण्ड-दस रैवथक बहन हेथत । गामक रँग पड़न पुनिस-सृमेल एकरैब हएव दानु भ गेन बहक । ओतए तेशेब नामक एकठा नर पुनिस प्रधाणक मिश्रि तेन छलैक । ओ कहियो कान सेह पणजीस गामक पुनिस सृमेल अरैत-जागत छन । ओ अणना तेन ओतए एकठा धौवरी बाधि लेल छन । ओकवा ओ अणना संगहि घोड़ 1-गाड़ी पव घुमरैत बहैत छन ।

गामक रँगन रना जमीनक तेन दत्ता जन्नी आ सदा जौलणक रीच रँहुत दिससँ रिराद छलैक । ओकवा सभक रीच मोकदमा छनि बहन छलैक । दू-तीन सान रीत गेनाक पश्चातो एखन धरि ककबहुँ पक्षमे ह्येसना नहि तेन छलैक । सदाकेँ एकठा यति स्रमलैक । एकरैब ओ नर पुनिस प्रधाण (तेशेब)केँ अणना घब रँजाकए खुरँ मान्नु-दाक खुणनक-पिणनक । ओहि दिस ओकव नज्जि ओकवा स्त्री पव गेलैक । ओहि अणना ओ ओकवा प्रति आसउ भ गेन आ ओ जाहि कक्षमे बहथि ताहि दिस देखतहि बहि गेन । सदा प्रधाणसँ रिणती केनक जे ओ मोकदमा ओकवहि पक्षमे कवा दैक । कल कान दूषा बहनाक पश्चात् प्रधाण ओकवा हँ कहि देनकैक । शैतिक कणमे ओ सदासँ ओकव स्त्री माँगि लेनकैक । सदाकेँ जन्नीक जमीनक संगहि-संग गामक सभसँ पैघ जमीन केगदी भठ (फेक रिशेयक नाम) भेटैए रँना बहक ।

टावि-पाँट दिसक रौद पुरतगानीक रिबोधमे काज कवरीक अतियोगमे दत्ता जन्नीकेँ जीतव क देन गेलैक । तकर रौद ओकव की भेलैक ताहि सँधमे ककबहुँ कोला पता नहि छनि सकन । केओ कहैक जे दत्ता हएवाव भ गेलैक तँ केओ कहैक जे प्रधाण ओकवा मारि देनकैक ।

ओहि दिसक रौद सँ सदाक घब नग सभ दिस एकठा गाड़ी नागए नागलैक । सदाक स्त्री सभ साँमकेँ नर-नर साड़ी पहिबए, नीक जकाँ अणन केशे-रिगाम कवए, काजब, रिदी, पौडव आदि नगा अणन त्रुँगाव कवए आ तेशेबक गाड़ी मे रैसि जाए । तेशेबक गाड़ी सदाक रँगना पव धुवा उँडरैत हूँव भ जागक ।

दोसब भोव ओ गाड़ी हूँका एतए पहुँचा दैक । ओ गाड़ीक पछिना सीठ पव लेठन बहैत छनीह । हूँकव केशे आ टोपी सभ उँजबन-उँजबन बहैक, आँथिक काजब नाक आ गान पव लेठवएन बहैत छलैक ।

मोकदमाक ह्येसना सदा जमीदावक पक्षमे भ गेन छलैक एहि तेन ओ सल्लावाया भगराणक पुजा कवरीक तेन सोचनक । पुजामे अएरीक तेन ओ भवि गामक लोककेँ हकाव देनकैक । सदा ओ ओकव स्त्री पुजा पव रैसि चूकन छनीह । तखनि प्रधाण तेशेब अणन गाड़ी न कए ओतए





## VIDEHA

आरि गेन । ओ पुजा पब रैसलि सदाक स्त्रीकेँ उठा जेनक । पुजामे आएन सभ लोककेँ एहि घटनासँ रङ्ग आश्चर्य भेलैक । केगदी चास-रौस केव कागद-पत्रब सदाकेँ खसरोत ओ ओकरा स्त्रीकेँ न कए आगु रङ्गन, तखनि सदाक छोट भाग ओकरा लोकरीक प्रयास केनकेक । तेशेव ओकरा पब रङ्गकसँ निमाण सारि जेनकेक आ आरि गोली दागहि रना बहक की सदा ओकरा लोक देनकेक । तेशेव अणन रङ्गक नीटा क जेनक । तकरा पश्चात् ओ जगुकेँ एक दिन धकरोत ओकरा स्त्रीक हाथ पकड़ा आगु रङ्गि गेन । एहि पब सदा अणना स्त्रीसँ कहनकेक-

“ओकरा संग एना जा कए अहाँ हमर लोक कष्टाएँ की ? ”

अ सुनि सदाक स्त्री अणन झूठ चमकरोत रङ्गनीह-

“अहाँकेँ लोक अछि की ? जँ अहाँकेँ लोक चली तँ हे अ लिअ...”

एतरा कहि ओ अणन लोकक नथिया निकालि सदाक पयब नग धवती पब फेकि देनकेक आ प्रधाण तेशेवक संग चलि देनक ।

तेसले दिन प्रधाण ओकरा न कए पुर्तगाल चलि गेन ।

प्रधाण तेशेवकेँ पुर्तगाल जेरॉस ठीक एकदिन पहिबुके गप्पा थिक । बातिक नगभग दु रा तीण रङ्गेत हेतेक । केओ हमरा घबक केरोड थोली हमरा घब घुमि गेन । हमर माय कम कएन मानठेसक गजोतकेँ कल तेज केनक । देखनहुँ तँ एकठी अणतुआव लोक । ओ राजन-

“रहिन हमरा कतहुँ ब्रका दिअ, हमरा पाछु फिर्वागी पुनिस नागन अछि । एकरेव जँ हम ओहि पुनिस प्रधाण तेशेवक हाथ आरि गेनहुँ तँ ओ हमर जान न लेत । हम जरीरित नहि रौंकि सकर । ”

एतरहिसे दुबसँ अरौत जूता पुनिस रूमागक जे किओ आरि बहन छैक । हमर माय ओकरा ओठरीक जेन अणन साड़ी देनकेक आ ओ साड़ी ओठ कए ओकरा हमरहि नग सूत देनकेक । किछु ऋण केव पश्चात् घबसे गजोत देखि प्रधाण तेशेवक हमरा घबसे घुमि गेन । हमर माय रङ्गुत डरि गेलीह । तेशेव सौंसे घबक तनाशी न जेनकेक आ ओतए के सूतन छैक ? ओकरा सँधमे पुज्या नागन-हमर माय डरैत-डरैत रङ्गनीह-

“ओ हमर रँ-रँ-रहिन थिकीह.....साहेब । ”

एतरा सुनि ओ लोकनि चलि गेन ।

ओहि बाति ओ अणतुआव लोक हमरहि ओहिठाम ठहवन ओ जेव होगतहि चलि गेन । ओ अणन नाम बागनाथ कहल छन आ ओ गोरक सुतवता संग्राममे भाग लेल छन । ओ आ ओकर दुष्टी संगी, गायक पुनिस-सुशेनकेँ उडएरीक जेन आएन छन । ओकरा संगीकेँ तँ फिर्वागी पकड़ा लेल छलैक दुदा एकवा पकड़रीक जेन ओ सभ एकव पछोव क बहन छलैक । ओ डागनामागठ नगा कए पुनिस-सुशेन उड । देनकेक । जेव होगतहि अ खरि गाय आ आस-पासक गनाकामे पसरि गेलैक ।



अ ताहि दिनक गप्प थिक जखन गोरालेँ ऋद्धि भेठेन छलैक । ओहि दिन दुष्टा रैचका धमाका सुनन गेन छलैक । अ धमाका रैम केव छलैक, अ रौत लोकलेँ पढाति जा कए पता नागलैक । उँजगौर आ रौपसुतारी गामक दुनु पुन उँड । देन गेन बहक । भारतीय सेनाकेँ गोरामे प्रवेश कबरिसँ लोकलोक लेन ओ पुर्तगाली मिनिष्ट्री द्वारा तोड़न गेन छलैक । ओ के आ किएक तोड़ल छन, पहिल एहि रौतक पता ककरो नहि छनि सकलै । दुपहरमे गामक आसमाणमे एकठा हरागजहाज उँडत बहक । ओहि हरागजहाजसँ पवटा सत गिवाउन जा बहन छलैक जे हरामे नहवारौत बहक । ओहि पवटा सतकेँ दुष्टराकक लेन हम सत रैचा लोकनि रँहूत दुब धरि दौड़नहूँ । हमरो एकठा पवटा भेठेन, जकवा न कए हम दादीक ओतए पहुँचनहूँ । पवटा पुर्तगालीमे निखन बहक जकवा दादी हमरा सतकेँ अणभ भायामे सुनरौत बहथि-“अ गडियन मनेठवीक पत्रक छैक । ओ कहल छथि- अहाँ सत डबरै नहि, अहाँ सतक जिणगीकेँ कोणहूँ खतवा नहि अछि । अहाँ सत पुर्तगाली बाजसँ ऋद्धि त गेन छी ।”

ओहि दिन हमरा रिग्यानमे छुपौ छन । कादोले गाममे उँसेरक माहोन बहक । किछ लोक लौह अयस्क रौर्ज (मानराहक जहाज) सँ पंजी गेन छन । गोरालेँ ऋद्धि भेठेनाक किछ दिन रौद गोरान्दक दादी हमरा घब आँएन छनाह । “भावत सबकाव रँहूत बस पाखले केँ पकडाँ ओकवा जहाजमे रैसा पुर्तगाल भेज देल अछि ।” हमरा मायकेँ अ खरि रैह देननि । बुनाएन जे एहि खरिसँ ओ किछ हतथत भेलीह, ऋदा ओ टुप आ गुम्बस बहनीह । हमर रौरुजी कार्मो टिफ, जे पंजी शेरबमे छनाह, हूकहूँ ओहि जहाजसँ भेज देन गेन छननि, एहि लेन मायकेँ दुःख भेलनि की ? से हम रूमि नहि सकनहूँ । ऋदा रौदमे हूका आँथिमे लोब आँरि गेन छननि ।

हम रौबह-तेबह रँथिक बहन हएँ, तखनि हमर माय मरि गेलीह ।

रँवथाक मौसम बहक । कतेको दिनसँ दिन-राति नगाताव रँवथा त बहन छलैक । नदीक रौर्डा क पानि गाम धरि पहुँचि गेन बहक । गामक केनरौय मदिबक टाक दिस रौर्डा क पानि आँरि गेन बहक । ओहि रौर्डा मे पाँछी गब गिब गेन छलैक । मान-जान आ गोहान सत रौर्डा मे भासि गेन बहक ।

हमर घब सीमाणक रौहव पहाडीक कोणमे कलक उँट स्थान पब छन । एखन धरि रौर्डा सँ घबकेँ कोला छति नहि भेल छलैक ऋदा नगाताव होगत रँवथा आ हरक कावणेँ हमरो घब ओहि दिन गिब गेन । घबक एकठा टाव कर्व-कर्व केव आरौजक सँग धुँष्टि कए गिब गेन । हम जखन सूतन बही तखन ओ हमरा पब गिबन । हम आ हमर माय दुनु गोठेँ मरि जगलैक । हमर माय हमरा रँचयरीक लेन दौर्डा कए अएनीह जकवा कावणेँ हूका माथमे रँहूत छेँ नासि गेलनि । पहिल तँ हूका माथ पब कोला धुँष्टि कए गिबन आ पढाति जा कए पुवा टाले हूका माथ पब गिब गेलनि । ओ रौहेशि त गेलीह । हम हूका ऋहगव पानिक छीष्टी देनिगनि तखन हूका चेत एननि । हम रँचि गेनहूँ आ हमरा छेँ नहि नागन, अ ज्ञानि ओ रँहूत खुँ भेलीह । रौदमे हमरा अणभ गोदीमे न कए खुरै काँष नगनीह । जखन ओ हमरा गोदी लेन छलीह तखनि हमरा हाथमे हूक छेँसँ निकनन खुँ नागन । देखनहूँ तँ हूका माथ मे छेँ नागन छननि । हूक माथ काँट जकाँ फुँष्टि गेन बहनि । हम जोबसँ टिकबनहूँ, ऋदा माय हमरा टुप बहरीक गशिवा केनथि । हमर टिकवरै सुनि कए एहि रँवथाक



## VIDEHA

वातिमे किओ आरैय रैना नहि छन । हुनकव कहलामुसब हम हुनका नज्जौलीक पात पीसि कए हुनका माथ पव नगा देलियनि । किछ कानक रौद हुनका माथसँ खुन रैहर रैल त गेननि ।

घबक रौदनका हिम्माकेँ हम सौंगव नगेलहुँ । हरा रैहते बहेक आ ककि-ककि कए रैवथा सेहो त बहन छलैक । सगहि हरा घबक रौदनका हिम्माकेँ लाटल ज्ञा बहन छन । छुपाडक रौट दए पाणि आरि बहन छलैक । घबमे कलकौ सुखन जगह नहि छलैक ।

मायकेँ रैहूत छेष्ट नागन छननि तेँ ओ दबदसँ कबहित छनीह आ रीट-रीटमे अपन छँग हिना बहन छनीह । दीया जबा हम हुनका सिवमा नग रैसि गेलहुँ । दीयाक रैतिहव हराक कावणै रीट-रीटमे रूता जागत छलैक जकवा हम हेषसँ जबरैत बनी । अहव आ रैवथा आओवा तेज त गेन बहेक । हम पाणि गवम क कए मायकेँ पिठलियनि । छेष्टक दबदक कावणै ओ भवि वाति कहलैत बहनैह । वाति तीजना पव हुनका रौखाव आरि गेननि आ से रैठि ते गेन । “भोव होगतहि हम डाकदबकेँ रैजा अणरनि ।” हम सोचनहुँ । दूदा वाति कठतहि नहि बहए ।

दोसव दिन, भोरे-भोरे गोरिन्दक दादी डागदव केँ रैजा अणननि । डागदव हुनका सुगगा-दराङ्ग देनथि, दूदा कोला नात नहि भेन ।

ओ रीट-रीटमे आँधि थोलेत छनीह । हुनक सौसे देह उच्छर त गेन बहनि आ हुनक आँधि तीतव दिस घीटन ज्ञा बहन छन । हुनक हाथ-पयव काँपि बहन छननि । ओ हमवा अपणा नग रैसराक गशिवा केननि । ओ हमवा किछ कहए छहित छनीह से तेँ हम रूमि गेलहुँ दूदा ओ किछ रैजि नहि सकनीह ।

ओहि दिन हुनक रौखाव रैहूत रैठि गेन बहनि । हुनक आँधि रैल होमए नागन बहए । रौखावसँ ओ काँपि बहन छनीह । रौदमे हुनका गवसँ घब-घब केव आरौज भेन ओ ओहि आरौजक सगहि ओ जतए स्वतन छनीह किछए पनमे सब किछ शीत त गेन । ओ हमवा जोडा कए छलि गेलीह । हमवा अनाथ क कए छलि गेलीह ।

दादी एगले आरि कए अंतिम संस्कारक तैयारी कबए नगनाह । शैलपे से बहएरना मामा धविकेँ खरैयि देमए रैना हमवा किओ नहि भेटैत । रैवथा रैहूत जोवसँ सँ त बहन छलैक । गाममे आएन रौठा क पाणि एखन धरि घटन नहि छलैक ।

शुशान घाँट पव दादी एगले टिता पव नकड़ि वाथेत ज्ञा बहन छनाह आ हम हुनक सग द बहन छलिअँक । हमव मायक अंतिम यात्रामे दादीक अगले आन किओ नहि आएन बहए । अणहाव-दूणहाव त गेना पव टिता रैनि कए तैयार भेलैक । हम मायक नहशिकेँ टिता पव छट । कए अपणा हापेँ आगि देलिअँक । दूदा टिताकेँ आगि नहि नालैक । एकतँ तीतन नकड़ि आ तादुपव रैवथा से । दादी रैहूत प्रियाम केननि, दूदा रैवथा आ तेज हराक कावणै टिताकेँ धाह धरि नहि नागि सकलै । अधवतिया त गेन बहेक आ हम दूनु गोष्ठी एखन धरि शुशान घाँटमे छनहुँ । टिताकेँ आगि नगएरौक प्रियाममे दादी थकि टुकन छनाह । जखन कोनहुँ उपाय नहि छनननि तेँ टुपटाप काम कबए रना दादी किछ कानक ले ठाठ बहनाह आ रैजनाह-

“रौड ! अहाँक हापेँ अहाँक मायक टिताकेँ आगि नहि नागि बहन अछि ? आरि की उपाय ? ”



“आरौ कोशहूँ तबहै एहि नहामिकेँ माष्टिमे गावए पड़त ।” एतरो कहि ओ कोदकिमँ माष्टि खोदरँ सुबह क देननि ।

हूणकब राँत सुनिकए हम सोछए नागनहूँ- “हँ, हम ठहबनहूँ भागहीन पाखजो ! पाखजेक रीशज डी, एहि जेन हमरा हारैँ मायक टिताकेँ आगि नहि नागि बहन अछि । हमरा पाखजो नहि हौराक चाली । हमर ज्ञा पाखजेण हमरा मोषकेँ छेष्ट पहुँच बहन छन । आग एहि पाखजेणक एहमास हमरासँ महन नहि त बहन छन ।”

एक आदमीक नयाँ-जक रँवोरवि एकठा खदना खोदन गेन ।

“माष्टि देरौसँ पहिल अपन मायकेँ प्रणाम करिओन ।”

दादीक एतरो कहनाक उपवाँत हम हेशिमे एनहूँ आ दुनु हाथ जोड़ि मायकेँ प्रणाम केनहूँ ।

किछु दिनेमे हम पाखजोसँ खनामी रँनि गेनहूँ । ज़ाहि कारेब पब गोरिन्दक दादी ड़ाग़रब ड़नाह ओहि कारेब पब ओ हमरा खनामीक रूपमे बाधि जेननि । हमर काज छन यात्री सभक समाण उपब चठ एरँ आ उँतावरँ । राजाबक दिन तँ कारेबमे रँहूँ तीड़-भाड़ बहेत ड़लेक । कारेब केब तीतब यात्री जोकनि, तँ उपब केनाक घोब, कठहब, अषाषाम सन रँहूँतो वाम टिज होगत छन । कारेब रँमु हकमेत-हकमेत सडक पब चठेत-उँतलेत छन । दूदा ज़ाबि हम खनामी बहनहूँ ताधरि कारेबकेँ किछु नहि रिगड़लेक आ ल तँ हम एक्कहूँ ठाँ ट्रिप चूकए देनिअक ।

रँस मातिकक भाय यात्री जोकनिसँ पाग असूलेत छन । ओ रँहूँत ठसकमे घुमेत छन, दूदा वाति होगतहि ओकब सभठाँ हेकड़ी खतम तँ ज़ागत छन । घब पहुँचनाक रौद ओ पारनुक ओहिठाम ज़ा कए भवि दया शिवाँरँ पीरि जेत छन । एकदिन ओ हमरा शिवाँरँ आनरौक जेन कहननि । हम हूणका शिवाँरँ तँ आनि देनिगनि दूदा दादी हमरा देख जेननि आ रँहूँत ड़ष्टि-फ़ष्टकाब केननि । “आरँ खेब कहियो शिवाँरँ आनए नहि ज़ाएरँ ।” एतरो कहत ओ हमरा गामक केनरौय देरीक किविया देननि । एकठाँ आव एहल सन सबा.....एकरेब लौजेक मैकेनिक नाडू आ हम कारेब धोरौक जेन नाजी पब गेनहूँ । हमसभ गाड़ीक पीतरिया चदवाकेँ गनायट्रिसँ बगड़ा-बगड़ा साफ़ केनहूँ । गाड़ी धूँलेत कान हमसभ पानिसँ तीज गेन छनहूँ । सौँसे देह ज़ाड़सँ काँपए नागन छन, एहि जेन नाडू एकठाँ रीड़ी सुनगा कए अपना दूहमे दरौनक आ गाड़ी धोरँए नागन । ओ एकठाँ रीड़ी हमरो देनक । हमहूँ रीड़ी सुनगेरौँ आ पीरँ नागनहूँ । एतरेहिये दादी ओतए पहुँचि गेनाह आ हमरा रीड़ी पीरँलेत देधि जेननि । ओ हमरा पब रँहूँत गोम्सा भेनाह आ रँगहि ओहि गोम्सामे हमरा पब केक थापड़ मावि रँसनि । हम काणए नागनहूँ । हम हूणकब पयब पकड़निगनि, माँहनी माँगनिगनि, दूदा एहि सभसँ दादीक गोम्सा कम नहि जेननि । “आरँ जँ खेब अहाँ कहियो रीड़ी पीनहूँ तँ अहाँकेँ अपन मायक किविया !” ओ हमरा किविया देननि ।

हम ज़हियासँ खनामी रँनन छनहूँ तहियेसँ दादीक ओहिठाम बहेत छनहूँ । हम आ गोरिन्द दुनु गोष्टे भागक सदूमे तँ गेन छनहूँ । गोरिन्द हमरासँ रँसी रँधियाब आ चनाक छन, रँगहि तल्लुङ्गानी आ आस्तिक सेहो । हमर माय ज़हियासँ हमरा जोड़ि के गेन बरधि तहियेसँ हम प्रायः कालेत बहेत छनहूँ । एहणा ह्रितिये लषा बहितहूँ गोरिन्द हमरा सममारैत-रँमारैत बहेत छन । ओ कहत छन, “अहाँकेँ पता अछि ! ज़खण हमर तामू गाय रँचा देल छनीह तँ ओहो चरिअ मासक तीतब मरि गेन



## VIDEHA

ढगीह, तखन हुनका रौंढाके के देखल बहेक ? ओहि समयक छोट रौंढा आग रौंढका रौंढद रौंढि गेन छैक । पाखना ! ....सौ पाखना ! कानु जूनि ! अहाँके देखि हमरौं कानरौं आरि जागत अछि । ” हमर आजी सेहो पछिले मान तगराशक घब गेन ढगीह । ओ कहैत ढगीह, “सभ्ठा जग्य जेरैएरौंन प्रानीके एकदिन मरहि पडैत छैक, एकवा जेन लोकके दूथ नहि कवरौक चाही । ” अ सभ सुनि कए हमर कानरौं रौंढ होगत ढन । हम ओकव भाषा सुनेत जा बहन ढनहुँ आ ओ कोनो तन्ननेनी जकाँ रौंढतहि जागत ढन.....

“मन्यवख जग्यक रंगहि मून् सेहो अगना रंगहि आगल अछि । जग्यकानमे ओ लना बहेत अछि, लनासँ ओ जराश त जागत अछि, जराशसँ रूढ आ हेब जग्यक आथिबी आ अतिम अरस्त्यमे मन्यवखके मून् भेटैत छैक । अरस्त्यक एहि दफसँ हलक प्रानीके गृजबहि पडैत छैक । जतए-जतए प्रानी छैक ओतए-ओतए मून् पसवण छैक । धवती हो, जम हो रा आकशि, सभ्ठाग्य मून् निश्चित अछि । ”

जखन हम हुनकासँ पुछियनि, “अहाँ अ सभ कतए सीखनहुँ ? अ सभ अहाँ कितारैमे पठल छी की ? ” तखन ओ जराँर दिअए, “हमरा अ सभ रिशे आजी रौंढरौंढत ढगीह । ”

एकरेव हेब मायक याद अरितहि हमरा आथिमे लाव आरि गेन आ हमरा समझहि हमरा छोट्टि कए गेन हमर मायक मुर्ति हमरा सोममे ठाठ त गेन । बामागण, महाभावत आ आन-आन कथा-गिहासी सुनारौं रानी....., हमरा मरगिना खोआके गेघ कवरौनी....., हम रौंढि गेनहुँ एहि खुशीमे हमरा अगल छतरीसँ नगरैएरौंन हमर माय....., अगना आथिक सोममे देखल गेन हुनक मून्, हुनक नहशि, अ सभ्ठा हमरा याद आरि गेन । आथिमे आएन लाव पौछि हम हुनका प्रणाम केनियनि ।

## चाबि

गोरिन्द जहि रौंढख पणजीमे लोकबी पब नागन, पाखना ओहि रौंढख जौह अयक केव खदाण पब त्रैक ड्रागरव रौंढि गेन । ओकव काज देखि कए एक रौंढखक तीतवहि कसणी ओकव लोकबी पक्री क देनकेक । ओकव चाबि सौ पढास कपैया दरमाहा भेटैत बहेक आ एकव अनारो ओरबठागम सेहो । ओकव खेणाय-पीणाय होठनमे होगत छलैक आ ओ कतहुँ सुति जागत ढन ।

पाखना आ आनेस दुनु अगल पयवक तरे दुतिके मसोडति नदानक लौरेज नग जा बहन ढन । कालि आगल गेन जौह अयक केव दुर्षक ठेव देखिकए ओ रौंढत अचबजमे पडि गेन । ओ दुनु लौरेज पहुँचन । त्रैक स्थाँर क कए धुवाक मेघके पाछु छोट्टित ओ लोकनि त्रैक तेजरीसँ रौंढ निक ।

सौममे पाखना आ आनेस अगल-अगल त्रैक आनि लौरेज नग नगा देनक । ओ कालिक अपेक्षा आग एक खेप रौंढी नगोल ढन । आग दुनु रौंढत रौंढी प्रसन्न देखे ये आरि बहन ढन । पाखना अगना देह पब एक नजनि देनक । ओ धुवाँ सँ सागल रौंढागत ढन । ओकव कगड । पूर्ण कगसँ



## VIDEHA

धुवामे साभन बहेक । माथक केशे, मोछ आ सौसे देह धुवा सँ साभन बहेक । ओ हाथ-पयब धोरौक जेन आबेसक संग नन दिस छनि देनक ।

नन पब जमा भेन सभठी मज्जुवणी पाखलोक मज्जाक उँड रौ नागनीह । एकठी मज्जुवणी अगन एकठी छोट सन एना निकालि पाखलोक केँ ओकब अगनहि कग देखरौ जेन देनकेक । ओ एना जेनक, ओहिमे अगन अजरीर कग देखि ओकवा हँसि नागि गेलोक । ओकवा रूमेलोक जे ओ ननका झूह रौना रौनवरी छेक ।

“पाखन्या, रौगन रना नीनमे जेना धुवा जमेत छेक तहिना तौवहुँ देह पब जमान छह ।”

एकठी मज्जुवणी पाखलोक केँ पयब सँ माथ धवि देखेत कहनकेक ।

“ओ तँ धुनेक मिन पब लोकबी करेत छेक ।”

एकठी दोसब मज्जुवणी ओकब मज्जाक केनकेक । ओ सृनि सभठी मज्जुवणी हँसय नगनीह । ओकवा संग पाखलोक सेहो हँसय नागन ।

“ओ धुवासँ भवन अछि एहिजेन अहँसित ओकवा पब हँसि बहन छी ?” आबेस मज्जुवणीसँ पुछनकेक....:

“नहएनाक रौद ओकवा देखि जेरैक, ओ सेरँ सन नान आ एकदम हिरंगी सन भ ज्ञाएत, जे देखि कोला रौप ओकवा अगन रौठी देरौ जेन तैयाव भ जेतेक ।”

“आबेस, पाखलोक जेन अहाँ अगनहि ज्ञातिमे कोला कथा तकि दियोक”, पहिन मज्जुवणी कहनकेक ।

“.....से किएक ? ओकवा तँ कोला पाखलोक चाही । पाखन्या ! अहाँ अगना जेन निरसन सँ एकठी पाखलोक न कए आरि ज्ञाएरँ ।”

एहि रौत पब सभ केओ हँसय नागन झूदा पाखलोक केब भौह तनि गेन ।

“ओ.....हो..... एकब मायाक रौठी छेक न ?” रौचहिमे सबण आरि गेनासँ दोसब मज्जुवणी पहिनसँ रौजलि ।

“एकब माया सोनु पबसुए शैलपे सँ गाम आएन छेक । ओकब रौठी रियाह कवरौक जोग भ गेन छेक ।”



“श्री..... ज्ञ तँ पाखलो छैक ल ? ”

“पाखलो सँ ओकब रियाह..... ? श्री.....” पहिल मज्जुवणीक अणभ डाँड पब राखन तोनिया मारैत कहलक । ओकब ज्ञ कहरँ स्वमिकए सब किओ छुप भ गेल । पाखलो केँ रँहूत खवाप नागलैक आ ओकब तैह तनि गेलैक ।

बहा-थो कए ओ लोकनि नीटाँ उँतव नागन । उँतवैत कान आलस सँठी रँजा बहन छन आ पाखलो छुपछाप छनि बहन छन । ओहि मेषक हितिये ओकवा अणभ माया, मोषुक पछिना रात सब सक्ता आरि गेलैक ।

मोषुक रियाहमे पाखलोक माया, ओकवा गोदीमे न कए गेल छनीह । रियाहसँ ठीक दु दिन पहिले, मोषु अणभ रियाहक खरँबि अणभ रँहिनकेँ देल छलैक । ओ रियाहमे कोला रिव-रारहाव कबरोक लेन तैयाव नहि बहथि, रूदा मोषुक जिदक कार्शेँ ओकवा माया पडलैक ।

मोषुक दुनियाँ केरन दु रँवथ धरि छनि सकन । ओकवा एकठा रँठी भेलैक रूदा तैसबहि रँवथ ओकब घबणी ओकवा सदाक लेन छोडि कए छनि गेलीह ।

पाखलो एकठा पेश सँस छोडलक । ठनासँ नीटाँ उँतवैत ओकब पयब नडखड । गेलैक ।

आलस आ पाखलो नदीक कछेव रना हेठन पहुँचि गेल । आन दिन जकाँ ओ सब हेठनक तीव जगरोक लेन अणभ-अणभ माथ नीटाँ सुकोनक । पाखलो छह पीरि लेनक रूदा ओकवा दियागसँ एखन धरि ओहि रातक निमाँ नहि उँतवत छलैक । आलस ओतए जमा भेल मित्र सभसँ गप्प कबए नागन ।

पाखलो होठनसँ रौहव निकनन आ खेत दिन खूनन पेड़ । राँठे चला नागन । ओ रँहूत दुखी अछि, एहन ओकवा देहवासँ रूमागत छलैक । मज्जुवणी सब द्वावा कएन गेल गप्पक नह ओकब कलेजके लोचल-फावल जा बहन छलैक ।

“श्री..... ज्ञ तँ पाखलो छैक ल ? ”

“पाखलो सँ ओकब रियाह..... ? श्री.....”



अ आराज मंगुथी सबनाक पानिक छन, ल कि कपड 1-नता थोरौ आ पानि भवरीक जेन आरै रानी कथा आ स्त्रीगणक रोजरौक । आग पाखजो कल देवीसँ आएन बहय । ओ किछु अग्रमणय मन जाँतौ छन । ओ सबनासँ गाम दिस जाएरौना लोकपोर्डा या दिस देखनक । ओहि लोकपोर्डा याक रौं अहुरिया गाममे पयब बखल छन ।

ओ अपन देह सँ कपड 1 उतावनक आ मंगुथक गाछक जडा मे बाधि देनक । ओ सबनाक कछेबमे रैसि गेल । रैत पानिमे ओ अपन पयब खूनन छोर्डा देनक । ओकवा जाड नागलोक । ओ जाड ओकवा नममे समा गेलोक । ओ अपन आँखिक पिपनी रँग क जेनक । दुपहबमे धुवा पब चलेत जे पयब छक-छक पाकेत बहेक ओहि पयबकेँ एखन जाड नागि बहन छलोक । अ मोटि पाखजो एकठा नमहव साँस छोडनक आ आँधि रँग क जेनक । ओ प्रायः आरिंकए पहिल अपन पयब ठँटा पानिमे डुरैरौत बहय । जखन सज्जा कथा आ स्त्रीगण पानि भरि कए छनि जागक, तखनहि ओ नहरौत छन आ अपन कपड 1-नता थोरैत छन ।

ओ पानिमे डुरैकी नगौनक । डुपाक केव आराज भेलोक एहिलेन ओ अपन माथ उठौनक ठँ देखनक जे शोमा हँसि बहन छनीह । ओहो हँसन । शोमा सबनाक उँपवका धार पब अपन घेन भवए नगनीह । “आग पानि भवरीमे देवी किएक भेल ?” पुछरैनि, पाखजो मोचनक । झुदा ओ चुप बहन । शोमा घेन अपना डार पब बाखनक आ छोठकी घेन अपना हाथमे बाधि छनि देनीह । नजरिसँ दुब होगत धरि पाखजो ओकवा देखतहि बहि गेल ।

ओ होशमे आएन ! की शोमा पानिमे पाखब हकल छनीह ? ओ मोच नागन, हँ, ओकव एक मोष कहत छलोक जे “ओ आएन छनीह आ हमवा सचेत कवरीक जेन ओ पाखब हकल छनीह । ओकव दोसर मोष कहक नहि, ओ पाखब माव एहन काज नहि क सकैत अछि । त सकैछ उँपवका मंगुथ गीटाँ गिवन होगक ।”

ओ अ मोचतहि छन ताधरि एकठा मंगुथ पानिमे गिवलोक । पाखजो ओ जान मंगुथ उठौनक । ओकवा ह्वाङनक । ह्वाङनाक रौद ओ ओहि खँछिणी मंगुथकेँ अपना झँहमे जेनक । खागत कान ओकवा एकठा घँना याद एलोक । एहि घँनाक रँहूतो रँवख त गेल बहेक । जँगनमे काजू आ काङ्ग खागत-खागत गोरिन्द आ ओ एहि सकला पब आएन छन । मंगुथी सबनाक मंगुथ रँहूत पाकि गेल छलोक । पाखजो आ गोरिन्द ओहि मंगुथ पब पाखब मावए नागन । ओहि समय शोमा सबना पब आरि बहन छनीह, अ गोरिन्द देखनक आ देखतहि अपना हाथसँ पाखब हकलि देनक आ पाखजो सँ कहनकेक “पाखजो, हाथसँ पाखब हकलि दियोक, रिचा मायाक शोमा आरि बहन छथि ।”

“किएक ?” पाखजो पुछनकेक ।

“यौ, मंगुथी सबनाक जगह ओकले छेक ल, हमसभ जे मंगुथ सँठहि बहन छी अ रात जँ ओकवा रौरुकेँ पता नागि गेलनि तँ से नीक गप्प नहि होयत । ओ पारिओ देताह आ मावरी कवताह । गोरिन्दक कहनाक पशतो पाखजो अपना हाथसँ पाखब नहि हकनक । ओ नगाताव सँठहते





## VIDEHA

बहन । गोरिन्दक लोकनाक पश्चातहि ओ बकन । तारैत शोमा ओतए आरि गेनीह । ओ नाम बंगक पाकन मंगुश्रकै देखनक । ओकरो मंगुश्र खरैक मोष भेलैक । ओहो पाख माबि-माबि मंगुश्र सखाबए नागनीह । ओकब दु-तीस पाखबसँ एकठो पात्रो नहि गिबलैक । पाखलो आ गोरिन्द दुनु हँसए नागन । ओ नज्जा गेनीह । ओकबहि आसन पाखबसँ पाखलो मंगुश्र सठोह नागन । जल्दीए ओ पाखब ओतहि फेकि मंगुश्रक गाढ पब चट्टि गेन आ मंगुश्रक गाढक डारिकै हिनारि नागन । मंगुश्र सब ठर-ठर कए गिबए नागलैक । छिष्टी आसराक जेन शोमा घब चलि गेनीह । ह्रद आगम अरैत कान ओकबा संगे ओकब राँजूजी सेहो आरि गेनाह । धवती पब पसबन काँट मंगुश्र देखि कए ओ पाखलो कै ओकबा माए आ ओकब जाति नगा कए गारि देनलैक ।

तकबा राँदसँ जखन कहियो शोमा ओकबा राँठमे भेटैक ओ अगण माथ सुकाकए चलि जागत छनीह ।

जाहि दिससँ पाखलो द्रागबर भेन छन तहि दिससँ ओ मंगुश्री सखा पब नहएराँक जेन अरैत छन । पाखलो कै देखि शोमा कहिओ-कहिओ हँसि दैत छनीह । शोमाक योरनक भाव देखि कए ओकबा मोषमे उमंग आरि जागत छलैक । एकदिस तँ शोमा ओकब आ गोरिन्दक हान-समाटाव सेहो पुढल छनीह । तहि दिस, ओ प्रायः पाखलो कै देखि कए हँसत छनीह आ पाखलोक मोषमे ओकबा प्रति नर अँफब पसकी द बहन छलैक ।

पाखलो सँ ओ खरबि सुनि, गोरिन्द पाखलोक खरि मज्जाक उँड लैक ।

“पाखला, हुषकब स्रभार रँहूत नीक छनि । ओ कल कारी अरथ छुनि ह्रदा देखमे नीक छुनि । अहाँक जोड़ी खरि जँचत ।” ओ राँत पाखलोक मोषमे घुमेत बँहक आ ओ नहरैत कान अगण-आगमे ओ उँफान महसूस करैत छन ।

दोसर दिस बरि बँहक । पाखलो घुमराँक नाथे राँहब निकनन । राँठ चलेत-चलेत ओ मंगुश्र सवणा नग पँटि गेन । सवणाक शीतन पागिसँ ओ एक आँजूब पागि पीरि जेनक आ नगीचक आसक गाढ दिस चलि देनक । ओहि आस गाढक नमहब जर्डी उँपब धरि आरि गेन बँहक आ कोला लणा जकाँ अगण फला उँपब कए धवती पब पसबि गेन बँहक । पाखलो एकठो जर्डी पब रैसि गेन आ प्रप्रातिक सौंदर्य देख नागन ।

आज टैत मासक पूर्णिमा छलैक । पासक लोक सब सातेवी मंदिर नग रँसत पूजा करब रँना बँहक ह्रदा तारिसँ पहिल प्रप्राति फन आ फन सबक नष्टकनि नगा कए रँसत मृतक स्वागत क टुकन छलैक । आसक गाढक अजोह आस सब गोष्टपगवा पाकए नागन छलैक । काजूक गाढ पब नाम आ पीयब काजू नागन बँहक । हबियब अजोह काजू सब पाकराँक राँठ जोहि बहन छन आ एखन धरि डारि पब ह्रदी सब डोनि बहन छलैक ।

शैलः शैलः रँसात सिहकए नागलैक । पाखलो कै नागलैक आरि ओ प्राणदायी रँसात एहि प्रप्रातिकै नरि जाण द दैतैक । गाढ रिबिडुकै पागन रँना दैतैक । रँसातक सिहकरक संगहि





“अहाँ बरि दिन किअक नहि एतहूँ ? ”

“की कही, हमरा अँहिसक मित्र लोकनि हमरा शिकनिक पब न कए छनि गेल छनाह । हम ज्ञाएरना नहि बही, झुदा की कबितहूँ ओ सत हमरा जरबदस्तुी न गेनाह । हमर मोष कबैत बहय जे आरि कए अहाँसँ उँठै कबी । ” गोरिन्द अणन मोष थोनि देनक ।

“जाय दिअ, एखनहि गिननहूँ यैह की कम अछि ?

“छनु पहिल अहाँ नहा निअ”

गोरिन्दक कहना पब पाखजो सबनामे नहारै आगन । गोरिन्दकेँ किछ कहबौक उँसुकता बहनि । ओ अणना हाथसँ पाणि निकालि पाखजोक देह पब छिष्टा मावए नागन, पाखजो सेहो हुषका पब पाणि हफनक । ओहिसँ गोरिन्दक कपड । नीक जकाँ तीजि गेलैक । पाखजो केँ कल खवाप नागलैक । ओ गोरिन्दसँ माहनी माँगनक । गोरिन्द एकवा सतकेँ मजाकमे उँड । देनथि ।

पाखजो नहाकए अणन देह पोछनक । अणन कपड । सुखरौक जेन आवि देनकैक । रौदमे दनु ठोठै आगक जडि पब आरि रैसि गेल । पाखजो गोरिन्दक आँथिमे देखनक । गोरिन्द किछ कहए छहित छन, ओ हुषका आँथिसँ पाखजोकेँ पता नागि गेल ।

“लोलो नरै समाचाव ? ” पाखजो पुँडनकैक ।

“समाचाव ? एकठा नरै समाचाव अछि । ”

“लोल समाचाव ? ”

“हमवा जेन एकठा सरैध आएन अछि । ”

“अहाँक जेन सरैध ? कतएसँ ? केकब ? ” पाखजो एकक रौद एक प्रश्न केनक ।

“ओ सत हम अहाँकेँ रौदमे कहरौ । पहिल रैताउँ, जे मोमा आग पाणि भवरी जेन आगन छुनीह ? ”

“हँ....नहि..... एखन धरि तँ नहि । ” पाखजो सौटिकए जराँ देनक ।



“बहि ल ? तखन तँ हमब अग्रमाण ठीके लेन । हम अहाँकेँ आव बहि उनमाएँ । हमबा लेन रिखा आपाक दिससँ शोमाक लेन सँरिध आएन अछि । हम ओकबा साह मषा क देजिधक ।”

पाखजोकेँ रँतएरौक लेन आषन गेन बहन् गोरिन्द खोजि देनक ।

“रूदा सँरिधक लेन अहाँ मषा किअक कहनहुँ ?” पाखजो खेब प्रश्न केनक ।

“एकब ज्वरारँ तँ रँडु सबन छैक यो ।” गोरिन्द रौजन्-

“शोमाक जोड़ की लेन अहाँक प्रयोजन अछि हमब बहि । अहाँकेँ सक्ता अछि, हम एकरोब अहाँकेँ कहल बली “शोमा आ अहाँक जोड़ की केहन बहत ?” किछ कानक लेन दुनु गोठे छुप भ गेन ।

रौदमे गोरिन्द रौजए नगनाह-

“हम दुपहबकेँ घब गेन बली । खनाक रौद माय हमबा एहि सँरिधक रौदमे रँतौननि । हम साह मषा क देजियनि, रूदा किअक ? से बहि रँतौजियनि ।”

“बहि गोरिन्द, एहि सँरिधकेँ बकारि अहाँ नीक बहि केनहुँ । अहाँ हमबा लेन अग क बहन छी । अ हमबा नीक बहि नागि बहन अछि ।” पाखजो कहनक ।

“एहन बहि छैक पाखजो, अहाँ बूनेत बहि छी । अहाँकेँ किओ बहि अछि । आ शोमा अहाँकेँ पसिन्न सेहो अछि । ओ अहाँकेँ भेटै जेतीह तँ हमबा खुशी लेखत ।”

“रूदा हमबा सँग.....”

पाखजो किछ कह रना बहथि ।

“ओ सब रौदमे देखन जेठैक ।”



## VIDEHA

एतरो कहि गोरिन्द टुप त गेन । पाखलोक मोष रिचरित त गेलोक, द्वा शीमाक सत सवर्षा एखनहुँ ओकवा मोषमे महकैत बहक । शीमा द्वावा गोरिन्दक जेन कएन गेन पुछावि..... ओकव मीठ-मीठ रौनी....., फुन-सग ओकव हँसी.....सत्तै ।

ओकवा दुनुकेँ देखि शीमा नववर्षाँ रिया पाणि भवणहँ आपस चलि जागत छनीह ।

तकर बाद ओ शीमाँ तैठ केनक आ “हमवर्षाँ रियाह कवरँ ? ” पुछनकेक । शीमा ओकवा “हँ” कहतैक ओकवाँ येह अपेक्षा छलैक पाखलोक, द्वा ओ राजनि, “नहि अहाँ पाखलोक थिकहुँ । ” पाखलोक शीमाकेँ किछ कहबैक जेन द्वाँ खोन्नहि छन आकि ओ ओतएँ चलि देनीह । पाखलोक मोष तँ रँमु जे वागवर्षाँ मँ भवन वेगिस्ताणक सदृश त गेलोक ।

## पाँच

शैतिक छेठनमे वातिक भोजन कश्नाक पश्चात् हम दीनाक घब दिस चलि देनहुँ । आंग रँहुत काज केले बली तहि जेन सौंसे देहमे दरद छन । भुँगाँ पव पर्जा तहि हमवा निन्न आरि जाएत, एहण रँमागत छन ।

रौस पव पँहुँचराक देवी षहुँ-षहुँ रँमात सिहक नागन । अहा ! ..... केहन शीतन रँमात छैक ! रँमात नगितहिँ देहमे हरियबी आरि गेन । रौसक एक दिस खेत-पखाव आ दोसव दिस माँडरी नदी रँहैत छलैक । रँगनक नाविसवक गाँडसँ आराज आरि बहन छलैक । टाक दिस अन्हावे-अन्हावे छलैक ! एहि अन्हावेयामे जाण आरि गेन बहक । अन्हावेमे उँपव भगजोगणी त्रकत्रक करैत छलैक । नदीक काबी पाणिये माछ सत उँडलैत बहक आ ओकव नहवि भगजोगिणिँ जकाँ दीपामास त बहन छलैक ।

रौसक रीचरि मे मुनप्रकय (ग्राहदेवता)क मंदिर ब्रकाएन बहक । ओ मंदिर एकदम धूँष्ट गेन बहक । मंदिरक उँपव टाव नहि छलैक । मंदिरक टाक कातक देरान सतमेसँ आंगुक देरान तँ एकदम धूँष्ट गेन बहक । रौकी तीणु देरान पव सिन्धव, रँव, अँष्टी सग पौघ-पौघ गाँड सत जगमि गेन छलैक । गोरिन्दक रिटावसँ मुनप्रकयकेँ खँर पौघ खूनन मंदिर छेठन छनि । ओ कहैत छन “एहि टाक गाँड पव आकासक छत छैक आ एहि मंदिरमे मुनप्रकय बहैत छथि । ”

छलैत छलैत हम मुनप्रकयक मंदिर नग पँहुँच गेनहुँ । एहि मंदिरमे हम एकरेव सँप देखल बली, ओ सवर्षाँ अरिँतहिँ हमर सौंसे देह सिहरि गेन ।

लषणमे एकरेव हम आ गोरिन्द माछ मावरीक जेन नदी पव गेन छनहुँ । रँहुत कानक बाद हमवा रँसीमे एकठौ खर्चीनी (माछ) हँसन छन । ओकवा हम एकठौ नाविसवक सिक्कीमे गुथि जेनहुँ । रँष्टमे मुनप्रकयक मंदिर छेठन । रँसी नीटाँ बाधि हम दुनु गोठे मुनप्रकयकेँ गोब नागरौक जेन गेनहुँ । मुनप्रकयक काबी मुर्ति, मंदिरक धूँष्टनका भागमे पाखवक ठेवीक रीचमे छननि । हम अणष हाथक माछ



## VIDEHA

मदिवक सीठी पब बाधि देनहूँ । हम दुनु गोठे मूर्ति नग माथ ठेकनहूँ । ल ज्ञानि कतएँ ओहि मूर्ति नगक पाखर पब एकठाँ सँप आरि अणन हल कार्ठा ठाठ भ गेलक । हम दुनु गोठे रहूत डरि गेनहूँ आ पाडू हठि गेनहूँ । पढाति ज्ञा कए ओ सँप समरि कए ओहि पाखरक ठेबीमे ठुकि गेन । गोरिन्द तँ डबक कावणै रूनु जे पाखर रैनि गेनाह । हम सभ भगवानक सीठी पब माडू बखल डनहूँ, एहिजेन हूकका खवाप नागननि की ? हमवा मोषमे एहन भेन । हम आपस सीठी नग गेनहूँ आ ओतए बाखन माडू उँठाकए नदीमे हेलि देनहूँ । हमसभ पुनः मुनपुनकयक पयब पब गिब कए हूककाँ माहनी माँगनियनि ।

हम गोरिन्दसँ पुडनियनि, “हम माडू बाखल डनहूँ एहिजेन मुनपुनकयकेँ गोप्पा आरि गेननि की ? मदिव श्रुत भ गेलक की ? ”

“नहि यो, एहन कतहूँ होगक ? गामक लोकतँ हूकका माडू चटरोत डनि ।” गोरिन्द जराँ देनक ।

“तखन सँप किएक देखे मे अपन ? हम माडू बाखल बही, एहिजेन मुनपुनकयक मदिव श्रुत भ गेलक की ? ”

“अहाँक माडू बखनाँ मदिव कोणा श्रुत भ जेतैक ? ”

“हम..... । ”

“दुप बह, पाखलो भेनहूँ तँ की भेन ? पढिना रैब तँ हम गमनी आ आरना बखल डनहूँ, तखनहूँ मदिव श्रुत भेन डलैक की ? नहि ल ! अहाँ दुप बह आ ककरो किड नहि रैतेरैक । ”

हम मुनपुनकयक मदिव नग पहूँटि गेनहूँ । मदिवक टाक दिस पहाड डलैक आ रीचमे मदिव । बातुक अहाबमे पहाड काबी देखागत बहैक । उँपब तरेगामसँ सजन अकामि । जेना घबक धलेन आ डुप्पाड, एहि दुनुक रीचसँ गजोत अरैत टैक ओहले गजोत अकामि आ पहाडक रीच पसरि बहन डलैक ।

हम अणन जूता खोलनहूँ आ मुनपुनकयकेँ गोब नागनहूँ । बातिक अहाबमे मुनपुनकयक मूर्ति नहि नखा दैत बहैक । हमवा भेन जे जेना मुनपुनकय एतए अहाबक एकठाँ रँडका ठी कप न कए पुवा सँसार पब पसरि गेन छथि ।

मुनपुनकयक मदिव रहूत प्राटन टैक । माडरी नदीक कडेब पब एहि गाम केँ रँसोनिहाब आदिपुनकय रैह छथि । पहिले ज्ञ गाम रीठाँ मे डुरि जागत डलैक हूदा माडरी नदी पब रीह रीहि ओ एहि गामक सृष्टि केल बहथि । हूकका मरनाक उँपवात एहि गामक लोक सभ हूककब सारणमे ज्ञ मदिव रँसोलेन डन । एहि तबहै ज्ञ मदिव आ मुनपुनकय द्वावा रँसाउन गेन ज्ञ रीह, दुनु रहूत पवाण अछि ।

हम मुनपुनकय द्वावा रँसाउन गेन ओहि रीह दए टलि बहन डनहूँ । आ एहि रीहक कावणै रँसन गाममे हम, माले पाखलो बहैत बही ।



**VIDEHA**

दीनाक रौसकी घबमे सब दिन जकाँ हम चर्याय रिद्धा कए रौसि गेनहूँ । दीनाक रौंठी एकठा छिड़ी आनि हमवा हाथमे थमा देनक । ओ छिड़ी गोरिन्दक डल्लेक । रँहुत दिनक रौद ओ हमवा छिड़ी निखल बहल, एहिजेन हमवा रँहुत प्रसन्नता भेल । गोरिन्दक रंग घुमर-फिबर, केगदी भूँक पौखविमे बहएर, हेनर, ओ सब सोटेत-सोटेत हम चर्याय पब सुति गेनहूँ आ माथ धरि कनन ओठि जेनहूँ ।

रँहुत बाति रीति गेन, ह्रदा हमवा मिय नहि आरि बहन डन । हमवा मोनमे केगदी भूँक पौखविक छि रौंरि-रौंरि आरि जागत डन । नीन वंगक आकाशिक प्रतिरिरी पामिमे चमकैत डल्लेक । आकाशिक वंगीण मेघ पौखविक नहवि पब हेरि बहन डन । आकाशि अणन छरि पौखविक पामिमे देखि मोनहि-मोन खुर प्रसन्न होगत डन आ “ओ कप नीक नहि अछि ।” ओ सोटि ओ अणन कपर्के नर कपमे वंशैत डन आ मेघक रन्त पहिबैत डन ।

पौखविक नग केगदी (केरँड १) माड ओ केरँड १क गाडु सबक रँडका ठी जंगन बँक, ओ पौखविक महाव केरँड १क माडिसँ भवन बँक । जखन केरँड १क माड पब फुन फुनागत ड्लेक ओहि समय हमसभ नहएरौक जेन गेन डनहूँ । केरँड १ फुना गेन डल्लेक । पीयब-पीयब केरँड १ हरियब-हरियब पातसँ रौहव आरि, अणन जी देखा-देखा कए करँदा बहन डल्लेक । पूवा रातारवणी केरँड १क स्वर्णसँ भवन बँक । हम आ गोरिन्द पौखविमे कुदि गेनहूँ । दूगोठे हेलेत-हेलेत केरँड १क द्रुप नग पहुँचनहूँ । द्रुप पब केरँड १क रँहुत घनगव जंगन बँक । दूगोठे केरँड १क माडक अंदर घुमि केरँड १क फुन तोडए नागनहूँ । फुन तोडि पौखवि पाब केनहूँ । ओ सतुठा पौखविक कडेव पब बाधि देनिअक । रौदमे रौंग जकाँ हमसभ पौखविमे डुरँकी नगौनहूँ । भवि दम सँ घीटि ओहिना पामिमे डुरि गेनहूँ, तँ ओहि सँसक रंगे रौहव भेनहूँ । सौंसे देह डुरँन डन, ह्रदा माथक केसी हेलेत बाविगव सदृश रूमागत डन ।

हमवा गाम स्फुरन आन गामक अपेक्षा कल पौघ ड्लेक । गाममे खेतक मैदान, जंगन ओ पहाड हमवा सभकेँ घुमरौक जेन कमा पडि जागत डन । बाह पब पतरावि चनारैत हमसभ नदीमे मिसवरी खेलेत बनी । नदीमे नहएनाक पश्यात् हेनिकए नदी पाब करैत बनी । अत्रातरासक कानमे पाडर लोकनि द्वारा रँगाउन गेन पौखविमे हमसभ नहएरौक जेन जागत बनी ।

ओ पौखवि रँहुत सुन्नव बँक । पौघ-पौघ पाखर पब पौखविक टाक दिस नीक चित्रकारी कएन गेन बँक । टाक दिससँ सौत्री होगत लोक पौखविमे टुकेक डन । पौखविक टाक दिस पाखरक मेहवार डल्लेक । हव एक मेहवारक तीतव दु-तीण्ठा कम्प गजोतसँ भवन । एहि कम्प सभक देरौनक खान पब नती सभ आ आदिकानीन मान-जान, टिड-टुनहनीक आप्रति रँगन बँक । एहन रूमागत बँक जेना एहि मलाहव आप्रति रना कम्पमे तगराण अमृत-कनने बाधि देल होथि, ठीक ओहिना जेठेवाँठ पाखरसँ निर्मित एहि पौखविमे लौआक आधि-सन साह पामि देखिकए ककबहूँ मोन ह्रथ भ जागत डल्लेक । एतेक सुद्ध पामिमे हमसभ नहएगत डनहूँ । नहएनाक रौद गोरिन्द मेहवारक कम्पमे जा कए कोला भुवि-ह्रमि जकाँ धाणसु भ रँसैत बहथि । तखन रूमागत जे ओहि जेठेवाँठ पाखरसँ महाभावतक कान घुवि एल्लेक ।

पडिना किड मानक सृतिसँ हमर रोगसाँ ठाठ भ गेन । ओह.....हमर माय ! हमवा एहल नागन, जे हमर सँस केओ रँग क देनक, हमवा गबमे ह्रदा रौहि देनक । एकरँव हम आ गोरिन्द जखन एहि पौखविमे नहा बहन डनहूँ तखनहि भूँ रौंरि ओहि रौंरि जा बहन डनह । हमवा पौखविमे नहागत देखि ओ, “पाखला पौखरि सुप्रु केनक ! पाखला पौखरि सुप्रु केनक !” टिकव नागनाह ! ह्रकव टिकवरि सुनि ओतए पाँट डुओ लोक जमा भ गेन । भूँ रौंरि ह्रका लोकनिके आदेश देनथि, जे ओ सभ हमर कल घीटि कए रौहव आनथि । ओ लोकनि हमर कल घीटैत हमवा रौहव आनथि । रौदमे भूँ रौंरि अणन डुडिसँ हमवा खुर मावनथि । ओ हमवा मारैत-मारैत सातेवी मदिब धरि न गेनाह ।



**VIDEHA**

तबि गामक लोक हमरा देखरौक जेन ओतए जमा त गेन छन । ओ हमरा मातेवी मदिबक सीठरी पब नाक बगड़रौक जेन रौंधा केनथि । हम अगन नाक बगड़नहुँ, माँही माँगनहुँ, दूदा ओ हमरा पौखबिक नग रौना लोहाक सुँतसँ रौहि देनथि ।

काहिह हम एहि सुँत पब नारियब ह्योडल छनहुँ । सतक मंग छोन आ तामा रँज्राकए शिगयो (धार्मिक छँसर) खेनल छनहुँ आ आग हम स्रग गामरौनाक जेन एकठी तामा रँजन बली । तँ रौनु हमरा उँपब नारियबक खँष्टा ताडरी छँसनि देनथि । एतरे नहि किओ हमरा उँपब योबाक दुता मारि देनक । योबा काँठतहि हम जेब-जेबसँ टिकबए नागनहुँ । दूदा हमब असहायता पब किशकहुँ कलको फोत नहि भेनथि ।

हमर ग्रा हातति देखि गोरिन्द कालेत-कालेत दौडन हमरा मायकेँ रँज्रा आननक । ओ “हमर रँचा...”, “हमर रँचा...” कहैत काणन-काणन, दौडन एनीह दूदा हमरा सोम अरितहि ओ एकदमसँ गिब गेनीह । ओ रँहोशि त गेनीह आ रँहुत कान धरि उँठि नहि सकनीह । हूका उँठएरौक जेन हम दौडहि रना बली, दूदा जतए रँहन बली, ओतहि बहि गेनहुँ । हूका किओ नहि उँठौनक, उँगठे लोक सत ग्रा तामा देखैत बहन । कलक कानक रौद ओ अगन छँसु छँकेत उँठनीह । हूका नाकसँ मोषित रँहैत बहनि । हाथ आ पयब ये घार त गेन बहनि । ओ उँठि कए हमरा नग अनीह आ “हमर रँचा...” कहैत हमरा पब नगौनीह । हम दूनु गोठे काणन नागनहुँ । ओ हमर रँहन खोनरौक प्रयास कबए नागनीह दूदा ओहि समय चाबि-पाँच लोक हूका पाछाँ घीटि जेनकनि । रौदमे हूकहुँ घीटि कए मदिब नग न गेन । ओ हमरा छोडएरौक जेन तँ रँरुक हाथ-पयब पकड़त बहनीह दूदा ओ हूका ठोकब मारि धकेलि देनथि । एतरी देखतहि हमरा गोम्साक पावाराब नहि बहन । हमरा देहक गबम खुन दौडए नागन । हम जतए रँहन बली ओतहि टिकबि-टिकबि कए बहि गेनहुँ । रौदमे हमर खुन ठँटा त गेन आ ओ मेलै: मेलै: हमरा शीबीसँ निकलि बहन अछि, रँमारँ नागन....., हमरा रँमाएन जेना हमरा पूवा शीबीबक सतँष्टा खुन रँहि गेन हो ।

हमर माय कामि बहन छनीह आ हूका सतक पयब पकड़ि बहन छनीह, दूदा हूक गोहारि किओ नहि स्रनि बहन छन । ओ जहिया हमरा छोड रँए आगु आरथि, लोक हूका लोक लोक । रौदमे जखन ओ गोम्सासँ महाजणकेँ गारि पठरँ सुबह क देनथि तँ लोक सत हूकहुँ घसीठे नागन आ जाहि सुँतसँ हम रँहन बली ओहि सुँतसँ हूको रौहि देनथि । आरँ हमर दूह पूरँ दिस तँ हूक दूह पछिम दिस त गेन । हम दूनु गोठे एकहि सुँत सँ रँहन छनहुँ, दूदा एक दोसबारेँ देखि नहि पँरैत छनहुँ । ओ “हमर रँचा...”, “हमर रँचा...” कहि कए कालेत छनीह, तँ हम माय....., माय....., टिकबि कए कामि बहन छनहुँ । किछ समयक पश्यात् ओ कोणहुँ तबहेँ अगन हाथ पाछु आनि हमरा छनथि । हम दूनु दिसतबि ओहि स्थिति ये बहनहुँ ।

पौखबिक शुद्धिकवा कबएरौक जेन ओ होम-जाग करौनथि । चाबिठी केबाक थरु आनन गेन आ पबहित लोकनि होम सुबह केनथि । ओ लोकनि होमनि जरौनथि । मँदाचाबा करैत ओ लोकनि ओहिमे मरिया मोकए नगनाह । हमरा रँमाएन जे ग्रा सत हमरा आ हमरा माय, दूनुकेँ एहि आगिमे लोकनि देत । होम चरितहि कान एकठी पबहित ओहि होमसँ आगि आनि हमरा पयब पब बाथि देनक । हमरा रँमाएन, जेना हम काहि होमिका जरौल छनहुँ तहिया ग्रा सत आगि नगा हमरा दूनु माय-पुत केँ जवा देत । दूदा ओ एना नहि केनक । आगिक कावणँ हमरा पयबमे ह्योका त गेन छन जे दर्द करैत





## VIDEHA

बहए । होम-हरण छनि बहन छन आ फाँसी पब चढ़ रना अगवाधी जकाँ हम जतए रौनहन बनी, ओतहिँ हूँका सभकेँ देखि बहन छनहूँ । गामक लोक सभ एहि घटनाकेँ एकठाँ उँसेर जकाँ देखि बहन छनाह ।

दादी ओहि दिन गामसँ रौनहन गेन बहथि । साँस खन घृषितहि गोरिन्द हूँका हमरा सभक खरिबि देनक आ सँगहि न कए सौखरि पब आरि गेन । हमरा आ हमरा मायकेँ सुँत सँ रौनहन देखि कए दादी रँहूत दुखी भेनाह । जाहि दादीक आँथिमे हम आँगुपबि लाव बहि देखल बनी; ओहि दिन देखि जेनहूँ । ओ हमरा छोड़ । देनथि । ओहि कान अ देखरौक जेन ओहिठाम गामक किओ बहि बहथि ।

एहि घटनाक पश्चात् हमरा गामक लोक पब कलकौ गोआसा बहि आएन, किएक तँ गाममे हमरा छोड़ । कए आनहरना आ गोरिन्द सन हितैसी आब किओ बहि बहथि । नाबियबक हूँकेनका खोली जकाँ गबि जागरना एहि घटनाक स्मृति आरि शैव बहि गेन अछि । एहि घटना सभमे सँ एक, सुँत पब नाबियब तोड़रौक अछि, अ रँतरँ रानी हमर माय....., हमरा प्रह्लादक होलिकाक आगिसँ रँटाँ रानी हमर माय....., हमरा आँथिक मोम ठाँठ बहनीह आ हमरा आँथिसँ अनायासे लाव खसय नागन ।

हम गोरिन्दक मायकेँ शैव पावनेहूँ । ओ हमरा घबक भीतबहिँ आरौज देनथि । ओहि समय ओ चाँव रँडैत छनीह । ओ उँठि कए रौनहन एनीह आ हमरा देखि कए रँजनीह, “आँ उँ रँड, रँसु ! ।” हम घबक अँदर गेनेहूँ । ओ हमर हानदान पुँडय नागनीह ।

“एतेक दिन पबि कतए छनहूँ अहाँ ? ”

“बहि रौय..... ” हम किछु कहए चाँहैत छनहूँ

“.... आँग-काहि काजमे रँसी रातु बँहैत छी तहि जेन अँरौक अँसब बहि भेँठैत अछि की ? ”

“...अँसमे आँगयहूँ तेहल काज छन, हूँदा गोरिन्दसँ भेँठै कवरौक बहए एहिजेन ओरबठाँगम छोड़ि कए आएन छी । ”

ओ अँदरमे चाँव पिबारी गेनीह आ हम ओहिठामक रँट पब रँसि गेनेहूँ । रँटक एक कोणमे रँटक आ ओहिपब गोरिन्दक कितारि बाखन छलैक । हम एकठाँ उँपवना कितारि निकानहूँ, ओ अँग्रेजी मे छन, एहिजेन हम बहि पठाँ सकनेहूँ आ ओ आँस बाधि देनिधँक । रौदमे सरँस नीटा रना कितारि निकानहूँ, हूँदा ओ पुँतगानी मे छन एहिजेन ओहो बाधि देनेहूँ । रँटक नग कगड़ । ठाँगरौक एकठाँ हँगब बँहक जाहिपब दादीक दुँठाँ कमीज आ गोरिन्दक एकठाँ पेँलठै ठाँगन बँहक । एखन पबि तँ गोरिन्दकेँ पशुजीसँ आँस आरि जएरौक चली ! एहिजेन हम थिडकीसँ रौनहन देखनेहूँ । हूँदा बसुा सुन छन । मेदानसँ होगत ओ बसुा अँपन देह ठेँठ-मेँठ केल सँधे गाम पबि आरि बहन छन । आँगु पौघ-पौघ गाँठ-रिबिडक कावशेँ शैव गेन गोरिन्दक छँह पबि बहि रँसुगत छलैक ।

दादी रँजाबसँ आरि गेन छनाह । ओ हमर हानदान पुँडयनि । हम कशी मेँठगब-उँठगब तँ गेन बनी एहि जेन ओ हमर प्रँसा केलनि ।



## VIDEHA

ओहि दिन दुःख भरी दादी, ओकर माय, आ हम, शोरिन्दक बस्ता-पेड़ । देखेत बहनहूँ । ओ नहि आएन, एहिजेन हमसभ कले निवाशि छनहूँ । रूत कानक रौद हमसभ भोजन केनहूँ । दादी स्वतंत्रक जेन गेनाह आ हम 'पुनः आएँ' जे कहि छनि देनहूँ ।

बस्तामे आनेसँ भेटे भेल । ओकरा देखि हमरा कले आश्चर्य भेल, कि एतएँ ओ कहियो अपन ओरवठांगम नहि छोड़त छन । एतएँ धरि जे बरियोक दिन ओ भोले-भोव उँट कपेल गेनाक रौद ओ काज पब जागत छन । हम पुछनि-

“आनेस ! रीचहि ये काज छोड़ि कए आएन छी की ? ”

“आरैए पड़न ! नाबियबक गाछसँ बस निकान रना मजदूर पेद्रुक देहात भ गेलैक । ” आनेस रैतौननि ।

“की भेल छलैक ओकरा ? ” हम पुछनहूँ ।

“पता नहि, हमरा निकनतहि ओ मरि गेल । ” आनेस कहनि । आनेसक संगहि हमर ओकरा घब धरि गेलहूँ ।

दोसर दिन पेद्रुक अंतिम संस्कारमे हमरहुँ जाय पड़न । छोटका गिबिजाघबक नगीच रना श्मशान घाटमे ओकर अंतिम संस्कार भेलैक ।

पेद्रु एकटा हिन्दू मोगी बखल बहए, किन्तु ओ ओकरासँ रियाह नहि केल बहय । ओ जा धरि छनीह ताधरि पेद्रुक समाव नीक जकाँ छनलै, मृदा जखन ओ मरि गेलीह तँ ओकरा श्मशानक रौहले गाबन गेल छलैक । किन्तु तँ ओकर अंतिम संस्कार श्मशान घाटमे नहि कबय देन गेल बहैक एहि जेन पेद्रु कामि बहन छन ।

जे घटना स्मरण अरिंतहि हम स्वर्ग उँधेड़बूँल ये पछि गेलहूँ । एहि उँधेड़बूँल ये हमरा एकटा पछिना गप्प स्मरण आरि गेल । एहि छोटका गिबिजाघबमे हमरा रैपतिज्या (ग्रामाग्र धर्मदीक्षा) देन गेल छन । ताहि समय हम रूत छोड़ छनहूँ । तखन फुलो नहि जागत छनहूँ । अपन मायकेँ रैता कए हम आनेसक ओहिठाम गेल बही । ओकरा घबमे ओकर पिताजी हमरासँ पुछनि-

“अहाँ त पाखला छी ल ? ”

“हँ” हम जराँ देनहूँ ।

“किन्तु तँ अहाँ पाखला छी एहिजेन ग्रामाग्र भेलहूँ ल ? ”

हम दृग बहनहूँ ।

“अहाँ काहि आनेसक संग आएँ, काहि उँसेर छैक । ”

दोसर दिन हम आनेसक संग गेलहूँ । ओहि समय हमरा ओकरा पादवी रैपतिज्या देननि । एहि रौतक खरैरि हम ककरो नहि नागए देनिथक ।



घब अत्रनाक रौद, आलेसक ओहिठाम जे हमरा रीकूँत खैरौ जेन देन गेन छन, ओकरा हमर माय रौहव फेकि देनथि। ओ हमरा धमकी देनथि-“रिठूँ ! एषा जँ अहाँ ककरो-कहसँ किछुओ खैरौक टिज न’ जेरै तँ हम अहाँक ज्ञान न’ जेरै।”

हमरा गाममे एहिसँ पहिले जमाजा आ हिन्दूक रीच कहियो सगड ।-हमराद नहि भेन छन, ह्रदा ‘ओपिनिशन सौनक समय गामक रँजवक राडिमे जमाजा आ हिन्दू, दुनु सद्गदायक लोकक रीचमे सगड । त’ गेन। ओहि दिन किओ एक दोसबाकेँ ओकर धर्म नगा केँ गारि देनके, आकि सगड । राँमि गेन। ओहि राति एक दोसबाक घबक आगुक तुनसी टोवा आ एँस तोडा देन गेन। घब-दबरँज्जाक आगु तोड़न गेन तुनसी टोवा आ एँसक माँषिक ठेव नागि गेन। दोसब दिन सगड । आव’ भयाणक कण न’ जेनके। लोक सभ उडा, तनराव आ ठान न’ कए एक दोसबाकेँ मारि देरौक जेन तैयार छलैक। किछुकेँ मारियो देन गेलैक। हम एहि दुनु सद्गदायक रीच घुमि बहन छनहुँ, आ की त’ बहन छैक देखि बहन छनहुँ। हमरा मारौक जेन किओ नहि अरैत छन। “हम नहि तँ जमाजा बही, आ ले हिन्दू, एहिजेन हमरा जोडा देन गेन की ? हमर सँरिध दुनुसँ अछि, एहिजेन हमरा ओ लोकनि नहि मारनथि की ?” हमरा मोष मे एहि तबहक प्रश्न उँठय लागन। दुनु सद्गदायमे हमर मीत लोकनि छनह आ हम हूणका सभसँ मिलैत छनहुँ।

जँ सगड । आव’ रँठि जेतेक तँ खनक शारी रँहि जेतेक, एहिजेन दुनु सद्गदायक लोक डरि गेनाह। रौदमे हम दुनु सद्गदायक लोकसँ मिलिकए हूणका सभकेँ समझौनहुँ-रूमौनहुँ, हूणका रीच समझौता कवरौनहुँ। ओहि समय हम हूणका सभकेँ एकजूँट कवरना आ एक दोसबाक समाद न’ ज्ञाएना दूत रँमि गेन छनहुँ।

एहि गाममे हमर परिचय फकत एतरी अछि जे हमर नाम पाखला थिक, हमर ज्ञाति पाखला थिक, आ हमर धर्म सेहो पाखला थिक।

## ३३

केगदी भाँषक पौतीस-चावीस बैयत, मुनप्रकयक मंदिर नग जमा त’ गेन छन। स्वभलो आ सौणुक रीच रँसन दादी सभसँ नीक नछैत छनह। बैयत, किसान, फँशरी (गौरा बाज्यक आदिनिरानी) सहित गामक सभ लोक ओतए जमा छन।

बैयत सभ अणन-अणन माँग ओतए बाखनक। जमीदाव ककरो घब तोडा देल बँहक तँ ककरो घब नहि रँवार दैत बँहक। किछु बैयतकेँ जमीदाव रँदखन क देल बँहक तँ किछुकेँ हयताक नाबियन नहि देल बँहक। एहि तबहक रँहूत वास माँग बँहक। सभक चेहवासँ गोम्सा आ नावाजगी मनकेत बँहक।

प्रकृत कउन गेन सभ माँग पव जखन चर्चा होमए लागन तँ किछु हल्ला-गुल्ला होमए लागलै। स्वभलो गँरकव लोक सभकेँ चूप कवरौक प्रयास केनथि, ह्रदा हल्ला आव’ रँठि ते गेन। तखनहि दादी उँठि कए अणन दमगव आरौजमे रँजए लागन-

“हम सभ एहि काँदोले गामक गँरकव सदा जमीदावक केगदी भाँष बैयत थिकहुँ। ओषा हमरहिमे सँ किछु ओकरा खेतक हिस्सादाव सेहो छी। हम सभ ओकरा खेत-भाँषमे काँज करैत छी,



**VIDEHA**

झुदा हमरा जतरौक आरथकता अछि ततरौ हमरा प्ठैकेँ नहि भेटैत अछि, अपितु ओ सब जमीदावक गोदाममे चलि जागत अछि । केगदी भाँठमे हबएक षारियब तोड़रौक दिन नाथो षारियबक ठेरी नागि जागत अछि, झुदा सदा जमीदावक मज्जीक रीणा हमरा सभकेँ एकौठा षारियब खएरौ जेन नहि भेटैत अछि । एहि भाँठमे षारियबक गाढ नगारी हमसभ, ओकरा पागि प्ठै कए नमहब कबी हमसभ, भाँठमे खाद छीठी हमसभ, ओकरा ओगवरौहि कबी हमसभ, ओकरा हता रीणारी हमसभ, सुबका कबी हमसभ आ दुँठी षारियब खएरौ जेन हमरा सभकेँ जमीदावक झूठ देख पड़ैत अछि । एहि माँठक पुतकेँ एहि भाँठमे घब-मकाष नहि रीणारौ देन जागत छैक । तानू पब जूरबदतुी ओकरा सभक घब तोड़ि देन जागत छैक । आरौ हमरा सभकेँ हमर नास भेटैरौक चाली । हमरा सभ पब जे अवाटाव भेन अछि से दुब हेरौक चाली, माण दुब हेरौक चाली । ”

“हँ, हँ”, जमा भेन तीरुसँ एहि तबहक नावा सुण मे अएन । रौदमे दादी आब जेवसँ रौजए नागन । ओकर आराज लोकक कणमे गुँजए नागलौक ।

पाखलोक पुवा देहमे रिजलौका चमकि गेलौक । ओ अणष गवम भेन कष पब गोरिन्दकेँ हाथ बखरौक लेक कहलकैक ।

भगराष पब अफत छीठनाक पशुत् हूकब गोहागि केनासँ जे लोकक शिबीर पब भा आरि जागत छैक, तहिना दादीक भाषा सुनि कए लोक सभ पब भा आरि गेलौक, एहल रूमागक । दादीक रौजरौ जारौ बहक-

अणष मोगीक पवताणे ओकरा अ केगदी भाँठ भेटेन छैक । येह सदा, दता जल्लिकेँ जित्त मागि कए ओकरा खाजण भाँठ (फ्लेव रिशेयक खेत) हिल्वगीक सहायतासँ अणषा नामे कवरा लेल अछि । ओकरा कल्लो नाज-शेवम नहि छैक । ओहू पब ओ गाममे बाजा झुकाँ घुमि बहन अछि । अ गाम सदा जमीदावक नहि थिके । गामक खेत-भाँठ हमरा सभक थिक । एहि खेत मे काज कवरनाक खेत-भाँठ थिके । कागत पब निखा लेल अ ओकर नहि भ जेतैक । जँ एहल हेतैक तँ ओ एहि देमेकेँ सेनो कागत पब निखरौकेँ बाधि जेत आ ओ एहि देमेकेँ कागत पब निधि ककरो हाणै रेटि जेत । आरौ हमसभ जमीदावकेँ देखा देरौक जे अ खेत-भाँठ हमरे सभक थिक । खेत-भाँठमे काज कवरनाक थिक । हमरा सभक असहयोगक कारणेँ केगदी भाँठमे षारियब तोड़रौ एख धरि रौकी बहि गेल अछि । ओहि समय जमीदावकेँ एहसास भ जेरौक चाली बहए ।

झुदा ओ तँ अकिले केब आहब अछि । सुनहँ अछि जे भाँठमे षारियब तोड़रौक जेन ओ गामसँ रौहबक पाडेकर (पेशेवर षारियब तोड़ रना) केँ नारैण रैना अछि । ओकरा अएरौसँ पहिनिहि हम सभ सभठी षारियब तोड़ि कए देखा देरौक जे ओ भाँठ हमरा सभक थिक । चले चनु, आगए, एखल ओहि भाँठक सभठी षारियब तोड़ि देरौक, चले चनु, तान आ गड़ । स न कए अरैत जाड ।

सभ किओ ओहि जोशिक रंग उठन आ तान-गवास न कए केगदी भाँठक दिस चलि देनक । भाँठमे हब एक षारियबक गाढमे थुचाक थुडा षारियब नागन बहक ।

एतेक पेष केगदी भाँठ, झुकरा षारियब तोड़रौक जेन महीनाक महीना नागि जागत छलैक, एकहि दिनमे एक टोखाअ सँ रैसी षारियब तोड़ि देन गेलैक । थुचाक थुडा षारियब गिब बहन छन । भाँठमे षारियबक रँडका-रँडका ठेब नागि गेल छलैक । सँम पड़ि गेल बहक झुदा एख धरि सभ किओ षारियब तोड़रौमे रस्तु बहए । एतरीहि मे, “पाखलो गिब गेलैक, पाखलो गिब गेलैक”, एहल हला मति गेल । षारियब तोड़रौ छोड़ि सभ किओ पाखलो नग जमा भ गेल ।



## VIDEHA

पुसवक डाल डुष्टि गेनाक कावणै पाखजो नाबिसवक गाडुसँ नीटा गिब गेन डन । नाबिसवक गाडुसँ ओकब श्पेष्ट, जूँघ, हाथ-पुसव आ डारी घनीठी गेन डलोक जकवा कावणै ओकब टाम निकलि गेन डलोक । नगणैक यारसँ खुष रहि बहन डलोक । दादी आ मोणु ओकवा महारा दए उठाकए रैसनक आ पाणि शियोनक । होशिये एनाक पशुचात्, की भेन डन ? अ जामि पाखजो हँसय नागन ।

रैसन पाखजोकै गोरिन्द हाथक महारा दए उठौनक । चनु, घब चलेत डी ! गोरिन्द पाखजोसँ कहनक । मोणु राजन, “बहि, पाखजोकै हम अणष घब न जाएँ, अ रहूत जखनी त गेन डेक आ एकवा रहूत टेष्ट नागन डेक । एकवा हम घब न जा कए जे किडु दराङ-रियो कबराक हेतैक से कबरा देरैक ।”

ओहि दिनक नाबिसव तौडरँ रँग भेन । पाखजो अणष मायाक घबक बस्तु पब चलि बहन डन ।

दोसब दिन खेब नाबिसव तौडरँ सुबह भेन । पाखजो अणषा माथ पब कमान राहि ठाठ त गेन । दोसबा जकाँ ओहो नाबिसव तौडरौ लेन मोटि बहन डन, दादा ओकब माया ओकवा गाडु पब चठरासँ मणा क दनकेक । एकब राँजुदो ओ नाबिसव तौडरि गितए, दादा सोँसे देहमे त बहन दबदक कावणै ओ एहण बहि क सकन । बजनी जीवा पीमि कए ओकवा पीठ आ कहा पब नगोल डनीह । यारसँ जीवा बहि निकलि जाय एहिलेन ओ नाबिसवक गाडु पब बहि चठन ।

काहि बजनी पाखजोक शीब पब भेन यारकेँ धो-सोडि कए दराङ नगोल डनीह । नगणै पब जे यार भेन बहेक, ओहि पब दराङ नगा कए पछी राहल डनीह । फला आ पीठ पब जीवा पीमि कए नगोल डनीह । बजनीक अ कप देधि कए पाखजोकै अणष मायाक ब्रुकप याद आरि बहन डलोक । बजनी केनरायक मुर्ति-सण सुन्नरि नागि बहन डनीह ।

बजनी ओकब माया एकलौती रैठी डनीह । ओ रहूत शीत आ रिण्य सुभारक डनीह । बजनी जखण दुध आगि कए पाखजोकै पीराक लेन देल डनीह, ओ पीरैत कान पाखजोकै बजनीक रासेना भारक एहसास भेन डलोक । अणु तबिक लेन ओकवा मोणमे डेलेक जे एहि मातामगी देरीक चपु डुरि नी । काहिसँ पाखजो एकठा अणगे दुनिया मे रिचवा क बहन डन । ओकवा मोणमे कतहू कोला मदिबक बचना त बहन डलोक ।

जखण जरीक हार्न सुण मे एलेक तखण पाखजो होशिये आएन । देखनक तू केगदी तौठमे पुनिसक एकठा गाडु नी आएन डन, जकवा सगे सदा जमीदार सेहो डन ।

पुनिस जहिना केगदी तौठमे आएन तहिना हरामे दु-तीण फागविग केनक । सब किओ डरि गेन आ नाबिसव तौडरँ रँग क देनक । दादीकेँ रहूत गोप्सा एले आ ओ गोप्समे सतसँ कहनक-

“अहाँ सब ककरो सँ डवरँ बहि । नाबिसव तौडरँ ज़ाबी बाखु ।”



## VIDEHA

गुस्पाकठव अगण कन हाथमे लेल आगु आएन । ओ दादीकेँ अगणा हाथेँ पकड़नक आ ओकरा जीपमे रैसरोक लेन घाँट लागन । पाखलो ओकरा बोकनके । सभ किओ पुनिसक टाक दिस जमा भ गेन । दु-तीन गोठे जीपमे रैसन जमीदावकेँ नीटा उतारि देनक । गुस्पाकठव टिकड़न, आ गोम्सासँ रोजन-

“अहूँ सभ जँ रैसी रकरक केनहूँ तँ अहूँ सभकेँ मारि नागत ।”

“जाँ, जाँ, दूग बहू ! जँ अहाँ एतए रैसी वंगराजी केनहूँ तँ एतए जमा भेन सभ गोठेए अहाँ सहित अहाँक पुनिसो केँ पीठत । हमसभ पुठिगानी पुनिसक हाथ तँ ठेव एनहूँ तँ अहाँ सभक हाथ कतएसँ आएँ ।” दादी टिकवन । ताथि पुनिस पव किओ दु-तीन चपत धवा देनके ।

ओ सभरतः पाखलो डलोक । गुस्पाकठव पाखलो केँ पकड़ा लेनक, दूदा दादी ओकरा छोड़ । लेनके । गुस्पाकठव दादीक दिस ‘टिरी जाग आकि गिव जाग’ रना नजबिसँ देखनक ।

“अहाँ सभ एतए लोकक बक्का कवए आएन छी रा गौनीसँ उँड रै ?” दादी गुस्पाकठवसँ पुछनके ।

“अहाँ केँ तँ सरसँ पहिले ओहि लोककेँ अँदव कवरोक टाली छन, जे अहाँकेँ एतए आनल अछि । रैह अमनी टोव थिक, ब्रूठेवा थिक, आ दोसबाक दया पव अगण पेष्टे भवएरना थिक, आ ओकवहि कहना पव अहाँ हमरा सभकेँ चनाष कवए आएन छी ?” दादी उँच सुलेँ गुस्पाकठवसँ पुछि बहन छन आ जमीदाव गोम्सासँ दादीक दिस देखि बहन छन ।

“अहाँ हमरा थाषा न जएरोक लेन आएन छी ल ! त हमरा सभकेँ न चनु । सर किओ जीपक अँदव आरि जाँ ।” एतरी कहेत पाखलो जीपमे रैसि गेन । ओकरा सगहि आब पन्दह-मोनह लोक जीपमे रैसि गेन । रौकी लोकक लेन जीपमे रैसरोक जगह बहि डलोक । गुस्पाकठव आठ-नओ लोककेँ जीपसँ नीटा उतारि देनकेक आ रौचन सात गोष्ठी कए न कए टलि देनक । रौकी लोकनि ओहिना दूह ताकेत बहि गेन । सातो लोककेँ ओहिदिन पुनिस-सृशेणहिमे बहय गड़लोक । दोसब दिस सोषु आ सुतन्या गारकवक संग पाँच लोककेँ छोड़ा देन गेलोक दूदा दादी आ पाखलोकेँ बहि छोड़नकेक । जेष्ठा श्राद्धक घबमे छुतकाह बहेत छेक तहिना केगदी भूठेमे नाबियब गत्र-तत्र गड़न बहेक दूदा किओ ओकरा हाथ बहि नगारैक ।

गाममे एकष्ठा आब पेघ यष्टना भ गेलोक । दादी सहित गामक आला-आष लोक पव जमीदाव मोकदमा क देनकेक । गामरना सभ सेहो मोकदमा नडन । मोकदमा रूहूत प्रसिद्ध भ गेलोक दूदा ह्येसना जमीदावक पक्षमे भ गेलोक आ दादी आ पाखलोकेँ एक मामक केद भ गेलोक । ओहि दिन गामरानीकेँ रूहूत दूथ भेन बहेक । दोसबदिन दिस जमीदावकेँ सेहो केद भ गेलोक, किएक तँ ओ सबकाव नग जमीषक बकनी कागजात पेशी केन बहेक । दोसब दिस मजदुर आ बैयत लोकनिकेँ सेहो ओ रैषा कावषेँ हँसोल डलोक, एहि पुषाहक खातिर जमीदावकेँ सजा भेठेन डलोक । ‘जकब जोत तकव जमीष, एहि नियमक तहत कार्यागिष्ट आ उँरवेदाडो गाम बैयत सभकेँ भेठेलेक आ केगदी



## VIDEHA

भरै, खज्जल भरै मज्जदुव लोकनि केँ । एहि गामरना सभकेँ बुनागत छलैक जे आरि ओ रासुरमे स्वतंत्र  
भ गेल अछि ।

पुवा एक महीना धरि जेहनक सजा कष्टनाक पश्चात् दादी आ पाखजो छुटै कए आएन । भरैसँ  
नारियव टोरी कबरी आ लोक सभकेँ भडकएराक जूमे पाखजो आ दादीकेँ एक महीनाक सजा भेल  
छलैक । ओ दुनु गोठे रैड स्वाभिमाषक संग एनाह । गामक हितमे नडएरना एकठा सन्धानीय गामरानीक  
नज्जवि सँ गामक लोक सभ हुनका लोकनिकेँ हुनक माना पहिवा कए स्वागत कएन । लोक सभ दादीकेँ  
सन्धान दए गाम मे स्वतंत्रतताक उमेरक मलोननि । एहि सँ पहिल एतेक बान् खुशी गामक लोक कहियो  
नहि महसूस केल बहए ।

दादीक घर गिनराक जेन गाम ओ राहरो सँ लोक सभ आरि बहन छन । एहि समय पाखजो  
दादीक ओहिठाम रैसन बहए, दादी पाखजो केँ किओ पछनके धरि नहि, एहिजेन ओकवा कल खवाप  
नागलैक । “लोकक नज्जवि मे हुनका हमर पाखजेलन नज्जवि एननि । हुनका सभक रीट हम एकठा  
पाखजो थिकहुँ” ओकवा नागलैक । ओ तखनहि ओतसँ निकलि गेल । घरसँ राहब एनाक राद ओ सोनु  
मामाक घरक बस्ता पकडि जेनक ।

ओकवा मोषमे रिटाव आरि बहन छलैक-“बज्जनी हमरा देखि कए रहूत प्रसन्न हेतीह । ओ  
हमरासँ पछतीह तँ हम हुनका केदक सभठी थिसा सुनरनि । हमरा पीठ पव जे कनसँ मावन गेल  
अछि तकर दाग देखरनि, ओ देखि ओ अपन दुख प्रकष्ट कबतीह, आ हएव तेन पवम कए हमरा पीठ  
पव नगोतीह..... ।”

सोटेत-सोटेत पाखजो सोनु मामाक घर पहुँचि गेल । बज्जनी ओकवा दुबहिसँ अरैत देखि  
जेनक । ओकवा चिहँतहि ओ ‘रिठु’ कहि दौडत ओकवा सोनाँ आरि गेलीह ।

## सात

केदसँ छुटैनाक पन्द्हे दिनक अदर दादीक देहासु भ गेलैक । हमरा बस्ता दखोनिहव  
चलि गेनाह । खानी हमरे किएक ? अगित्त सौसे गामे केँ सन्धान मे ओकव पुवा हाथ छलैक । सौसे  
गामे कामि बहन छन ।

ओहि दिन केगदी भरैमे नारियव तोडत कान दादी आ हमरा सभकेँ पुनिस पकडि  
कए न गेल छन आ हमरा सभकेँ खुँ मावन-पीठन गेल छन । पुनिसक मासिँ दादीक एकठा पयवमे  
घार भ गेल बहक जे अस्तु धरि ठीक नहि भ सकन बहक । केदसँ छुटैनाक पश्चात् ओ घार आव  
रिसुव भ गेलैक आ जतए घार बहक ओकव टाक भाग लोहा सदृश कड । भ गेल बहक । घारसँ  
खुन रैहत बहक । गमेगा डागडव आ रैख लोकनि सँ रहूतो दराङ-रिवा कएन गेल दादी तकर कोला  
असव नहि भेलैक ।

ओहि बाति हम गोरिन्द, गोरिन्दक माय, सुभजो गारकव आ गामक किछु लोग दादीक  
नग रैसन बली । दादीकेँ रोखाव बहनि आ हुनक आँधि रँग भेल जा बहन छननि । अदवतियामे दादीक



## VIDEHA

गनामे एकठा हिट्टकी भेननि आ ओहि हिट्टकीक संगहि दादी अपन अंतिम साँस लेननि । बूमाएन जेना ब्रॉन्हाउसमें गवम ग्रासक तंतु टूँटि गेन हो । रिषा हिनन-डोवन हूणक मेरीव शीत भ गेननि ।

ओहि दिन हमरा नागन जे हमरा पब रँडका रिपति आरि गेन । सोसे गाम दादीक अंतिम संस्कारमे आएन बहेक । गामक हितमे अपन जीरणमे कष्ट उठौनिहार दादीक ज्ञ आमेरनिदान दिस बहेक । अपन पिताजीकेँ ऋणनि दैत गोरिन्द पब की रीतन हेतनि ? ज्ञ अन्वयान कवरँ ओतेक सहज बहि अछि । हमरा ऋणमें शीट, बहि निकलि बहन छन । एहि तबहक दुखक मापन कोना मापक यंत्रमें सँभर छेक की ?

छिता धधकेत बहेक । गोरिन्दक आँधिमें रँबथाक बुँद जकाँ अक्षिप्रवाह भ बहन छन । हमरा आँधिक तँ बूँमु जे लाले सुधि गेन हो । ज्ञ दृष्ट हम अपन आँधिक सोमामे देखि बहन छनहुँ ।

गोरिन्द ओहि दिनमें प्रमत्त बहय नागन । ओना तँ पहिनुँ ओ रँहुत किछु सोटेट आ गम्भीर बहेत छन, ऋदा आरि तँ ओ आओवो गंभीर बहय नागन । हम ओकवा समामेनुँ-बूमेनुँ, आ ओ बूँमिओ गेन, ऋदा ओ अपना आपकेँ रँदनि बहि बहन छन । लोकबी पब जयरौक लेन ओकवा पन्दर दिन पहिनि छिटी आरि गेन बहेक, किन्तु ओ घबहि पब रँसैन बहन ।

छिटी एनाक एक मासक रँदनि ओ लोकबी पब जा सकन । ओकव माय एतए घब पब एसगले बहि जेतीह, एहि रातक दुःशिक्षा ओकव खेल जा बहन छलेक ।

ओ अपन मागयोकेँ अपना संगहि पगजी न जयरौक लेन सोचनक । गोरिन्दक माय अपन रँष्टीक संग पगजी जा बहन छनीह, एहिनेन हूणका रिदा कवरौक लेन आस-पड मक केकठा स्वीगण आएन छनीह । गोरिन्द अपन सँभठा समान राहि लेल छन । अत मे ओ देवान पब नष्टकन दादीक हठाँ आ महादेरक हठाँ उतारि पगजी न जाएरना समाणक रीच बाधि लेनक ।

भगवान जानथि एहि रातक खरिबि गामक बूँजुआ स्वभावो गारिकवकेँ कोना नागि गेननि ? ओ गोरिन्दक घब दिस आरि बहन छनाह । हाथमे एकठा रँसिक नाठी लेल ओकवा जमीन पब ष्टकरीत ओ आगु रँटि बहन छनाह । ओ तौनिया आ कमीज पहिबल छनाह । “ओ आरि बहन छथि”, ज्ञ गप्प हमनी सोषुकेँ कहल बनी । ओ घब धवि पहुँटि गेनाह । गोरिन्द हूणका रँजाक रँसैनिथि ।

“रँष्टी गोरिन्द ! अहाँ अपना मागयोकेँ पगजी न जा बहन छी की ? ” स्वभावो गारिकव पुँडननि ।

“हँ” गोरिन्द नहुँ रँजान ।

“तखन हम जखन कखनुँ एहि रँष्ट दए जाएरँ तँ हमरा के रँजाओत ? ”

एहि प्रश्नक जवरँ गोरिन्द नग बहि बहेक । ओ टूँप बहन ।

“ज्ञ गप्प हम बूँमि सकेत छी जे लोकबिचक चनते अहाँकेँ पगजी जाए पडि बहन अछि, आ हमसभ अहाँकेँ रिदा कवए आएन छी, ज्ञ कले नीक बहि नागि बहन अछि । ”

“आथिब हम की कवी ? लोकबीक कारषेँ जाए पडि बहन अछि । ” गोरिन्द रँजान ।





## VIDEHA

“आरं गामक सीमाण रौंटरौ कहां केलौक ? जोकरौंद अणन सीमाणकेँ नाँयि सौंसे दुनियाँ दिस अणन कथ क बहन अछि ।” ज्ञाहि सोट-रिटावसँ गोरिन्द शिहब जेअरौक निर्णय केल बहए, ओ ओहि रिययमे कहि बहन छुनाह । कलक कान धरि सत किओ टूण बहन ।

“थेव ! अहाँ जतए कतहूँ जाँउ नीके बहू !” अणन जे गछा राउ कलेत सुतलो गारकब रौहब निकनि गेनाह ।

पणजी न जेअरना सतथा समण ओ रौहि लेल बहए । हम कहनियनि-

“गोरिन्द, गाड़ ी छुँठ मे आरं कथा समय अछि ।”

हमब कहरौं ओ संभरतः बहि सुननि । हूकब आँधि भवि एननि आ हूका आँधिसँ ठप-ठप लाव खसय नागनि ।

समण सतकेँ कथा पब आदि हम गाड़ ी नग गेनहूँ ओकरा उणव चढ । देनिअंक । गाड़ ी छुँठरौक समय त गेन बहेक । गोरिन्द अणना मायक संगे ओहिपब रैसि गेन । हम पुछनियनि-

“आरं कहिया आँधर ? ”

“देखा पब चाली ।”

“एहि पन्द्रह दिसक रौद आँधिनी आ साँतेवी देरीक येना छैक, आँधर की बहि ? आ अणिना तीन मासमे गामक केनरौंजक शिगयो मेहो छैक । आँधर की बहि ? ” हम जल्दीसँ पुछनिअंक ।

“केनरौंजक शिगयोमे आँधर ।”

“आ आँधिनी साँतेवी ? ” हम पुछनियनि ।

“बहि ।”

“हम एमगले कोना आरि सकेत छी ? ” गाड़ ी चलि पड़न । हम आव जे किछ पुछनहूँ से सतथा ओहि गाड़ ीक आरौजमे दरि गेन । गोरिन्द अणन हाथ हिनारू हमबसँ रिदा लेननि । गाड़ ी आगु रँठि गेन आ अणिना मोड़क रौद ओ आँधिसँ उमन त गेन ।

गोरिन्दक पणजी चलि गेनाक पश्चात् हम अणना आगकेँ एमगकआ रूँमए नागनहूँ । हम दिसभरि पीपवक गाँठक नीचा चरूतवा पब रैसि गोरिन्दक संरुधमे सौंटेत बनी । ओहि समय नोषु माया ओहि बस्ता दए जा बहन छुनाह । ओ अणना डाँडमे तोनिया नपेठले बहथि आ उणव उँल्लर कमीज पहिबल बहथि । हमबा सोम अरिठहि ओ पुछनि- “अहाँ एतए रैसि की सोटि बहन छी ? ”



“किडु त बहि ।” हम कहियनि ।

“किडु कोना बहि, अहाँक मीत पाज्जी छनि गेनाह, अही जेन अहाँ उँदास डी ल ?”

हम टूंग बहनहूँ ।

“छनु, हमरा घब छनु ।”

हम हूणका संग छनि देनहूँ । पछिना किडु दिससँ हम सोनु मामाक ओहिठाम आष-जाण करैत डनहूँ ।

दूगहबिक रौदमे छलैत-छलैत हमसभ घब पहुँचनहूँ । घबक भीतव गेनाक रौद कल ठाँ महसूस भेल । नान आ कारी बगक ब्रॉक पहिले बजनी दू लोटा पाणि भवि रँवडाक रैसकमे बाधि घब छनि गेलीह । हम दूगोठे हाथ-पयव धोयि तेलियामँ हाथ पोडनहूँ । भोजनक जेन पीठ ी बखराक आरौज अँदरसँ आएन । तारत बजनी रौहव एलीह आ हमरा सभकेँ भोजन पव रँजा कए न गेलीह । हमबहुँ रँहुत जोबसँ तूथ नागन बहए ।

भोजन कएनाक पश्चात् हम रँवडाक सोपो (कर्मिणमा रैसकी) पव रैसि गेलहूँ । कोला आष काजसँ हम घबसँ रौहव निकनहि रना बनी तारत हमरा किओ आरौज देनक ।

“रिठु ।”

हम उँगष्ट कए देखनहूँ ।

अ बजनीह डनीह जे हमरा आरौज द बहन डनीह ।

“हँ ।” हम ओकवा कहियनि ।

ओ हमरा माय सभ मबुव आरौजमे रँजा बहन डनीह । ओहि समय हमरा नागन जेना हम अतीतमे पहुँचि गेल डी । हमरा सँधमे हमर सभठाँ थिसा सोनु मामा ओकवा रँता देल बहयि संगहि हमर माय द्वारा बाखन हमर नाम सेहो ।

बजनी हमरा किडु कहए छहि बहन डनीह, अदा रँहुत देव धरि हूणका अँहसँ कोला शिष्ट, बहि निकननि । ओ ओतहि ठाँ बहनहूँ ।

“रिठु, अहाँ एतहि बहन कक । अहाँ अपन सभठाँ कगड 1-नता एतहि न आँ ।”

अ सुनतहि हम ओकवा दिस आश्चर्यसँ देखनहूँ । रौदमे हम अपन माथ मूका अपन पयव दिस देखए नागनहूँ ।

ओ हमरासँ रँव-रँव आग्रह केल जा बहन डनीह आ हम अपन पयव निहाबल जा बहन डनहूँ ।

“किडु बहि सोदु, अहाँ एतहि बह ।”



“ओ रेंव-रेंव हमवासँ आग्रह केले जा बहन छनीह । हुनकब आग्रह तोड़रौक हिनात हमबासे नहि बहए ।” हम “हँ” कहि देजिअक ।

सात-आठ मास धरि बजनी हमर सहोदर रँहिन सदूमे सेरा करैत बहनीह । हमबा कपड़ 1- नञा, ओछाओण सञ्छा रेंह साफ करैत बहनीह । नहएरौक पाणि गवम कबएसँ न कए सञ्छा काज रेंह करैत छनीह, एहिजेन हम कहियो कान गोप्सा क कए ओकरा डाँष्टियो दिअक, झुदा ओ टुप बहेत छनीह ।

एकदिन हम हुनका कहियनि, “हम की अहाँक सहोदर भाय थिकहुँ जे अहाँ हमर एतेक धाय बाथे छी ?” एतरी सुनतहि हुनका आँथिमे लाव आरि गेन छन । ओ अपन रँहिसँ तकरो पौछनथि ।

“सहोदर नहि छी तहिसँ की ? मे जे हो, छी तँ अहाँ हमर भागए ल ? आ हम तँ अहाँकेँ अपन सहोदरे भाय मालेत छी ।” एतरी कहैत ओ कपमि-कपमि कए काषण नगनीह । हम हुनकासँ माँही माँगियनि । हमरो आँथिमे जखन लाव आरि गेन तखनि ओ टुप भ सकनीह । हम जहिना हँसनुँ, ओहो हँसय नागनीह आ कपड़ 1 धोरैए गलाव पब टलि गेलीह ।

हम चिन्तामे डूरी गेनुँ । पाखजोक जन्मन कतहुँ बजनीक भाय रँहि सकैत अछि ? खुनक सँरिष नहिओ बहल ओ हमर रँहिल सदूमे हमर सेरा करैत बहनीह, तेँ की ओ हमर रँहिन नहि भेलीह ? एहि तबह एकक रौद एक प्रभमे हम उँनमेत गेनुँ । हेब हम गोरिन्दक प्रभक उँत केँ सोमवारैए नागनुँ ।

ओहि दिन रेंव-रेंव याद आरि बहन छन । नाबिसबक गाढसँ गिबनाक रौद बजनीक दरौङ नगेनासँ जे जनेन भ बहन छन तकवा कम कबरौक जेन ओ यार पब नहुँ-नहुँ फुक मावि बहन छनीह । तखन हमर सँरिष ओकरासँ की छन ? हमबा ओ ओकरा रीट कोला सँरिष नहि बहनाक रौरँजुदो ओ हमबा दरौङ नगेनाक । हम कप्रमे बली आ ओ हमबा यार पब दरौङ नगारै रानी ममातामगी छनीह ।

सञ्छा यारक सँग-सँग भौँ आ पिपनीक यार ठीक भ गेन बहए, झुदा ओतए कविया दाग बहि जएरौक कावणै बजनीकेँ रँहूत खवाप नाकीक । ओ हमबा रेंव-रेंव कहैत छनीह-

“भौँ पब कारी दाग बहि बहरौक चाही । एतेक सुन्दर गोब-नाव देह पब आमक कोनपति जकाँ रूमागत अछि । आरि ओकर की कबर ?” भौँहेक कावणै नहसुनियाँ आँथि रौँटि गेन । “हम टुपटाप ओकर गप्पा सुनल जा बहन छनुँ । कारी दाग बहि गेन छन, एकब हमबा एकोवती दुख नहि छन । हमबा रूमागत छन जे हमर नहसुनियाँ आँथि रौँटि जेरौसँ नीक होगतए, ओकरा फुष्ट जेरौक चाहि बहए आ सँगहि दागसँ सौँसे देह कारी भ जएरौक चाही बहए । हमबासँ हमर गोवाग सहन नहि भ बहन छन । झुदा भगराण हमबा गोब रँहल बहथि, एकबा जेन बजनी भगराणक उँगकाव मालेत छनीह ।” “हमबा भगराल भाय भेजल छथि, हमबा ओकरा ठीक कबरौक अछि ।” बजनी रेंव-रेंव रँजल जा बहन छनीह आ हमरो भगराल सदूमे रँहएरौक जेन हमर सेरा क बहन छनीह । तखन हम हुनका कहियनि, “हमरो भगराण देरी सदूमे रँहिन भेजल छथि ।” एतरी कहितहि हमबा काणमे मदिबमे रौँजएरना फँसक सदूमे आवास होमए नागन ।



## आठ

बज्जीक रियाह भेन एक मास भ गेन बहेक । ओ दुवागममे अपन लेहव आरैए रना बहथि, तेँ सोनु मामा खेतक काज जन्दीए निरैँठी कए आरि गेन छुनाह । बज्जीकेँ नीक खेती-रानी रना घब-रैब गिनन बहेक तेँ सोनु मामा रैहूत खुशि छुनाह । झुदा दोसब दिस हुनका एहि रातक दूखो बहथि जे रैहूत कन्दा उमिरमे ओ बज्जीक रियाह क देल बहथि । ओकरा लणपणहिमे ओकरा माथ पब सामाबिक लोम आरि गेन बहेक । ओकरा एहन रूमागक । ओ पाखजो पब लेकावक शिका करैत बहथि, एहि रातक हुनका ग्लानि भ बहन छुनथि ।

पाखजो आ बज्जी, एक दोसबकेँ नीक जकाँ रूमेत बहथि, एहिनेन सोनु मामाकेँ एहिमे किछु खवाप नहि रूमा बहन छन । झुदा जँ येँ सँध कहियो कोना दोसब मोड न लिखए तखन ? तखन तँ गाममे जगहँसागये भ जाएत । ओ गामे ओकरा जोड पडि जागतैक । एहिनेन ओकर मोन मर्शकित बहेत छन । एहि खातिर जतेक जन्दी भ सकए, बज्जीक रियाह भ जएराक चाही, येँ नीक बहत । सोनु मामा मोटल बहथि ।

बज्जीक रियाह कवणे गामक भाबुक मंग रँड उधर-रौधरसँ भेन बहेक । रियाहक तैयारीमे पाखजो पन्धर-तीस दिन धरि रैहूत कष्ट उठौल बहए । रियाहकेँ दिन ओ खुँ मेहनति केले बहए ।

रियाहक दोसरे दिसक गप्प बहेक । बज्जीकेँ घबमे नहि बहनाक कावणेँ पाखजो कणमूँह सन बहए । ओ एहिना घबसँ रैहवागत छन, तखनि दरबँझा पब ओकरा सोनु मामासँ भेँठेँ भेलैक । ओ पाखजोसँ पुछनथि-“की भेन ? ” “किछु नहि ।”, कहैत पाखजो घबसँ निकलि गेन ।

ओहि दिसक रादसँ पाखजोक पहिनि जकाँ हेठनेमे खेलाग-पीलाग आ कतहुँ स्रुति गेलाय आवैत भ गेन । ओकरा रूमागत छलैक जेना ओ एहि गाममे एकठाँ अज्जरी सदृश छैक आ ओकरासँ मिलन बाखएरना एतए किओ नहि छैक । ओ रैहूत उदस बहेत छन । ओकरा माथ पब किछु बेखाक अनार किछु नहि देखागक । रीट-रीटमे ओ खेलागयो-पीलाग जोडि दैक । ओ पूर्ण कणेँ कमजोर हाथी सन भ गेन बहए । ओकर हाड सब मनकए नागन बहेक, गान पिचकि गेन बहेक आ आँधि धमि गेन बहेक ।

पाखजो काज पब नहि गेन छन । ओ दुगहबकेँ पीपबक गाछक चरुँतवा पब रैसन बहए । आनेस आ ओकर मीत सब काज पब सँ आपस आरि गेन बहथि । “पाखजो आग काज पब नहि गेन आ भवि दिन चरुँतले पब रैसन बहन” ओ कहि ओ सब पाखजोकेँ किचकिचरँ नागन । “पाखजो ! आग अहाँ काज पब किएक नहि एनहुँ ? ”

“ओहिना । ”

“ओहिना किओ अपन काज जोडित छैक की ? किएक यो ! अहाँ पाखजोक जन्मन छी एहिनेन अहाँ मामा अपन रैँठी नहि देनथि की ? ” आनेसक एतराँ करँ स्रुति पाखजोकेँ रैहूत गोप्सा आरि गेलैक । ओ गोप्सा सँ आनेसक दिस देखनक ।

“अहाँ ओहिना हमरा पब नाबज नहि होड । मामाक रैँठीक रियाह भेनाक रादसँ अहाँ किछु रँदनि सन गेन छी । अहाँक पागनपणक हानति देखिकए..... । ”



“दूप बज्ज आजेस ! हमरा रोकवक गोम्सा बहि दिखाड ।” एतरो कहि पाखलो  
ओतएसँ चलि देनक । ओकवा आंग आजेस पब रहुत गोम्सा एलेक, दूदा कवरौ की कबितए ? यैह  
रौत भवि गामक लोक-रौद रौजि बहन छन । तखन हुनका सभक दूह पब के ताना नगरैए ? हिनका  
सभक मोटे एहन छनि तखन केन की ज्ञाय ? पाखलो एहन मोचनक ।

ओकवा माथमे रहुत दरद भ बहन छलैक । “जँ हम एहिना मोटेत बहनहुँ तँ एक दिन  
निश्चिते हम पागल भ जएरौ । हमरा मोषकेँ चिन्ता कवरौक आदति सन भ गेन अछि, हम एकवा सँ  
बहि निकलि सकरौ ।”

मोटेत-मोटेत ओ बस्ता पब चलि बहन छन । जूरार ओकवा आरौज देनकेक ।

जखन कि जूरार केँ देखतहि ओकवा गोम्सा आरौ ज्ञागत छलैक, दूदा आंग ल ज्ञानि की भ  
गेलैक ? पाखलो ओकवा जूरार देनकेक आ दाकथागामे पैसि गेन । जूरार हँसन आ ओकवा रैसराक  
जेन एकठा मडिया देनकेक । पाखलो रैसन बहि । ओ एकठा पाँचैकही निकाननक आ ओकवा दिस  
रँठेनक । जूरार बरियबरक हेली (शेवार) ओकवा गिनासमे टाबि देनकेक । अण भविक जेन ओकवा  
मोषमे भेलैक जे एहि गिनाससँ जूरारक माथ हगर्दि दी । जूरार गिनास उठाकए पाखलोक हाथमे  
थमा देनकेक । नर ऐहिकीक खुशीमे ओ हँसि बहन छन । पाखलो एकरेव गिनासकेँ दूहसँ नगौनक आ  
अणहिमे हँसि जेनक । ओकवा गवामे जगण भ बहन छलैक तैयहुँ ओ गिनासकेँ दूहसँ नगौनक आ  
गठागठ पीरि गेन । ओकव गवा भिना गेलैक । खानी गिनास जूरार हेलसँ भवि देनकेक । दोसब  
गिनास पाखलोक गवामे एकठा हिदुकीक संग अछकि गेलैक । गवा आ षाक जवय नागलैक । ओकवा  
नागलैक जे ओकव नियंत्रण रीगर्दि बहन छैक, ओ ओतहि रैसि बहन ।

बज्जणी घब आएन छनीह, एहन ओकवा किओ रँतेल छलैक । एतरो स्वगतहि ओ मोषु मामाक घब  
दिस अपन पयब रँतौनक ।

घबमे मोषु मामा खेत जएरौक हडरँड ी मे बहथि । हुनका काह पब हब छननि । पाखलो  
पुछनक- “बज्जणी आएन छनीह की ?”

“आएन छनीह । दु दिन बहि कए चलि गेलीह ।”

बज्जणी आएन छनीह, मोषु मामा हमरा किएक बहि रँतौननि ? ओ मोषु मामासँ पुछरौक जेन मोटि  
बहन छन, दूदा दूप बहन ।

रौहव जेरौक हडरँड ीमे मोषु मामा अपन घबक केराड रँल केननि आ पाखलो ओतएसँ दूह  
नठका कए आपस भ गेन ।

एक दिन आजेस पाखलोकै गोरिन्दक सरँधमे खरँवि देनक । गोरिन्द अपन अँफिसमे काज  
कवएरानी एकठा अमाअ हरतीसँ रियाह क लेल छन । अ गप्प सुनि पाखलोकै रहुत आश्चर्य भेल  
बैक ।

गोरिन्दकेँ गाम एना एकठा अरमा रीति गेन वैक । ओ मेना आ निगमोमे मेहो बहि आएन  
छन । गोरिन्दक सरँधमे अ खरँवि सुनि ओ ओकवासँ उँठै कवरौ मोचनक ।



पञ्जरी मेहबक एकठाँ रौडका त्ररणमे गोरिन्दक अँफिस डुलोक । “हम ओहि अँफिस कोणा ज़ाँ ?” पाखलो येह सोचि बहन डन । ह्येव ओ हिन्यात केनक । पञ्जरी मेहबक ‘जून्ता हाँडसक मीठी चठेत ओ ओकवा अँफिस पहुँचन । अँफिसक सतठी कर्माचारी ओ स्त्रीगण ओकवा देख नागन । ओ कोण नर प्राणी आरिँ गेन ? सत किओ आश्चर्यक दृष्टिसँ पाखलोकें देखे नागन । किडु स्त्री आ हारती सत ओकवा देखिकए हँसय नगनीह । पाखलोकें अँगना-आंगमे कोणादन नागननि । एतरहिमे अँगन रौंसक केरिष गेन गोरिन्द रँहवायन । ओ पाखलोक नग आएन । गोरिन्दसँ गिननाक रौद, अँफिसक मायारी सँभावमे आएन पाखलोकें कल बाहत भेँठननि ।

“स्यो गोरिन्द !” पाखलो शैव पावनक । गोरिन्द हुँका ज़रौरँ बहि द कए हुँकव हाथ थारिँ केँठीष दिस न गेन । दूनु एक दोसवाक हान-समाचाव पुडुनक । रँहूतो दिससँ गोरिन्द गाम बहि गेन डन एहिलेन पाखलो ओकवा उँनहन देनकेक । दूनु तोरैँटेँ टाह पीरँए नागन । “हम येह एनेहूँ ।” एतराँ कहेत गोरिन्द रीचहिमे टाह पीरँ डोडाँ रँहवा गेन आ ज़न्दिए एकठी हारतीक सँगे घुँबि आएन । ओ माडुी पहिलेन डनीह । हुँका माथ पव एकठी ईहनी सेहो बहनि आ ओ रँहूत धनिक घबक रँमागत डनीह ।

“ओ हमर गिता थिक, हमसत एकवा पाखलो कहेत डियेक ।”

गोरिन्द ओकवा पाखलोक मले रँमेनके । पाखलो ओकवा दिस देखनक । ओ हँसनीह । किडु कान पहिले येह हारती पाखलोकें देखि कए हँसत डनीह । गोरिन्द पाखलो सँ आगु कहनकेक, “तुरियामे येह हमर घबणी हेतीह । हिनक नाम मारिया थिकनि ।” पाखलो ज़खन आश्चर्यसँ गोरिन्दक दिस देखनक तँ गोरिन्द अँगन माथ नीटा दिस मुँका लेनक । “जँ गोरिन्द एकठी ओसाओ हारतीसँ रिसाह क लेत तँ गामक लोक एकवा सँधमे की सोचत ? ओ सत की चूप रँसतैक ?” पाखलोकें एहन रँमेनके । दूदा ओ चूप बहन । रौदमे ओ अँगन एहि रँमतनरँक रिटावकेँ एकदिस बाथि हँसए नागन ।

पाखलोकें हँसत देखि रँमु जे गोरिन्दक माथक तार कम त गेलोक । “आरँ ज़ाति-पाति आ धवम कतए बहि गेन डेक ? दबिखनी आ उँतुरी धुर आरँ सँठ गेन डेक ।” गोरिन्द एहले सन किडु रौत कवताह । पाखलोकें नागलोक । दूदा गोरिन्द चूप बहन । पाखलोकें गोरिन्दसँ रँहूत वाम गप्पा कवरौक डुलोक, दूदा गोरिन्द नग ओतेक समय बहि बँकेक । रौदमे पाखलो दूनुकेँ “अड्डा, ह्येव भेँठ हेतैक !”, कहनक आ रँहवा गेन ।

पाखलो गिहँठमे चठन । ओहि कान ओकवा एकठी रौतक सारण त गेलोक- “आजेस दुरँओ ज़ाओरना डुधि एहिलेन ओ पासपेँठ रँषरौक जेगाडमे बहनि । किडुए दिसमे ओहो रिदेशे चनि जेतोह आ एहि तवकेँ गाममे हमर एकोठी मीत बहि बहि ज़ाँत । हम एकदम एसगव त ज़ाँएँ ।” ओ गप्पातँ गोरिन्दकेँ कहँ रँसविए गेनहूँ । आरँ तँ गोरिन्दा कहियो गाम एताह, एहलो सँभारना बहिके रँवोरँबि डन । रँमागत अड्डि जे गोरिन्दा आरँ गामरँनाक लेन रौहविए लोक त गेनाह ।

पाखलो गिहँठसँ नीटा उँतुरए नागन तँ ओकव माथ घुमए नागलोक । ओकवा रँमेनकेक, जेणा-जेणा गिहँठ नीटा दिस ज़ा बहन अड्डि तेणा-तेणा ओहो नीटा गिवन ज़ा बहन अड्डि । गिहँठ ककनाक रौद ओ एसगव त गेन, ओकवा एहले रँमेनकेक । ओ गिहँठसँ रौहव निकनन ।

पञ्जरीसँ गाम अँवरी कान रँसमे ओकवा कम्पिणी मीमीसँ भेँठेँ भेलोक । “बजनीकेँ रौँठी लेन डेक ।” ओ समाचाव पाखलो केँ रौह देलेन डनीह । ओ सुनि पाखलोक खूनीक कोणा ठेकाष बहि



**VIDEHA**

बहलोक । रसमँ उतवि पाखजो एकपोर्छा या छैत हाली-हाली गाम जग्न जागन । सौंस पछा गेन बहक । पुर्णियाक चाँद खासमासमे साह्य मनकैत बहक । पाखजोक मोषमे बजनीक रैथीक छुरि आरि बहन छलोक । ओ देख मे केहन हेतीह ? ओ अपन माय-मन हेतीह आकि ककरो आन मन ? एहि तबहक कैकथी प्रश्न ओकरा मोषमे उठ्य जागलोक । बजनीकेँ गोर वंग पमिल्ल छैक । ओकरा चन्द्रमाक एहि ज्ञासेना-मन रैथी होमक चाही । काजब नगएनाक रौद काबी आधि रानी ओकबहि मन सुन्नवि रैथी होमक चाही । पुर्णियाक ज्ञासेना चाकदिम पसबन बहक आ जेना नहबक पाणि रँहैत छैक तहिना ओकरा बस्तामे चन्द्रमा अपन ज्ञासेना पसाबन छलोक ।

बजनी पाँच महीनाक अपन रैथीकेँ मंग नए कादोले गाम अपन रौबुज्जीक घब आधन छनीह । पन्द्रह-बीस दिन रीति गेन छलोक, दूदा एखन धरि ओ अपन पतिक घब नहि गेन छनीह । ओ अपन रैथीक नाम सुनु बाखल छनीह । ओ देख मे रँहूत गोर आ सुन्नवि छनीह । ओकर केशे गुनारी छलोक आ आधि नहसुनियाँ । ओ कोला हिल्वगीक रैथी मन रूमागत छनीह ।

बजनीकेँ ओकर घबरना घबसँ निकालि देल छुथि, जे अहराह सौंसै गाममे पसरि गेन बहक, आ सौंसै बहक । ओकर घबरना ओकरा मारि-पीठ कए सुनुक मंग ओकरा रौपक ओतए पठा देल बहक । “बजनीकेँ पाखजोए सँ जे रैथी भेल छैक ।” जे आरोप ओकर घबरना ओकरा पब नगोले बहक, आ मरिपहुँ देख मे हिल्वगी मन नागएरानी सुनुकेँ देखि जोको मत्त एकवा सौंस मारि लेल बहक ।

बजनी अचानक अपना रैथीकेँ न कए घब आरि गेन छुथि । ओहि दिन जे सुनि सोनुकेँ रँहूत धक्का जागन बहक । ओ एना किएक एनीह ? सोनुक मोषमे एहन प्रश्न उठ्य जागलोक । अपना रौपकेँ देखि बजनीक मञ्जक रौह छुँछि गेलोक आ ओ काष नगनीह । आधिबेलेकेँ की ? ओ रूमिअ नहि पारि बहन छन । रौदमे बजनीक देह पब दाग मत्त देखि कए ओकरा मत्तफुट समनमे आरि गेलोक । ओ बजनीकेँ मद्दिना देनकैक । रँहूत देव धरि तँ ओ चुप बहनीह दूदा पछाति जे कए मत्तथी घटना हुषका रँता देनीह । सुनुकेँ न कए ओकर घबरना ओकरा पब शिका करैत बहक । ओकर जे आरोप बहक जे, “पाखजोए सँ बजनीकेँ जे रैथी भेल छैक ।” जे आरोप सौंसै भ सकैत अछि । सोनुकेँ एहिना रूमेलोक आ ओकरा रँहूत गोम्सा आरि गेलोक । ओकर आधि नाम भ गेलोक आ ओ गोम्सासँ पाकजोकेँ गवियारि जागलोक । “पहिलहि हमर रँहिन पाखजोक जातिये हमर शक कथी टुकन अछि । आ आरि ओकबहि रीया हमरा रैथीक भरिया खवाप कबरी पब तुनन अछि” सोनु रौजए जागन । रौदमे ओकर गोम्सा आरि रँठिते गेलोक आ एहिसँ आगु ओ किछ रौजि नहि सकन ।

“एहिमे पाखजोक कोला दोष नहि छुथि । हमर घबरना हमरा पब सुठ आरोप नगा बहन छुथि ।” बजनी सोनुकेँ कहनकैक । दूदा ओ जे मत्त सुनरीक लेन तैगाले नहि छलोक । रँहूत कानक रौद ओ मत्त किछ सुननक आ कहनक- “हमर तँ भागे फुठन अछि ।” दोसव दिन ओ बजनीक घबरनासँ भँष्ट कए मत्त किछ समनाकए कहनकैक- “सुनु मन रँचा रँहूतो जोककेँ भ जागत छैक, जे मत्त तँ भगराणक हाथमे छुथि ।” ओ रँहूत समनएरीक प्रयास कएनक, दूदा बजनीक घबरना किछओ नहि माननकैक ।

सुनुक पानना आरि नाणाक घबमे सुनय जागलोक आ बजनी अपन रैथीक मंग अपन समय हितरँए नगनीह ।

पाखजोए एहि रीच प्रयास: भोले-भोव काज पब निकलि जागत छन आ बातिकेँ पनब काजसँ घुलैत बहए । बजनीकेँ ओकर घबरना घबसँ निकालि देल छैक आ आरि ओ अपन रौपकेँ मंग बहि बहन



**VIDEHA**

ढुनीह, ३ गप्प ओकरा पता नहि बहेक। सभ किओ पाखजोकेँ एकठाँ अगगे दृष्टिसँ देखए नागन डन, झुदा जोक सभक ३ दृष्टि पाखजोकेँ आल समय जकाँ रूना बहन डलोक।

पाखजो दुपहरकेँ हेठन जागत डन। हेठनमे आव पाँच-ढुओ जोक रैसन बहेक आ गप्प क बहन डलोक। हेब ओकरा सभक हँसराँक आराँज एलोक। पाखजोकेँ तीतव घुसतहि आराँज रँग भ गेलोक। रौदमे ओ सभ पाखजोकेँ देखि फूसफुसा कए राँजरँ सुबह केनक। “हमबामे कोना परिवर्तन भेल अछि की ?” एहन प्रश्न पाखजोकेँ दियागमे एलोक। ओ अगण सौसे देहकेँ निहाबनक। ओहिमे कोनहुँ परिवर्तन नहि भेल डलोक। पैठे-सँठे जतए डलोक ओतहि तँ बहेक। आ दाढ़ी तँ ओ काल्हि ए लोखसँ कथौल डन। एहना हितिये हम हिनका सभकेँ कोखा कोना नजरि आरि बहन डी। पाखजोकेँ मोष मे ३ उपेडरूँण होमए नागलोक।

बजनी गाम आएन डनीह, ३ गप्प पाखजोकेँ रीस दिनक रौद पता नागि सकलोक। ओ दोसबहिँ दिन भोले-भोव उठिकए मोषु मामाक घब दिस चलि देनक। रिवाहक रौद ओ बजनीसँ तेँठे नहि केल डन। रीचमे ओ बजनीसँ तेँठे कबरौक लेन दु-तीन रौव मोषु मामाक घब गेलो बहेक, झुदा बजनीसँ तेँठे नहि भ सकलोक। झुदा आग ओकरा बजनीसँ निश्चिते तेँठे हेतेक, ३ जामि ओ जम्दी-जम्दी मामाक ओहिठाम पहुँचि गेल। दवरौजसँ तीतव जागकान ओकर माथ टोचटिसँ ठेकरा गेलोक, जकर आराँज सुनि बजनी रँहबनीह। देखननि तँ पाखजो आएन डनाह। पाखजोकेँ देखि बजनी रँहूत खुँ भेलीह।

“अहाँक माथमे चेष्टे नागि गेल अछि ल!” बजनी पाखजो सँ पुडनक।

“हँ! झुदा भेल किछ नहि।”

“किछ नहि भेल। चनु देखए दिअ।” बजनी देखननि, हुँका माथ पब एकठाँ छेँठेव भ गेल डननि। बजनी ओकरा दरौरँए नागनीह।

“ओह! हमरा किछ नहि भेल अछि, आ ल दबदे क बहन अछि।” एतरी कहत पाखजो अगण माथसँ ओकर हाथ हठी देनकेक। बजनी सुनुकेँ रौहव न अनीह का रँजनीह, “देखु दाय! मामा आएन डुधि।” पाखजोकेँ देखि सुनु हँसि पडनीह। सुनवि सुनुकेँ देखि पाखजो बजनीसँ कहनकेक, “बजनी, सुनुकेँ कारी काजब नगा देन करिओक, नहि तँ एकवा ककरो नजरि नागि जाएत।” एतरी कहि पाखजो हँसय नागन। तारत घबसँ निकनन मोषु मामा सेहो आरि गेलाह। मोहो (कर्सिगुसा रैसकी) पब रैसन पाखजोकेँ देखि ओ ठाँइ बहनाह आ दवरँज्जा दिस आँगुवक गिवावा करेत रँजनाह, “निकन जाँउ एतएसँ। आजूक रौद हेब कहियो हमरा ओतए नहि आएँ।” पाखजोकेँ किछओ रूँन मे नहि एलोक। ओ अरक भ ओतहि ठाँठ बहन आ मोषु मामाक दिस ताकतहि बहि गेल। मोषु मामा पुनः गोमससँ रौजए नगनाह, “अनीक कावर्षे ३ सभ भेल डेक। जँ अहाँ एतए नहि बहितहुँ तँ एतेक सभकिछ नहि होगँतिक। अनीक कावर्षे बजनीक घबरना ओकरा घबसँ निकानि देल डेक। अहाँ एतए कहिओ नहि आरि सकेत डी।”

पाखजो अरक भ देखतहि बहि गेल।

“बजनीक घबरना बजनी पब आरोप नगोल डेक जे एकव रँठी अनीक जन्मान डी। अनीक कावर्षे ३ सभ भेल डेक, ३ खरवि अहाँ नहि सुनल डी की? एतए अरौमे अहाँकेँ कलको शर्म नहि भेल ? देसबक रौगळ्कती कवारी एतए आएन डी ?”





बज्जी रीचहिमे ठैकनक, “एहिमे हिनकब कोणा दोष नहि छनि, अहाँ अखब हिनका पब शिका क बहन छी ।”

बज्जीक अ कहर मोनु मामा नहि स्नानथि । ओ रोजतहि जा बहन छनाह....

“अहीक काबणै बज्जीक भाग फुटि गेलैक । जँ अहाँ एतए आएँ तँ लोकसेद एहि आरोपकेँ साँट मारि जेत, एहिजेन अहाँ एतए कहियो नहि आएन कर । पाखजोएक जाति हमर शक कपौल अछि, ओकरे खुश थिकहुँ अहाँ । पाखजोक रमिज छी अहाँ । अही हमर रीचिदीक कावण थिकहुँ ।”

पाखजोक पगब खबखबरैए नागलैक । ओकरा किछुओ समममे नहि आरि बहन छलैक, दूदा धीले-धीले सत किछ समममे आरि गेलैक । ओकर रैषी हिरंगी-सग मालोत छनीह एहिजेन ओकर घबरना ओकरा पब अ आरोप नगौल छन । पाखजो एहि सँधमे किछ रोजए रना बहथि दूदा मोनु मामा ओकरा निकरि जएँरौक जेन कहल बहथि एहिजेन ओ रोज आरि गेन बहए । ओकरा माथमे चक्रब त बहन छलैक आ रूमागत बँहक जेना ओ फाँटि जेतैक । ओकरा दिमागमे मोनु मामा शिष्ट, कोणा मडि या जकाँ टैठ क बहन छलैक । “.....बज्जीक घबरना घबसँ रोज क देनकेक.....बज्जीकेँ अहीसँ रैषी भेन छैक..... पाखजोएक जाति हमर शक कपौल अछि..... पाखजोक रमिज छी अहाँ.....अहाँ एतएसाँ चलि जाउ ।”

“रौब टोरीस त्रैकक दुर्घटना त गेलैक ।”

“केकर ? त्रैक जागरब के छलैक ?”

“पाखजो !”

एकठा खनासी नीचा आरि लोक सतकेँ अ खरिबि देनकेक । सत किओ उँपब दिस दौडन । किछ गोष्टै त्रैकसँ गेन तँ किछ ओहिना दौडि पडन । बन्दा नदीक कडेब होगत एकठा घाँटीक रीचसँ जागत बँहक । बन्दाक एक दिस घाँटी बँहक आ दोसब दिस खदल ।

उँपबका बन्दासँ जागरना एकठा त्रैक नीचा खदलामे गिब गेन छलैक । त्रैकक पबखरि उँडि गेन बँहक जाहिमे पाखजो मावन गेन । एहण सतकेँ रूमागत छलैक । किछ लोक नीचा गेन । देखननि तँ अतिशय त्रैकक रँगनमे पाखजो पडन छन । ओकरा देहक कपड । फाँटि गेन बँहक आ सौसे देह लोटा गेन बँहक ।

पाखजो अण अतिशय त्रैककेँ देखनक । त्रैकक अगिना शीशा टूँटि गेन बँहक । लोहाक चदवा पुर्ण कपसँ त्रैकसँ गिचकि गेन बँहक । ओकरा देखि पाखजोक आथिमे लाव आरि गेलैक । पाखजो उँठन । त्रैकक सामने गेन आ ओहि पब अण हाथ हेलवनक । आरि ओहि त्रैक पब भगराणक कोणहुँ ह्याँठे नहि बँहक, दूदा त्रैकमे नगाउन गेन टाणनक माना एखनहुँ धरि बँहक जे कि पाखजो नगौल बँहक ।

पाखजो जखन ठाँठ त बहन छन तखन ओकरा काणमे रँहूत बस प्रम सत उँठि नागलैक । दुर्घटना कोणा भेलैक ? हम रीचि कोणा गेनहुँ ? एहि तबहक कतेको प्रममे ओ उँठनि-सग गेन ।



पाखलौ नीचेसँ बस्ताक एक दिस माड ी दिस आँख देखोनक । ओकरा कमीजक एकठाँ रौडका ठी धूँकड ी ओहि माड ीक रीट नैठकन बहेक । दुईदिनाक समाज त्रैकक दवरँज्जा अटावक खूजलैक आ ओ रौहव गिब गेन छन । ओतएसँ ओ सीधा माड ी पब गिब अँकि गेन, जालिसँ ओकर कमीज फाँटि गेलैक आ देह लोटा गेलैक । ओतएसँ ओ धीरे-धीरे नीटा गिबन, जखन कि ओकर साथी त्रैक गँहीवगव खदलामे गिब गेलैक ।

एतेक पौघ त्रैक अँठाक लोअगा रँगि गेन बहेक आ एकठाँ हाड-मांसक लोअक रँटि गेलैक । “पाखलौक भाग नीक बहेत तँ ओ रँटि गेन ।” लोअक सब एहल कहैत बहेक । कावण तकना उँतव जखन लोअकेँ जुरौँर नहि भेटैत छैक तँ ओ ओकरा अँगण भाग पब जोडि दैत छैक ।

पाखलौ केँ डागदबक ओहिठामसँ एनाक रौद कम्पनीक प्ररँज्जक दुईदिनाक जाँट करब सुबह केनक । प्ररँज्जक ओकरासँ रँहूत बाम प्रम केनकेक, झुदा ओ एकठाँ प्रमक जुरौँर नहि देनकेक । ओकरा दिमागमे दुईदिनाक रिषयमे किछुओ नहि बहेक । आँग भोले जे किछु भेन छलैक, ओकरा दिमागमे रँव-रँव रँह प्रम आरि बहन छलैक । अमनमे रँह प्रमक दुईदिनाक कावण छलैक । ओ भोले सोषु मामाक ओहिठामसँ आएन आ ओहि तनारमे त्रैक पब चटि गेन । त्रैक चनरँेत कान रँह घँषा ओकरा दिमागमे चलि बहन छलैक । बजनीक रँग भाव-रँहिक रँरँध बहिनो ओकरा पब अँ आरोप नागन छलैक । सोषु मामा ओकरा कहल बहथि, “एतएसँ निकलि जाड, आ कहिओ नहि आएँ !” “चलि जाड” अँ कहि ओकरा निकलि देन गेन छलैक । तखन सोषु मामाक बिश्रामे ओ किओ लै बहेक ? पाखलौ सोचि बहन छन । रँह रिटाव ओकरा दिमागमे ठीस मारि बहन छलैक आ ओ अचेतन अरन्धामे चलि गेन छलैक । ठीक ओहि कान अगिना मोड पब त्रैकक दुईदिनाक भ गेन बहेक । एखन धरि रँह रिटाव, रँह प्रम ओकरा दिमागकेँ मकनोमरि बहन छलैक ।

कम्पनीक प्ररँधक द्वारा पुँडन गेन सरानक जुरौँर हमा नहि द बहन छनिअँक एहिनो ओ लोअसा भ गेन आ ओहि लोअसा मे ओ हमार गान पब फाँटिफाँट दु-तीन थापड मारि रँसन ।

पाखलौक गान पब थापडक निमीष भ गेलैक । ओ अँगण गानकेँ हँसोतए नागन । तथापि ओकरा सोँसे देहमे भ बहन दर्द ओकरा ओतेक कष्ट नहि द बहन छलैक, झुदा भोवक घँषासँ जे ओकरा कवेजमे थार भेन बहेक ओ एखन धरि हरिषार बहेक ।

सात-आठ महीनासँ पाखलौक बरहाव देखि लोअकेँ बुँमाअक जे पाखलौ पागन भ गेन छैक । ओकर केश, दाढ ी आ मोँछ रँटि गेन छलैक आ ओहि दाँत्रमे ओकर झँह ब्रका गेन बहेक । ओकर साथ तँ मनकेते नहि बहेक । गान पिचकि गेन बहेक आ आँधि रँसि गेन बहेक । देखमे ओ रँहूत रिचिे नागि बहन छलैक । जँ कोला अँज्जल लोअ ओकरा देखि लैक तँ डरि जाअक ।

जालि दिस त्रैकक दुईदिनाक भेन छलैक ओहि दिस पाखलौ जँगन चलि गेन बहेक । ओ ओतहि चाबि-पाँट दिस रिबोनक आ रौदमे गाम घुबन । ओहि दिससँ ओ गाममे अँज्जोरौंगवीर तवहँ रौज्जए नागन आ रँगहि अँगण हाथ सेहो चिनरँेत बहेत छन । रीट-रीट मे अँगण आँधिकेँ सेहो रिचिे कपसँ छेँर-पौघ करैत बहेत छन । ओ दिसभरि घुमातहि बहेत छन । जँगन, भँर, मल्ल व, दोडँड, आदि ठाम घुमातहि बहेत छन आ कतहँ रँसि जाअत छन । नाबिषार, कँहव, आमाक गाँड सरँ पब चटैत



बैत छन आ कतहुँ दुब अगण बजबि गड़ौल बैत छन । लोक सभक करै बैक जे, “ओ रैतुत डबि गेल छैक ।” ओकरा कार्या केव देरटाव (एकरी आमो) गड़ौल लल छैक ।

मगाताव काजसँ अगणपहित बहरीक कावणै कसणी ओकरा लोकबीसँ निकालि देल बैक । मगुपि ओकर जतेको हिमरि निकलैत बैक से कसणी ओकरा द देल बैक । ओ पाग पाखलो ओहि दिन गामक रूठ-रूजुआ आ लषा लोकनिमे रौंष्टि देल छन । दोसब दिन धरि ओकरा नग खैरौ धरिक पाग नहि बहलैक । ओ अगण पौष्टिक जेरी उगणैक आ ओहि हितिये गाममे घुम्र नागन । ओ मात्र घुम्रतहि बैत छन । घुम्रेत कान ओकरा दिन-वातिक कोला पवराहि नहि बैत छलैक । एतेक धरि जे ओ रौद आ रैवखामे सेहो घुम्रते बैत छन । ओकरा घुम्रौक कोणहुँ सीमा नहि बैक ।

ओकर किछु मीत लोकनि ओकरा कहियो कान टाह-पाणि द दैत बैक । कहियो कान थोआ-पीआ सेहो दैत बैक, नहि तँ ओ बुखले बैत छन । एहि सभक रौरँजुद ओकर घुम्र-फिबरेँ रँल नहि भेल बैक । ओ कथला केगदी भौंष्टिये देखागक तँ कथलहुँ खेतक रौंल पव ।

ओ कहिओ ककरो भौंष्टिसँ नाबिबकेँ हाथ धरि नहि नगेलक । ककरो कोणहुँ कथु नहि देनक, एकबा सभक रौरँजुद लोक ओकरासँ डबए नागन छन । एतए धरि जे भौंष्टि-भौंष्टि लषामभकेँ ओकर माग, पाखलोक नाम न कए डवारि नागन छलैक ।

ओहि दिन रैवखा त बहन छलैक । पाखलो मोषु मामाक घब नगक पीपबक गाढक नीटा ठाठ छन । ओकरा देखि बजनी दौडकए ओकरा नगीट गेलीह ओकरा अगणा घब रँजा अगनीह ।

“सुनु दांज! एतए आँ, देखु अहाँक मामा आएन छथि ।”

बजनीक एतरी कहितहि सुनु घबसँ दौडलि अगनीह, दूदा पाखलोकें देखतहि डबि गेलीह ।

“अँ अहाँक मामा छथि ! हलका नग जाँ !” बजनी सुनुकेँ कहनथि । तखन पाखलोक रँजएना पव सुनु ओकरा नग गेलीह । पाखलो ओकरा गोदी मे उँठौक आ हेल नीटा बाधि देनकेक । सुनु हँसलीह । पाखलो सेहो हँसए नागन । दूनुक हँसी देखि बजनीकेँ नीक नागनलैक । पाखलो अगण फष्टनका पौष्टिक जेरीमे किछु ताकरीक थाम केनक दूदा ओकरा किछु नहि भौंष्टलैक । तखन ओ अगण दोसब पौष्टिक जेरीमे हाथ देनक आ ओहिसँ दू ठाँ आगना निकालि सुनुक हाथ पव बाधि देनक । रौदमे ओ सुनुक माथ पव अगण हाथ हेलनक, ओकरा गान पव चूमा केनक आ दूनाव-मनाव कबए नागन ।

“रिठु ! अहाँ एहि तबहक पगनपन नहि कवन कक, एहि तबहकेँ पगनपन कए अहाँ अगण की हानति रँग लल छी से कहिओ देखल छी ? अहाँक गान पिचकि गेल अछि आ आँधि धँसि गेल अछि ।” एतरी कहेत बजनीक आँधिये लाव आरि गेलैक । अँ देखि पाखलोक मोष सेहो पनीज गेलैक आ ओ रँजन-

“अहाँ कानि किएक बहन छी ?”

“नहि तँ ! हम कानि कहाँ बहन छी ? ओहो ! एखन धरि अहाँ ठाँ छी ? आँ रौट पव रँसु, हम तीतव जा बहन छी, पहिले अहाँकेँ किछु खुआएँ तखन हमसभ गप्प-सप्प कवरौ ।”



## VIDEHA

बज्जनी भोजन पबसय तीतव छनि गेलीह । पाखलौ स्रनुकेँ दूनाब कबए नागन । बज्जनी पाखलौक जेन भोजन पबसि रौहव आरि कहनीह, “छनु भोजन नागि गेल अछि ।” एतरी कहि ओ ओकब हाथ धुआरि नगनीह ।

एतरीहिमे दवरञ्जा पब किनको डौली देखा पड़लौक । दवरञ्जाक रौहव सोनु माया अगन पयबक जूता निकारि बहन छनारि । सोनु मायाकेँ देखि पाखलौ घबसँ भागन आ रहुत दुब धरि भागितहँ बहन ।

सोनु माया, बज्जनी आ स्रनु ओकबा देखितहि बहि गेल ।

पाखलौ आरि गाममे छोट-पेयक जेन हँसिक पात्र रँगि गेल छन । लषा सभक रंग आरि पेय लौक सभ सेहो पाखलौक मज्जाक उँड रँग नागन छन । लषा सभतँ ओकबा पाछुए नागि जागत छलौक । ओकबा पब पाखब हेलकैक, ओकबा ‘पागन पाखलौ कहि फटाकेँक । जखन पाखलौकेँ रहुत गोप्सा आरि जागत तँ ओ लषा सभ दिस आरि तनेव कए देखैक जाहिँ लषा सभ डरि कए भागि जागत ।

पाखलौ कनसाक चरुतवा पब रँगन छन । तखनि लषा सभक एकठा दन आरि धमकलै । सभठा लषा ओकबा नग जमा त गेल आ ‘पागन पाखलौ, ‘पागन पाखलौ कहि ओकबा करदारी नागन । एतरीहिमे ओ अगन माथ लोचरि सुबह क दैनक आ हेल जेव-जेवसँ हँसत रौजए नागन-

“हम पागन पाखलौ ! हा, हा, हा, हा..... हम पाखलौ नहि छी ! हम पागन छी ! पागन ! हा, हा, हा, हा..... ।”

“अहाँ पागलौ छी ओ पाखलौ सेहो छी ।” लषा सभ रौजए नागन । एकठा लषातँ ओकबा पब पाखब हेलकैक दैनकैक आ पछाति जा कए सभठा लषा सभ हँसा-गुँसा कबए नागन ।

“अहाँ पागन पाखलौ, पाखलौ, पाखलौ ।” पाखलौ ओकबा सभक दिस आरि तनेव कए देखनक आ “हम पाखलौ नहि, हम पाखलौ नहि” कहत अगन माथ ओहिठाम चरुतवा पब पठकए नागन किछु अणक रौद ओ रँहेशि भए ओतए गिन पड़न । तकव रौद ओतए जमा भेल लषा सभकेँ किओ भगा दैनकैक ।

दोसब दिसँ पाखलौ बसुा पब रौदे मे बहए नागन । अगन गोर देह, गुनारी केशमे कारिथ पोतए नागन । अगन कारी देहकेँ देखि ओ हँसए नागन आ बसुाँ आरि-जाएरनाकेँ कहए नागन- “देखु ! हमजँ अही सग रँगि गेलहुँ ल ? ”

अगना आगकेँ कारी कबराक जेन भवि-भवि दिस रौदमे ठाठ बहए नागन । कारिथ नगा कए कारी कएन गेल ओकब देह किछु दिसमे रँवंग भ गेलौक ओ हेल पहिल-सग देखाएँ नागन । ओ



## VIDEHA

अण्ड सभ्ठा गुनारी केने काँठ जेनक आ गुनारी ठकना त गेन । मोँछ आ दात्रीक संग ओ अण्ड आँखिक पिगणी सेहो काँठ जेनक । ओकर जेतको गुनारी केने छलैक ओ सभ्ठा काँठ जेनक जकरा कार्पोँ ओ आओरो रँदवंग नागए नागन । ओहि दिन साँमकेँ ओ एकठो आगक गाँठक नीटा जेतको सुखनका पात छलैक से सभ्ठा जमा केनक आ ओहिसे आगि नगा देनक । “हमव गोव टाम ज़बि जेरौक टाली आ हमवा कारी त जेरौक टाली ।” एतरी मोँटि ओ अण्ड फाँटन कपड । सहित आगिसे ठाँठ त गेन । ओकरा कपड ामे आगि वागि गेलैक । ओहि समय किओ आरि ओकरा आगिसँ रौहव धकेन देनकेँक आ आगि मिमा देनकेँक । ओहि आगिसे पाखलोक देहक किछ बोअगाँ नूनसि गेलैक । हाथ-पएव आ मुँहक टाम ज़बि गेलैक । देहमे हलका निकलि गेलैक आ सौँसे देह नान त गेलैक ।

अस्पतानमे जतए ओकरा बाखन गेन बँहक, ओतए ओ दु दिन ग्लितेनक । ज़हिणा ओकर मोण कल नीक भेलैक ओहिना ओ दोसबहिँ दिन अस्पतानक ड्रेसमे भागि गेन आ गाम आरि गेन । गामक लोककेँ अस्पतानक ड्रेसमे पाखलोक पागनपणक एकठो नर कप देखरौमे एलैक । ओ पहिणहिँ ज़काँ गाममे एमहव-ओमहव घुमए नागन ।

पातोल जंगनमे किछ स्रगीण आ किछ हरती सभ नकडि रौँडित छनीह । ओकरा सभकेँ देखि पाखलो ओतए गेन । ओहिसे शीमा सेहो छनीह । ओकरा देखि ओ शीव पावनक आ ओकरा नग गेन । शीमा डबि गेलीह आ पाँडु छँए नगलीह । पाखलो ओकरा ककरौक जेन कहनकेँक दूदा ओ ककनीह नहि भागए नगलीह । “ठहक, ठहक !” कहैत पाखलो ओकरा पाँडु दौडए नागन ।

दौड-दौड ओ ककन । ज़ोक्सँ टिकलैत शीमा गामक दिस भागलीह ।

“पागन पाखलो हरती सभक पाँडु पडन छैक ।” ज़ गप्प सौँसे शीवमे पसवि गेन ।

## बउ

तेसव दिन धरि हम ओहि फाँटक सँधमे मोँटि बहन छनहुँ । हम की केनहुँ ? किएक केनहुँ ? हमरा किछु नहि रूँम से आरि बहन छन । हम शीमाकेँ देखि ओकरा नग गेन छनहुँ । ओकरा आरौज नगेनहुँ । ठहक ! एहिसे हमरा किछ रौँनी खवाप नहि देखा बहन छन, दूदा आरौँ येँह गप्प हमरा सानि बहन छन । हम किएक ओकरा ककए कहनिधँक आ ओकरा पाँडु किएक दौडनिधँक ? एहि तबहक प्रम हमरा दियागमे रौँवि-रौँवि घुमि बहन छन ।

दूदा हँ...ओहि दिन खुर मोण नागन बहए । ओहि दिन शीमाक ओतए ज़ाएँ रार्थ त गेन बहनि । ओ हमवासँ रीयाह कवरौक जेन तैयाव नहि छनीह आ हमरा पाखलो कहैत छनीह, ओहि दूँकेँ हम हूँका टिकवरौक जेन रौँधा केनहुँ ! हमरा पागन कहैत छनीह ल ! शी ! शी ! ज़ सँ ठीक नहि । ओहि दिन ओकरा पयवसे काँठ गवि गेन हेतैक ! हम ज़ नीक नहि केनहुँ ।



## VIDEHA

बज्जीक घबरना बज्जीकेँ फेब अगणा घब न गेन डनाह । एहन लोक सभ रँजेत डनाह । हमरुँ एहन किछु सुनल बही । अ गप्प साँट डेक की ? येह ज्ञानरौक जेन आ बज्जीक मरिधमे पुडुरौक जेन हम शोमारकेँ कररौक जेन कहल बहिँक । शोमा हमर ज्ञान-पहिँटाक डनीह, झुदा हमरा द्वारा ठहक ! ठहक ! कररौक माले ओ किछु आव निकाजि जेनथि की ? आकि हम ओहिना हुँका ककए कहनिथि ? हमरा कोणा जरारै नहि भेटै बहन डन ।

जोरा जखन स्रुतव भेन बहक ओहि समय पाखजो लोकनि जँगनमे यत्र-तत्र घुका गेन बहए । तुखक कारणेँ ओ सभ जहव रना हन था-था कए मवि गेन डन । हमरुँ ओहिना मवरै की ? अ मोटि हम डवि गेनहुँ । हम द्रुद्रुमे पडि गेनहुँ आ हमरा मोनमे डव समा गेन ।

गाम जएरामँ हम डवि बहन डनहुँ । गाम जएरामे हमरा नाज नागि बहन डन । पाखजो हरती सभक पाछु भागि बहन डनेक । ओहो रूपेँ जकाँ भ गेनेक । लोक सभ एहन कहैत बहक । ओ सभ हमरा मवि देताह, हमरा मावताह आ जित्त गारि देताह । हमरा डोड कए आषएरना आरै ओहि गाममे किओ बहरो नहि केनेक । दादीतँ नहिए बहनाह आ गोरिनद तँ गामे नहि अरैत डनाह । ओ तँ गामक जेन रौहरी लोक भ कए बहि गेनाह अछि, आ हम एकठाँ एमगव पाखजो ।

गाम गेनहुँ तँ गामक लषा सभ हमरा पाखजो, पाखजो, पागन पाखजो कहि कए कट्टीताह । सभ किओ हमरा पाखजोएक नजबिसँ देखैत बहए । हम ओकरा सभ जकाँ देखरौक जेन की नहि केनहुँ । काबी हेरौक जेन बौदमे ठाठ बहनहुँ आ गुनारी दाढी-मोडि काष्टि जेनहुँ । अतमे हफाका हेरौ धरि, गार हेरौ धरि हम अगण देह जवरेत बहनहुँ । देहक टाम जरि गेन आ गारसँ खुल रँहि गेन । रासनाक कारणेँ जन्म जेरएरना पाखजेष तँ आरै हमरा देहसँ चलिओ गेन हेत । कंकान पव ठाठ भेन एहि देहकेँ अ धवती मन्तारि लल अछि ।

हमर पहिबुक कप रँदनि गेन अछि । सौँसे देह काबी भ गेन अछि । लोकक कप बग आ हमर कप बगमे आरै कोणा हबक नहि बहि गेन अछि । हम एतहि जन्मनहुँ, पैघ भेनहुँ आ हिनके सभक रीट बहनहुँ । हम एतुके लोक सभमे सँ एक डी । एहि माष्टिक मन्कावमे पननहुँ, रँठनहुँ, तखन हम पाखजो कोणा ?

हमर माग हमर नाम 'रिठु' बखल डनीह ! ओ हमरा रिठुए कहि रँजरेत डनीह । हमर नाम रिठु थिक । एहि नामसँ किनकहुँ तँ रँजएरौक टालि ल ? आ जँ हमरा किओ रिठु कहि नहि रँजरेत अछि तँ की हम रिठु नहि भेनहुँ ? हम रिठु डी ! हम रिठुए डी !

बज्जीक शोब पावरै हम एखन सुनि बहन डनहुँ । हमर काष, मोन आ हमर सौँसे मरेदनाकेँ हम रिठु डी, अ बुन मे आरि बहन डन ।

जँगनक बस्ता पाव करैत हम पहाडि पव चट्टि गेनहुँ । ओहि पहाडिसँ नीचाँ बज्जीक मासुव देखागत बहक ।

हम जखन पहाडिसँ नीचाँ उतरि बहन डनहुँ तखन हमरा सुवण आएन । बज्जीक घबरना ओकरा पव आरोप नगा ओकरा घबसँ रौहव निकाजि देल बहक आ एक रँवखक रौद घब न गेन बहक । एखन जँ हम बज्जीसँ भेटै केनहुँ तँ ओकर घबरना फेब ओकरा घबसँ निकाजि देतेक । हमरा एहन नागन आ मगहि एकठाँ मष्टका सेने । हम ओतहि ठाठ बहनहुँ ।



**VIDEHA**

हमर एक मोष कहैत छन, जे हम ओतए गेनहूँ तँ नीक नहि हैत, आ दोसर मोष हमरा आंगु दिस घीटि बहन छन। बजनीक घबरना ओकरा घब न जा कए नीक लेल बहए। हमरा डुपव नगाउन गेन दोयारोपनी आरि नहि बहन। लोकक नजरिमे आरि हम पाक-साह छनहूँ। ओहो! नीके भेलैक। हमरा दियोगसँ द्रुद्र हष्ट गेन। तगार चलि गेन। आरि हमरा आजादी महसूस भ बहन छन। आरि हम बजनी आ सुनुसँ भेष्ट कवरि। बजनी हमरा भाग मालीत छथि आ हम ओकरा रैहिन। आ गप्प हम ओकरा घबरनासँ कहलैक। रौदमे हम निर्णय लेनहूँ आ पहाड़ ी दए नीटाँ उतबए नागनहूँ।

हम पहाड़ ीसँ उतरि हानी-हानी जा बहन छनहूँ। ओतए फळराडाक चबराह लेषा सभ हमरा देखनक। “येह देखु पाखलो! येह देखु पाखलो! पाखलो!” ओकरा सभक आ शौर सुनि हम डरि गेनहूँ आ काँपए नागनहूँ ओ पहाड़ ीक ठनासँ दोड़ए नागनहूँ। पाखलो, पाखलो, एहि तबह आरौज पाहुँसँ आरि बहन छन। हम दोड़-त-दोड़-त पहाड़क सुनसाण घाँमे पहुँटि गेनहूँ।

साँसुक पहव ओहि घाँमे समुटा फेर रँडु मलाकम बुंमागत बहैक। दूदा हम ओहि दिस रेंसी धाण नहि देनहूँ। घाँमे पाव कए हम कावणे गामक सीमाण पव पहुँचनहूँ। सीमाणक नग एकठा रँडका ठाँ मीन बहैक आ ओहि मीन नग एकठा पोखरि सेहो बहैक। बडुा चलेत कान ओहि पोखरिमे किडु गिबराक आरौज एलैक। हम पोखरिमे नग गेनहूँ। एक ठाम पाणिमे घुबमी होगत बहैक आ पाणिक बुंनरुना आरि बहन छलैक। चबराह आकि आण किओ ओहि पोखरिमे किडु फेकल सेहो यैह मणि हम आंगु-पाहुँ देखए नागनहूँ, दूदा ओतए किओ नहि छन। हम पोखरि कातसँ कसरीक फुनक एकठा कोठ्री तोड़नहूँ आ बजनीक घब दिस ओकरासँ भेष्ट कवरि लेन हानी-हानी चए नागनहूँ।

दूधहावि साँसकेँ हम बजनीक गाममे पयव बाखनहूँ। ओतुका लोक सभ घबसँ रौहव आरि हमरा देखए नागन। हम बजनीक घब नग पहुँटि गेनहूँ। ओतए देहवीएसँ आरौज देनिधक दूदा घबसँ कोला उतव नहि आएन। हम ओतएसँ रँहवएनहूँ, देखनहूँ घबसँ रौहव सुनु कानि बहन छनीह। हम ओकरा आरौज नगेनिधक आ गोदीमे उठा लेनिधक। ओ हिटुकी-हिटुकी कानि बहन छनीह। हम ओकरा टुंग कवरि प्रयास लेनहूँ। अण हाथक कसरीक फुनक कोठ्री ओकरा हाथमे द देनिधक। हम ओकरासँ पुडुनिधक-“माए कतए गेन छथि ?”

“हम नहि जलैत छी।”

“हूका रँहूत माबल छथि।”

“के, कथन ?”

“रौरी।”

सुनुक कहरि सुनि हमरा कले अजगत-सण नागन। वाति भ गेन बहैक। पड़ सक दु-तीन गोष्टे हमरा नग अनाह। पहिल तँ ओ लोकनि हमरासँ पुडुताडु लेननि आ फेव बजनीक खरि देननि। “जाहि दिससँ बजनीक घबरना ओकरा रौगक ओहिठामसँ आणल छन, ओहि दिससँ शेरि पीरि-पीरि



## VIDEHA

कए ओकवा माक-पीठए नागन छन । तकवा रौद तँ मित बाति ओकव घबरना बजनीसँ मगड । करैक आ माकैक । दु दिन पहिनि ओ ओकवा घबसँ निकानि देल बहक आ ताहि दिनसँ ओ घबक रौदले देहवी पव बहि बहन छनीह । ”

सुनु हमरा गोदिअमे सूति गेन छनीह । रौत बाति तँ गेन बहक आ बजनी एखन धरि आपस बहि आएन छनीह ।

बजनी शोधबिमे कुदि अपन ज्ञान द देल छनि, ज्ञा गप्प जँ हमरा बजनीसँ अरौत कान पता नागि जएते तँ हम निश्चये हुनका रौटा जेतिक । किओ शोधबिमे पाखर फेकल हेतैक एहिजेन पानिमे रूँनरूँना आरि बहन छलीक, हम यैह रूँमल छनहूँ । ओहि समय ओहि शोधबिमे एहन द्वादरिदावक मूँ घुकाएन बहक, ज्ञा हमरा पता बहि छन ।

बजनीक घबरना ओकवा काँदोळे गामसँ आपस अगल बहक, द्वाद किछु दिनक पश्चात् ओ फेव ओकवा पव रौह आरोप नगोल बहक । बजनीकेँ माक-पीठए नागन छलीक आ एकदिन ओकवा दगि देल बहक । ओ ओकवा जौरौते मारि देरौँ चाहत बहक । ओहिदिन, “गाथजो हराती सबक पाडु नागन छैक । ” हमरा मरौधमे ओकवा ज्ञा खरि छैठन बहक । ओहि दिनसँ ओ बजनीकेँ देहवीक रौदले बाथए नागन बहक ।

बजनी तंग आरि गेन छनीह आ ओहि समय ओ मोहारतीक त्रुँगाव केनक आ आमेहला कवए छनि गेनीह ।

ओहि शोधबिसँ हम जे कसवीक फुन निकाल छनहूँ से रासुरमे ओ कसवीक फुनक कोठी बहि अगित बजनीक थोषामे नगाओन गेन घबक रौँटा मेँ फुनन मोगवाक कनी बहक । यादक जेन महेंद, सुगङ्गित ।

## दम

बजनीक याद मेँ हमरा आँथिमे लाव आरि गेन छन आ हम ओहि समय रौह शोधि बहन छनहूँ, एहि सब यादसँ हमरा मोषमे ओ सब छि उँभरि कए आरि बहन छन । हम गाथजो, एहि माँक मर्यावमे पनन-रौठन रिठुँ छनहूँ । एहि माँक सरुँत छनहूँ ।

रौत कानसँ आकाशमे कावी-कावी मेघ घुमरि बहन बहक । रिजजोकाक संग गवज तँ बहन छलीक आ रौवथा मेहो जेन बहक, जकवा कावणेँ नान माँक सुगङ्गि टाक दिन पमवि बहन बहक ।

मिगिसवा शुक हेरौमे एखन पन्दर दिन रौँकी बहक । मिगिसवाक रौवथा शुक जेनाक पश्चात् गाममे खेती-रौवीक काज आवँत तँ जागत बहक । एहि सान मोषु मारुँक खेत पवती बहि जेतैक, हमरा एहि रौतक डव बहए । दु महीना पहिल मोषु मारुँकेँ नकरौँ मारि देल बहक । ओकव दहिना हाथ रौँकाम तँ गेन बहक, जारिसँ हाथ बहि हिना सकैत छनह । अपन नातिनसँ मिनरौक जेन आ ओकवा देखरौक जेन ओ ओछु स्थितिमे गोरिन्दक घब आएन छनह । हुनक माथक केशे उँकर तँ





## VIDEHA

गोन बहनि आ देह रूत कमजोव । एतए आरि ओ सुनुसँ भेँठे केननि । सुनुसँ गप्प केननि, ऋदा हमवासँ रिना गप्प केले ओ आगम चलि गेनाह । जूँ ओ रबखामे भोजि के काज कबताह तँ निश्चिते हुनक बोग आव रँठि जेतनि आ ओहूना आरि हुनकासँ कोला काज कहाँ होगत छननि । ओकरा एहन बुंमेलेक । आ तखन ओ खेतमे हाथ रँठेरौक जेन कम्पिणी योमीक माधामे खरिबि भेजेनक । हमरा बुंमाएन जे मोषु मामाक खेत पवती बहि जेतके, ऋदा जाधबि हमरा देहमे जाण अछि ताधबि कोला डव बहि ।

भोवसँ दुपहर भ गोन बहेक । हम घबमे जतए रौसन बनी ओतहि एकक रौद एक याद दोहवा बहन छनहुँ । आरि सतथी याद खतम भ गोन, हमरा एहन नागन आ ओहि सुन देवान जाहिपव टिकनि माष्टिसँ ठोबन गोन बहेक ओकरा एकठक देखेत बनी । हम घबक टाक दिस नजबि दौड़ नहुँ, तखन हमरा कम्पिणी योमीक ओहिठाम गोन सुनुक याद आरि गोन । आथिक समझ ओकर निष्पाप, अणजान आ रूत सुनब मुति ठाठ भ गोन । ओकर नहसुनियाँ आथिसँ सुखद भार प्रकठ भ बहन छलक । तखन ओकर एतए बहि हेरौक रौरौजुदो हमरा ओकरा माथ पव हाथ हेबरौक आ ओकर चूना जेरौक गछा भेन । एतरेहिमे दरौजा खूजरीक आरौज भेन । देखनहुँ तँ सुनु घब आरि गोन छनीह । हमरा देखि ओकर खुशी दुगुणा भ गेलक । ओ दौड़ि कए एनीह आ जाधबि हम ओकरा गोदने लेतिथक ताधबि ओ 'मामा' कहि कए हमरा शौर पावनक आ हमरा पयबसँ निगष्टि गेलीह ।

## हव एक लोक आ माष्टिक कथा

'पाखलो' उपन्यासकेँ दुगए तीन रबखामे खाति भेँठि गोन बहेक । 'बाह्रम'त द्वारा एकवा उपन्यासिक प्रतिस्पर्धामे प्रबन्धक भेँठलक । कना अकादमीक प्रबन्धक सेहो भेँठलक । 'पाखलो' उपन्यास पण्डी आकशिणीसँ मराठी भाषामे नरानाथ सुकपमे प्रसारित भेन । एहि तबहेँ मराठी साहित्यमे सेहो पाखलो अण उपस्थिति दर्ज करौनक ।

लोकणी साहित्यमे 'पाखलो' अण रिशिष्ट, शीलीक कावणें ठाठ बहन । तुकाराम शैष्टिक 'पाखलो' क जड़ि आगक गाढ सदनी गोरक माष्टिक गहवाङ्ग धरि पहुँचि गोन । एहि माष्टिक सुगंध 'पाखलोक' सौमे जीरणमे सुवतित भ बहन अछि । ऋदा 'पाखलो' सँ शीलकेँ जन्मन एहि रँटकेँ अणसँ दुर बखेत अछि । ओ अणना-आपसँ सेहो साझाकोव बहि क सकैत अछि । यैह तनार, यैह राथा पाखलोक हृदयमे घब रँना बहन अछि आ एहि राथसँ 'पाखलो' उपन्यासक जन्म भेन ।

लोकणी साहित्यमे 'पाखलोक' कथा एकठा नर आ अन्तु रिषय न के आएन अछि । एहि उपन्यास रिषय जतेक नर अछि ततरेँ योमिक । पाखलोक रौजसँ गोरक एक सामान्य स्त्रीक गर्भसँ पलिकए गोरक माष्टिक संस्कारकेँ अणसँ जेन तडपि बहन अछि । पाखलोक कण, गुनारी केशी, नहसुनियाँ आथि, नानी गोवाय अछि, ऋदा ओकरा पव जे संस्कार पछन छन ओ गोरक माष्टिक, हिन्दुक, शीलीक, रिठुक छन ।





एहि तबहक राक्यमे भाषाशैली रूढत सुन्दर भ गेल अछि । लेखकक ज्ञ भाषा शैली प्रसंगक अग्रसारै मोड़ लेबैक कारणाँ प्रसंगक सौंदर्य रूढाँ गेल अछि ।

पाखजो एहि उपन्यासक नायक अछि । एहि रात्रिब्रह्मक टाक दिस अग्र पात्र सभ अछि, सोषु, दान्द, मोनी, बज्जनी, आजेस, गोरिन्द, सुनु ज्ञ सभटाँ द्वितीयक पात्र छथि । उपन्यासमे नायकक चरित्र-चित्रण रूढत नीक ठंगे कएल गेल अछि । अग्र दृश्यसँ निकलन राधा, लेदनाक महारेल ओ ज़ीरि बहन अछि । ओकरा मेष्टएराक लेल ओ संघर्ष करैत अछि । यैह पाखजोक ज़ीरन थिक । ज़ अग्र राधामे नायक ज़डतो बहन अछि तथापि ओ ओहि परिवारमे नहि बहैत अछि । केगदी भूँमे नाकियर तोड़राक लेल रैह आगु रूँटैत अछि । हिन्दू आ ज़माजक रीट लेल नगड ाकेँ रैह सुनमरैत अछि, दूदा ओ अग्रन दर्द नहि रिसवि सकन । ओकरा रूँमागत टैक- “हम नहि तँ ज़माज बली, आ ले हिन्दू, एहिलेन हमरा जोडाँ देन गेल की ? हमर सर्वेध दुनुसँ अछि, एहिलेन हमरा ओ लोकनि नहि मानवनि की ? ” अग्रन अत्रिब्र ताकरना ज्ञ पाखजो सोषु मामाक रूँटीकेँ अग्रन रूँहिन रूँमि मिलेह करैत अछि, दूदा ओहि मिलेहकेँ बज्जनीक अनारा किओ नहि रूँमि सकन अछि । ज़ाहिसँ ओकर राधा आओरो तीव्र भ जागत अछि । पाखजोक महारादशो देखएराक लेल पाखजोक सली भारणा रात्र कबरक लेल एतए लेखककेँ खूँ अरसब भेँठन छनि ।

दान्दी एतए समाजक एकटा रिशिष्ट, रात्रि छथि । पाखजोककेँ ज्ञ गाम नहि अग्रलोकक, एकवा रौरूजुद दान्दी ओकरा अग्रन रूँटी गोरिन्दक सदृश मिलेह देनक । ओकरा लोकबी पब नगोनक । रैयत लोकनि पब लेल अवाटावकेँ मेष्टएराक लेल ओ महारा भविक केँद कठनक ।

सोषु मामा सेहो पाखजोसँ मिलेह करैत छथि दूदा अग्रन रूँटीक खातिर ओ पाखजोककेँ भगा दैत छथि । आन लोक ज़काँ आ बज्जनीक पति ज़काँ ओहो पाखजो पब आरोप नगरैत अछि । सोषु मामाक चरित्र उपन्यासमे अग्रनाक रौद ओकर रात्रिब्र स्पष्ट, नहि भ सकलक । ओहिना मोनीक रात्रिब्र चरित्र ज़ाहि ठंगे हेराक चली से नहि भ सकन । ओकरा सुनगामे बज्जनीक रात्रिब्र नीक ज़काँ उँभवि कए आन अछि । गोरिन्द रूँहिमाण, होशियाव, आ तन्नूकानी अछि, जे पाखजो सुन कहैत अछि-“महबथ ज़यक संगहि मूँ सेहो अग्रना संगहि आनल अछि..... धवती हो, ज़न हो रा आकाश, सभरुँय मूँ निश्चित अछि । ” एहन तन्नूकानक मोड़, कहरना गोरिन्द पाठकेँ नहि पटैत अछि । हमरा ज्ञ तन्नूकान हमर आज़ी देल बहथि, एहन स्पष्टीकवाँ ज़ गोरिन्दक दूँसँ भेजो अछि तथापि लक्षणमे गोरिन्द एतेक तन्नूकानक गप्प क सकैत अछि से कल अजगृत नहोत अछि, आ गोरिन्द एकटा रूँजूआ सन रूँमागत अछि । ओ तन्नूकानी आ रूँहिमाण होगतहुँ एकटा ज़माज हरतीसँ रीयाह क लेत अछि, आ अग्रन गाम जोडाँ दैत अछि । भावतमे बहिकए पाग नहि कमा सकैत अछि एहिलेन आजेस दुँरुँग चलि जागत अछि, दूदा पाखजो एहिगामक संकृति, माँसँ टिपकन बहैत अछि । उपन्यासक एकटा गाम एहि उपन्यासक रात्रिब्र भ गेल अछि । गोरक माँसक रिशेषता एहि गाममे देखागत अछि । प्रप्रति सौंदर्यक चरित्र रूँढत नीक ज़काँ दर्शाँन गेल अछि ।

बज्जनीकेँ ‘पाखजोसंग नडकी होगत टैक । गुरारी केँ, नहनुनियाँ आँथि, गोव चाम । रासुरमे तँ ज्ञ नडकी बज्जनीकेँ ओकरा अग्रन पतिसँ होगत टैक तथापि ओ नडकी देख मे पाखजो-संग रूँमागत अछि एहिलेन ज्ञ पाखजोक सैदागशि टैक, ज्ञ आरोप ओकर पति ओकरा पब नगरैत टैक । बज्जनीकेँ पाखजोसँ नडकी हेराक कारणाँ ओकरा मोनमे पाखजोक प्रति मोह्यत प्रेम भ सकैत अछि । एहि महारादशोक कारणाँ बज्जनीकेँ पाखजो सन नडकी हेराक संभारणा देख मे आरि बहन अछि ।



## VIDEHA

पाखलौ गोरक माष्टक अछि । ह्दा एकवा पत्रि योणमे एहन शिका होगत अछि जे 'पाखलौक सँरिध कतहु मवाठी साहित्यमे टि.त्रय, खालानकवक 'चाणी' उग्याससँ तँ नहि अछि ? ह्दा 'पाखलौक रिशिष्टता 'चाणी' मे नहि अछि ।

भुतकान आ रतिमान कानक स्पर्श एहि उग्यासमे अछि । कथानकक परिधि पूवा कवरौमे दूनुक भूमिका अछि । एकठा बरिद दिन सतठी प्रवाण सवण एकठा गवज आ चमकक सँग खतम भ जागत अछि । ओहिमे पाखलौ अपन पहिचान तान नहोत अछि । ह्येव पाखलौ अपन जनससँ नए आंगवरिक कथा अगना योणमे सवण करैत अछि । दूगहव भ जागत अछि । सुनु पाखलौकेँ 'मामा' कहि ओकव गयव पकडि लेत अछि । कथानक केव परिधि पूवा भ जागत अछि । रतिमान कानसँ भुतकानमे जा कए 'पाखलौ' ह्येव रतिमानमे आरि जागत अछि । उग्यासक प्राकप प्रश्निक योगा अछि ।

उग्यासक हलेक अध्यायक अपन महत्रु डैक । हलेक अध्यायक शुकथात आ रिशेय कर्पे अत कनामेक अछि । गीटाँक उदाहरण देखु-

“नहि अहाँ पाखलौ थिकहुँ ! पाखलौ शीमारकेँ किडु करौक लेन हूँ खोतनहि डन आकि ओ ओतसँ चलि देनीह । पाखलौक योण तँ रूँमे जे नागहणी सँ भवन लेगिस्ताणक सदृशे भ गेलोक ।”

### अध्याय चारि

“एहि गाममे हमर परिवेय हकत एतरी अछि जे हमर नाम पाखलौ थिक, हमर जाति पाखलौ थिक, आ हमर धर्म सेहो पाखलौ थिक ।”

### अध्याय पाँच

“बजगीकेँ गोव वंग पसिल डैक । ओकवा चन्द्रमाक एहि जामेना-सग रैठी होमक चाली... काजव नगएनाक रौद कावी आँथि राजी ओकवहि सग सुनवि रैठी होमक चाली । पूर्णिमाक जामेना टाकदिस पसवव बहेक आ जेना नहवक पाणि रँहैत डैक तहिना ओकवा बज्जामे चन्द्रमा अपन जामेना पमावले डलोक ।”

### अध्याय आठ

“पाखलौक गान पव थागडक निशान भ गेलोक । ओ अपन गानकेँ हँसोतए नागन । तथापि ओकवा सौँसे देहमे भ बहन दर्द ओकवा ओतेक कष्ट नहि द बहन डलोक, ह्दा भोवक घट्टनसँ जे ओकवा कवेजमे यार भेन बहेक ओ एखन धरि हवियव बहेक ।”



## अध्याय

### आठ

“ओहि सौथकिसे हम जे कसबीक फुल निकाले छुनहँ से रात्रुरमे ओ कसबीक फुलक कोठी नहि अणित्त वजनीक थोपाये मगाओन गोन घबक रँहोटा से फुलन मोगवाक कनी बहेक। यादक जेन महेश्वर, स्वर्गगत।”

### अध्याय नव

“ओ दोउरि कए एनीह आ जाधरि हम ओकरा सोनी जेतिअक ताधरि ओ “माया” कहि कए हमरा सोव पावनक आ हमरा पयबसँ निगष्टि सोनीह।”

### अध्याय दस

हलेक अध्यायक एहि तबहक कनामेक अंत छैक। हलेक अध्यायक अंतमे उगनासक अंत भ सकैत अछि। ए उगनास एतेक कनामेक अछि। सोराक संरतवताक पार्श्वसँ ए कथा बंग आनीत अछि। स्वतंत्रता जेठसँ पूर्ति शुक भेल ए कथा स्वतंत्रताक पश्चातो चलैत बहेत अछि। हदा उगनासमे स्वतंत्रताक रियग जतेक एरौक चाली, से नहि आरि सकन अछि। हदा एहि कारणे एहि उगनासमे बाधा आरि गेल छैक, से नहि छैक। ओहि समयक तीव्र स्वतंत्रता आन्दोलनक पदचिह्न ज उगनासमे अरिठेक तँ एकव पृष्ठभूमि आरिठेक जँछतेक।

कार्यो टिफ जंगनमे शोनीक रँगाकोव करैत अछि, बाँदमे रँहूत दिसक बाँद, पाखलोक जगक बाँदो ओ शोनीसँ जेठ करैत अछि। रँगा रँतोल ओकरा मोगमे शोनीक प्रति मिलल जाणि जागत छैक आ रँगाकोवक तीव्रता कम भ जागत छैक। कार्यो टिफक ए प्रगति पाठककेँ उधेडरुंगमे डालि दैत छैक। .....कार्यो टिफकेँ रँव-रँव शोनीक ओतए देखि लोकसभ, “शोनीक भडू आ।” कहैत छैक आ शोनीक संरंधमे-“ओ पाखलोक केँ अगना घबमे बाधि रंधा स्वह क देल छैक रा अगन नर दुनियाँ रँमा लेल अछि ?” कहैत छैक। रँगाकोवक तीव्रता कम कए जेखक पाठककेँ की कए चाहैत छथि ? ए रँममे नहि अरैत अछि। पाखलोक ‘रिठू’ एकरेव कहैत छैक-“ ओ एकठा पतिव्रता नारी छनीह” हदा एकरा कोना माल नहि निकलैत अछि।

एहि तबहक किछ दोष एहि उगनासमे अछि, हदा ए सुझा दृष्टिँ देख रँगा नजरिमे नहि अरैत अछि।

पाखलोक उगनास मात्र पाखलोक कथा नहि थिक। एकठा माष्टिक कथा थिक। हलेक लोकक, हलेक माष्टिक कथा थिक। एहन कथा गतिहास रँतरैत अछि। हलेक लोककेँ गछानक कपमे जरीरन रँतएरौक कान ओकरा अगन घब, अगन लोक, अगन समाजक आरथकता होगत छैक। अगन संस्कृतियोक आरथकता होगत छैक। जँ ए सभ ओकरा नहि जेठैत छैक आकि ओकरा एहि सभसँ दूब बाधि देन जागत छैक तखन ‘पाखलोक उदय भ जागत छैक।

मोगक ए भारणा, रँदना आ राथा मात्र सोराक संस्कृतिमे उगजन एकठा पाखलोक लोकक नहि थिक, अणित्त सभ लोकक कथा थिक। करन रातारका ओ संदर्भ रँदनि जागत छैक। मून भारणा



## VIDEHA

बैत तैक 'रिठु' रैनि कए ज़रौक । सुन, कान आ मर्यादा एहि उपग्यासमे बहि अछि । एहिमे राउ कएन गेन भारणा, हलक लोकक अर्जत कथा थिक, रेलना थिक । लोक सभमे सँ हलक 'पाखला' 'रिठु' रैनि कए ज़रौक जेन संघर्ष करैत अछि ।

(लोकण ठागस, दिरानी अंक, 1981 मे प्रकाशित आलेखक अणि, अशोक मल्लभकव)

ए वचनपव अणन मतरा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव पठाउ ।

बानाशा प्रते

### बैत लोकनि द्वावा स्वकीय श्लोक

१. प्रतः कान अर्जतद्वर्त (सुर्योदयक एक घंटा पहिल) सरप्रथम अणन दू हाथ देखरौक चाली, आ ज़ श्लोक रैजरौक चाली ।

कवाग्रे रसते नक्षत्राः कवमल्ल सबस्रती ।

कवमुले स्थितो अर्जा प्रभाते कवदर्शणम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्रा रैसत छथि, कवक मध्यमे सबस्रती, कवक मुनमे अर्जा स्थित छथि । तौबमे तहि द्वावे कवक दर्शण कवरौक थीक ।

२. संध्या कान दीप जेसरौक कान-

दीपमुले स्थितो अर्जा दीपमल्ल जलार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकतः संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे अर्जा, दीपक मध्यभागमे जलार्दन (रिष्णु) आ २ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतरीक कान-

वार्ग कर्ण हनुमन्तु रैणतेर्य बृकोदवम् ।

शयल यः सारैर्यै दूःस्वप्रसुशु नष्टति ॥



## VIDEHA

जे सत दिन स्वतंत्रासँ पहिल बाग, कर्मावस्त्रासँ, हनुमान्, गकड आरं तीमक साका करैत छथि, हनुकव दूःस्वप्न नष्ट भऽ जगत छहि ।

४. नहरौक समय-

गर्भ च यद्गले टैर गोदारवि सब्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जजेरसिन् सन्निधि करु ॥

हे गर्गा, यद्गला, गोदारवी, सब्रती, नर्मदा, सिङ्गु आरं कारेवी धार । एहि जनमे अणन साक्षिधा दिख ।

३. उतुवै यमद्वन्द्वश्च हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रथे तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उतुवमे आरं हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अञ्चि आरं उतुका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रौपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।

पशुकं वा सवेक्षितं महापातकनाशकम् ॥

जे सत दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तावा आरं मन्दादरी, एहि पाँट सङ्गी-सत्रीक साका करैत छथि, हनुकव सत पाप नष्ट भऽ जगत छहि ।

१. अश्विथोमा रैजिर्यासो हनुमन्श्च रितीयाः ।

स्रपः पवश्वामश्च सन्तते चिबङ्गीरिणः ॥

अश्विथोमा, रैजि, र्यास, हनुमान्, रितीया, स्रपाचार्य आरं पवश्वाम- ङा सात ठी चिबङ्गीरी कहलैत छथि ।

+साते भरतु स्रणीता देरी शिखर रासिणी

उग्रेश तपसा नृप्या यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः सारु सतामन्त्रु प्रसादान्तु धूर्जठैः

जाह्नरीहेशनेथेर यन्त्रुषि शिषिणः कना ॥

९. रौजोऽहं जगदणन्द ष ये रौजा सब्रती ।

अपूर्णे पंचमे रथे र्प्यासि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाहित मन्त्रेणुक्त यजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ र्कृष्णवन्धु प्रजापतिवन्द्यः । र्कृतोक्तता देवताः । सुवाङ्कृत्युन्दः । यद्गजः सुवः ॥







**VIDEHA**

सन्धि:-घोड़ ।

पुवञ्चि-र्योरा- पुवञ्चि- रारलावकेँ धाका कवए रौनी र्योरा-रनी

जिञ्चु-शेनुकेँ जीतए रौना

वपेञ्चा:-वथ पव हिव

सन्भेयो-उत्तम सन्भामे

हराञ्च-हरा जेहन

यञ्जमानञ्च-बाजाक बाजामे

रीनो-शेनुकेँ पवाजित कवएरौना

निका-मे-निका-मे-निश्चयशकत कार्यमे

न:-हमर सन्भक

पञ्चन्या-मेघ

रयन्तु-रया होए

हनरवा-उत्तम हन रौना

उषय:-उषयि:

पञ्चन्या- पाकए

योगेञ्चमो-अनञ्च नञ्च करौक हेतु कएन जेन योगक बन्ना

न:-हमरा सन्भक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभिथक अञ्चुराद- हे अञ्चुरा, हमर बाजामे अञ्चुरा नीक धार्मिक रिद्या रौना, बाजन्च-रीव,तीवदाज, दुध दए रौनी गाय, दौगय रौना जन्चु, उगुमी नारी होथि । पञ्चन्या आरञ्चकता पडना पव रया देथि, हन देन रौना गाड पाकए, हम सन्भ संपत्ति अञ्चित/सवञ्चित कवी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचनानेखन-



**VIDEHA**

ग्लिशिकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-ग्लिशि- प्रोजेक्टके आगु रेट डि, अपन सुमार आ योगदान अ-  
मेन द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाई ।

**१.भावत आ लपौवक मैथिली भाषा-ऐतनातिक लोकनि द्वारा रैनाउव मनक गेवी आ २.मैथिलीमे भाषा  
सम्पादन पाठक्रम**

**१.लपौव आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतनातिक लोकनि द्वारा रैनाउव मनक गेवी**

**१.१. लपौवक मैथिली भाषा ऐतनातिक लोकनि द्वारा रैनाउव मनक उँटाका आ लेखन गेवी**

(भाषाशास्त्री डा. बागारतार यादवक धाकाकेँ पूर्ण कर्गसँ सञ्च नऽ निर्धारित)

**मैथिलीमे उँटाका तथा लेखन**

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावक: पञ्चमाक्षरवाञ्छात ७, ए, ए, ण, ष एरि म अरैत अछि । संकृत भाषाक अक्षराव  
शिष्टक अञ्चमे जाहि रञ्जक अक्षर बहैत अछि ओही रञ्जक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अक्ष (क रञ्जक बहुरीक कावणे अञ्चमे ७ आएन अछि । )

पञ्च (च रञ्जक बहुरीक कावणे अञ्चमे ए आएन अछि । )

खञ्च (छ रञ्जक बहुरीक कावणे अञ्चमे ण आएन अछि । )

सञ्चि (त रञ्जक बहुरीक कावणे अञ्चमे ष आएन अछि । )

खञ्च (प रञ्जक बहुरीक कावणे अञ्चमे म आएन अछि । )

उँपर्याङ्क रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अधिकशि जगहपब अक्षरावक  
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पच, खञ्च, सचि, खञ्च आदि । बाकवणरिद पञ्चित गोरिन्द नाक  
कहरि छनि जे करञ्च, चरञ्च आ छरञ्चसँ पुरि अक्षराव लिखन जाए तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पुरि पञ्चमाक्षर  
लिखन जाए । जेना- अक, चकन, अँडा, अञ्च तथा कञ्च । ह्रदा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक  
एहि रातकेँ नहि मालीत छथि । ओ लोकनि अञ्च आ कञ्चक जगहपब सेहो अत आ कर्गण लिखेत  
देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किञ्च सुरिधाजक अरञ्च छैक । किञ्च तँ एहिमे सगल आ सुनक रँचत होगत छैक ।  
ह्रदा कतोक रँव हञ्चलेखन रा ह्रदामे अक्षरावक छोट सग रँचु नहि तेनासँ अर्थक अर्थ होगत  
सेहो देखन जागत अछि । अक्षरावक प्रयोगमे उँटाका-दोयक सम्भारणा सेहो ततरँ देखन जागत  
अछि । एतदर्थ कर्ग नऽ कऽ परञ्च धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि उँचित अछि । गर्ग नऽ कऽ त्र  
धरि अक्षरक सञ्च अक्षरावक प्रयोग कवरामे कतहु कोना रिराद नहि देखन जागछ ।

२.ठ आ ढ : ठक उँटाका "व ह"जकाँ होगत अछि । अतः जतः "व ह"क उँटाका हो ओतः मात्र  
ठ लिखन जाए । आन ठाम खाली ठ लिखन जएरौक चाली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठञ्च, ठेवी, ठाकनि, ठाँ आदि ।



**VIDEHA**

ठ = गढ 1ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, माँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्रास शब्द, सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरुमे ठ आ मया तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । गह मियम ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु होगत अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण र कएन जागत अछि, हुदा ओकरा रँ कएने बहि निखन जएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रैगुनाथ, रिया, नरँ, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्थानपर फ्रेशि: रैगुनाथ, रिया, नर, देरता, रिष्टु, रंशि, रंदना निखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकान, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, हुदा ओकरा ज बहि निखरौक चाली । उच्चारणमे यरु, जदि, जहुना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कएन जाएरँना शब्द, सभकेँ फ्रेशि: यरु, यदि, यहुना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरौक चाली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रचनीमे ए आ य दुनु निखन जागत अछि ।

प्राचीन रचनी- कएन, जाए, हेत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रचनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शब्दक शुरुमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शब्द, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग बहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शब्दक आबन्धामे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण करै उपासना मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहताक रीत बहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-रीती यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । खम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शब्दकेँ लेन, हेरँ आदि कएने कतहु-कतहु निखन जाएरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोना रीतपर रँन दैत कान शब्दक पाछाँ हि, हु नगाउन जागत छैक । जेना- हुकहि, अणहु, ओकवहु, तकानहि, चोष्टहि, आणहु आदि । हुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरँ हुक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुके, अणला, तकाने, चोष्ट, आला आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशित: यक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- यडव (थडव), थोडशी (थोडशी), थरँकोण (थरँकोण), वृथेण (वृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।



**VIDEHA**

+ **ध्रुमि-लोग** : निम्नलिखित अरुप्रामे शिदुसँ ध्रुमि-लोग भउ जोगत अछि:

(क) फ्रियालुयी प्रलय अयमे य रा ए ब्रुभु भउ जोगत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचावण दीरघ भउ जोगत अछि । ओकव आगाँ लोग-सुचक छिन् रा रिकारी ( १ / २ ) वगाओव जोगछ । जेना-

पुर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपुर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठउ गेनाह, कउ जेन, उँठउ पडतोक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत आय (आए) प्रलयमे य (ए) ब्रुभु भउ जोगछ, ऋदा लोग-सुचक रिकारी नहि वगाओव जोगछ । जेना-

पुर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपुर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रलय गक उँचावण फ्रियापद, रँजो, ओ विशेषा तीनुमे ब्रुभु भउ जोगत अछि । जेना-

पुर्ण कप : दोसवि मानिनि छलि गेलि ।

अपुर्ण कप : दोसव मानिनि छलि गेल ।

(घ) रतमान प्रदणुक अश्रिम त ब्रुभु भउ जोगत अछि । जेना-

पुर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपुर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरमाण गक, उँक, एँक तथा लीकमे ब्रुभु भउ जोगत अछि । जेना-

पुर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिँतेक, होगक ।

अपुर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिँते, होग ।

(च) फ्रियापदीय प्रलय ह, हू तथा हकावक लोग भउ जोगछ । जेना-

पुर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गेनाह, नहि ।

अपुर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गेनाउ, नग, नप्रि, ले ।

९. **ध्रुमि श्रानुववा** : कोला-कोला नुव-ध्रुमि अपणा जगहसँ हष्ट कउ दोसव ठाम छलि जोगत अछि । खाम कउ द्रुय ग आ उँक सयुँकमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भउ गेन शिदुक मया रा अश्रुमे जँ द्रुय ग रा उँ आरँए तँ ओकव ध्रुमि श्रानुववित भउ एक अरुव आगाँ आरि जोगत अछि । जेना- शिनि (शिगण), पाणि (पागण), दानि (दागण), माष्ट (मागष्ट), काछ (काउछ), मासु (माउस) आदि । ऋदा तसेम शिदु, सभमे ग निखम नागु नहि होगत अछि । जेना- वगिँके वगण आ सुधाँके सुधाँस नहि कहन जा सकैत अछि ।



**VIDEHA**

१०. हनसु ( ) क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ( ) क आरथकता नहि होगत अछि । कावण जे शिद्धक अस्तमे अ उँटावण नहि होगत अछि । ऋदा सयूत भाषामँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिद्ध, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि शोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिद्धकेँ मैथिली भाषा सयूँझी निश्चय अस्मभाव हनसुरिहीन बाखन गेन अछि । ऋदा ब्याकवण सयूँझी प्रयोजनक लेन अवारथक स्थानपव कतहू-कतहू हनसु देन गेन अछि । प्रसूत शोथीमे मैथिली लेखक प्राचीन आ नरीन दनु शैलीक सवण आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेष्टि क२ रर्षि-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सभहि हनु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवण होरँरना हिसारँ रर्षि-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आष भाषाक मध्यमसँ मैथिलीक त्रान लेरँ पडि बहन परिश्रेष्ममे लेखनमे सहजता तथा एककपातापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेयता सभ कृष्टि नहि होगक, तादु दिस लेखक-मल्लन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक कहँ छनि जे सवणताक अस्मकालमे एहन अरस्था किम्लहू ले आरँ देरँक टाली जे भाषाक रिशेयता छँहिमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कर्पसँ सङ्ग न२ निर्धारित)

**१.२. मैथिली अकादमी, षरणा द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-गेवी**

१. जे शिद्ध, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रँचनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रँचनीमे लिखन जाय- उँदरहवणार्थ-

ग्राह

एखन

ठास

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्रह

अखन, अथनि, एखन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकल्पिक कर्पेँ ग्राह)

अँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकल्पिकतया अर्पणाओन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ३ गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, ज३ बहन अछि । कव' गेनाह, रा कवय गेनाह रा कव३ गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अछि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'अ' तथा 'अँ' ततय लिखन जाय जत सप्रुतः 'अग' तथा 'अँड' सदृश उँटावण गप्रु हो । यथा- देथेत, डलेक, लोखा, डोक गवादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कर्पेँ प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, ग३ह, अँह, लेह तथा देह ।





## २. मैथिलीमे भाषा संपादन गार्थक्रम

### २.१. उँचाका निर्देने: (ब्रौल कथ क ज्ञाह):-

दनु ष क उँचाकामे दौँतमे जीह सँठत- जेना रौजू नाम , ऋदा ण क उँचाकामे जीह मुर्धामे सँठत (ले सँठेए तँ उँचाका द्योष अछि)- जेना रौजू गणेशि । तानरा मेमे जीह तबुसँ , षमे मुर्धामे आ दनु समे दौँतसँ सँठत । निगौँ, सभ आ शोफा रौजि कइ देखु । मैथिलीमे ष केँ ऐदिक संकृत जकाँ थ सेहो उँचवित कथन जागत अछि, जेना रयाँ, द्योष । य अलको स्यनपव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञोग आ

गइसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचाका इँ ने क उँचाका स आ य क उँचाका ज सेहो होगत अछि ।

ओहिना ज्ञान ग रौशीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ज्ञान ग अक्षरक पहिल मिथिला जागत आ रौजलो ज्ञरौक टाली । काका जे हिन्दीमे एकव द्योषपूर्ण उँचाका होगत अछि (निखन तँ पहिल जागत अछि ऋदा रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक द्योषक काका हम सभ ओकर उँचाका द्योषपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचाका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचाका)

गँटि- ग हूँ ग ट (उँचाका)

आरौँ अ आ ग ज ए अँ ओ उँ अँ अः म अँ सभ जेन मात्रा सेहो अछि, ऋदा अँमे ज अँ ओ उँ अँ अः म केँ संज्ञाक्षर कगमे गनत कगमे प्रज्ञा आ उँचवित कथन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँचवित करबौँ । आ देखियौँ- अँ जेन देखिओ क प्रयोग अगुटित । ऋदा देखिअँ जेन देखियौँ अगुटित । कूँ हूँ धवि अ समितित जेनासँ कूँ हूँ रौलैत अछि, ऋदा उँचाका कान हननु ह्यञ्ज शिद्धक अक्षरक उँचाकाक प्रवृत्ति रौठन अछि, ऋदा हम जखन मलाजमे ज अक्षरमे रौजैत छी, तखना थकाका लोककेँ रौजैत स्यनरौहि- मलाज२, रासुरमे ओ अ ह्यञ्ज जूँ = ज रौजै छथि ।

ह्यव ङ अछि जूँ आ ए३ क संज्ञा ऋदा गनत उँचाका होगत अछि- गा । ओहिना ष अछि कूँ आ य क संज्ञा ऋदा उँचाका होगत अछि छ । ह्यव नेँ आ व क संज्ञा अछि श्रै (जेना श्रैमिक) आ सूँ आ व क संज्ञा अछि सूँ (जेना सिन्) । त्र जेन त+व ।

उँचाकाक ऑडियो फागन विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> पव उँपनछँ अछि । ह्यव केँ / सँ / पव पूरि अक्षरसँ सँठा कइ लिखुँ ऋदा तँ / कइ लँठा कइ । अँमे सँ मे पहिल सँठा कइ लिखुँ आ रौदरौना लँठा कइ । अकक रौद ठी लिखुँ सँठा कइ ऋदा अगुँ ठी लिखुँ लँठा कइ जेना

छलँठा ऋदा सभ ठी । ह्यव उँथ म स्रातम विभु- छठम स्रातम लेँ । घवरौदमे रौवा ऋदा घवरौदमे रावौ प्रज्ञा कक ।

बहए-

बहँ ऋदा सकेँए (उँचाका सकेँ-ए) ।



## VIDEHA

ऋदा कथला कान बरुए आ वहे ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्ना जगहमे पाकिंग कवरौक अन्नास बहे ओकरा । गूढनागव गता नागव जे दुनदुन नामा अ ड्रागव कनष्ट बसक पाकिंगमे काज कबेत बरुए ।

डले, डकए ये सेहो अ तबहक भेन । डनए क उँचावण डन-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँचावण सँजोगल)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कक , गद्यमे क२ सके छी । )

क (जेना बायक)

बायक आ सँग (उँचावण बाय के / बाय क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दु आ अन्नबाव- अन्नबावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि ऋदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बायसँ- (उँचावण बाय स२) बायकेँ- (उँचावण बाय क२/ बाय के सेहो) ।

कै जेना बायकेँ भेन हिन्दीक को (बाय को)- बाय को= बायकेँ

क जेना बायक भेन हिन्दीक का ( बाय का) बाय का= बायक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाय से) बाय से= बायसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक शेट् सँरहक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसव अर्धे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहक ? रिभक्ति "क" क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नधि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ अ सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओरु क रँदनामे रु जेना महरुगुर्ण (महओरुगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जतए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सँशुद्धक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स स ग त (सम्पति ले- काका सली उँचावण आसागीसँ सन्नर ले) । ऋदा सरोतिस (सरोतिस ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडेय/ पोडे लेन/ पोडेय लेन





**VIDEHA**

**सोडिअ/ सोडय/ (अर्ध परिवर्तन) सोडय/ सोडि**

उ लोकनि ( हठी कर, उ ये रिक्की ली)

उअ/ उहि

उहिल/

उहि लय/ उली वर

**ऊअरौं बैसरौं**

**गँचअरौं**

**देथियोक/** (देथिओक ली- तहिना अ ये द्यन्न आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अघटित)

**ऊकाँ / जेकाँ**

तँग/ तौं

हेअत / हएत

**नमिअ/ नहि/ नँग/ नगँ/ ली**

**सौंसै/ सौंसै**

रँच /

**रँची (सोबरओव)**

गाए (गांग नहि), रुदा गांगक दुध (गाएक दुध ली।)

**बहलौं पहिलतेँ**

**हमली/ अली**

सरँ - सभ

**सरँरुक - सभरुक**

**धवि - तक**

**गग- रौत**

**रूसरँ - समयरँ**

**रूसलौं/ समयलौं/ रूसलहुँ - समयलहुँ**

**हमरँ अँव - हम सभ**

**आकि- आ कि**

**सकेड/ कलेड** (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ली)



**VIDEHA**

**होअण/ होनि**

**जाअण** (जानि ले, जेना देन जाअण) क्रुदा **जानि-रूमि** (अर्थ परिवर्तन)

**गअण/ जाअण**

**आँ/ जाँ/ आँ/ जाँ**

ये, केँ, मँ, गव (मिद्धमँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिद्धमँ सँ क२) क्रुदा दूँ रा रँसी रिभक्ति संग बहनागव पहिनि रिभक्ति ठाकेँ सँ। जेना **एमे सँ** ।

**एकँ , दूँ** (क्रुदा क२ थँ)

रिकावीक प्रयोग मिद्धक अन्तमे, रीचमे अन्तराष्ट्रक कर्पेँ ले। आकावाञ्च आ अन्तमे अ क रौद रिकावीक प्रयोग ले (जेना **दिअ**

**, आ/ दिअ , आ , आ ले )**

अपेक्षणीय प्रयोग रिकावीक रँदनामे कवरँ अञ्चित आ मात्र हर्षक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-  
उना रिकावीक संस्कृत क२ अग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूनु ठाय एकव जाग बहेत अछि। बहि सकेत अछि (उँचावमे जाग बहिते अछि) । क्रुदा अपेक्षणीय सेहो अग्रजेमे गमेसिर केसमे जागत अछि आ हँचमे मिद्धमे जातए एकव प्रयोग जागत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो एकव उँचाव वैजेल डेठव जागत अछि, माल अपेक्षणीय अरकामे ले दैत अछि रवण जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकावीक रँदना देनाग तकनीकी कर्पेँ सेहो अञ्चित) ।

अगमे, एहिमे/ **एमे**

**जअमे, जाहिमे**

एथन/ **अथन/ अगथन**

**केँ (के नहि) मे (अञ्चाव बहित)**

**भ२**

**मे**

**द२**

**तँ (त२, त ले)**

**सँ ( स२ स ले)**

**गाँ उव**

**गाँ वग**

**साँ अण**

जो (जो go, कले जो do)



**VIDEHA**

**ते/तथ** जेना- ते दूखारे/ तगमे/ तगले

**जे/जथ** जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

**ए/अथ** जेना- ए कावण/ एसँ/ अगले/ ऋदा एकव एकटी थाम प्रयोग- नावति कतेक दिसँ कहैत बहैत अग

**ले/वथ** जेना लेसँ/ नगले/ ले दूखारे

नहँ/ लो

**गे/गो/ गवँ/ गेनहँ/ गेनहँ/ गेन**

**जग/ जाहि/ जे**

**जहिग/ जाहिग/ जगग/ जेग**

**एहि/ अहि**

**अग (बोझक अतमे ब्राह्म) / ए**

**अगड/ अडि/ अड**

**तथ/ तहि/ ते/ ताहि**

**ओहि/ ओग**

**सोथि/ सोथ**

**जोरि/ जोरी/ जोर**

**बनेली/ बवहि**

**ते/ तँग/ तँ**

**जापर/ जपर**

**नग/ ने**

**डग/ डे**

**नहि/ ने/ नग**

**गग/ गो**

**डनि/ डनहि ...**

**समय** मेरँदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपर गत्यादि । असंगबमे **द्वन्द्व** आ रिभक्ति जूठल छदे जना छदेसँ छदेमे गत्यादि ।



**VIDEHA**

**अग/ जाहि/**

**जे**

**जहिठाग/ जाहिठाग/ अगठाग/ जेठाग**

**एहि/ अहि/ अग/ ए**

**अगड/ अडि/ एड**

**तग/ तहि/ ते/ तहि**

**उहि/ उग**

**सीथि/ सीथ**

**जीरि/ जीरी/**

**जीर**

**भले/ भलेही/**

**भवहि**

**ते/ तग/ तै**

**अधर/ अधर**

**नग/ नै**

**डग/ डै**

**नहि/ नै/ नग**

**गग/**

**लै**

**डहि/ डहि**

**टुकन अडि/ लोव गडि**

**२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्थक्य**

नीटॉक सूट्टीमे देन बिकल्पमेसँ लैंग्गज एडिटेर द्वावा कोष कप टुकन जेरौक टाली:

लौन्ड कथन कप त्राह:

१. होयरीना/ होरैयरीना/ होमयरीना/ हेरैरीना, हेमरीना/ होयरीक/ होरैयरीक / होयरीक

२. अा / अा२



## VIDEHA

था

३. क जेले/क२ जेले/क३ जेले/क४ जेले/क५ जेले/क६ /क७/क८/क९

४. भ गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ४ गेन/भ५

गेव

३. कव' गेवाह/कव२

गेवाह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

३.

बिथ/दिथ बिथ, दिथ, बिथ, दिथ /

१. कव' रैवा/कव२ रैवा/ कवा रैवा कवेरैवा/क'व' रैवा /

कवेरैवा

५. रैवा रवा (शुकवा), रानी (सूनी) ९

.

थाइव थाइ

१०. थायः थायह

११. दुःख दुथ ९

२. चलि गेन चव गेवा/चैन गेन

१३. देवबिह देवकिह, देवबिष

१४.

देखबहि देखबनि/ देखबैह

१३. डबिह/ डबहि डबिष/ डबेण/ डबनि

१३. चमेत/दैत चमति/दैति

११. एथला

थथला

१५.

रैठनि रैठण रैठहि

१९. उ' /उ२(सरैणाग) उ



**VIDEHA**

२०

७. **संयोजक** ७ / ७२

२१. **शानि/शानि शानि/शानि**

२२.

**जे जे /जे२ २३. ना-सुख ना-सुख**

२४. **केवलि/केवलि/कवलि**

२५. **तखनत/ तखन त**

२६. **जा**

**बल/जाय बल/जाय बल**

२७. **निकन/निकन**

**वागव/ वागव रेलवाय/ रेलवाय वागव/ वागव निकन /रेलवे वागव**

२८. **उत/ जत जत / उत / जत/ उत**

२९.

**की खुब जे कि खुब जे**

३०. **जे जे /जे२**

३१. **कुदि / यदि(मोन पावर) कुदि/यादि/कुदि/यादि**

**यदि (मोन)**

३२. **ओह/ ओह**

३३.

**हंस/ हंस हंस**

३४. **लो खाकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस**

३५. **सान-सुब सान-सुब**

३६. **डह/ सात ड/डः/सात**

३७.

**की की / की (दीदीकाबाबुमे २ रचित)**

३८. **जराय जराय**

३९. **कवताह/ कवताह कवताह**



**VIDEHA**

४०. दलाण दिगि दलाण दिगे/दवाण दिय

४१.

**. लावाह गयवाह/गयवाह**

४२. किड थाव किड ठव/ किड थाव

४३. जाग डव जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेठ जागत डव जेठ जाग डव गहुँटा/ तेष्ट जागत डव

४३.

**जराण (यरा)/ जराण(योरा)**

४७. वय/ वय क / क२/ वय क३ / व२ क२/ व२ क३

४१. व /व२ क३/

**क३**

४५. एथन / एथल / अथन / अथल

४६.

**थलीकेँ थलीकेँ**

३०. गलीव गलीव

३१.

**धाव गाव केनाथ धाव गाव केनाथ/केनाथ**

३२. जेकाँ जेकाँ/

**जकाँ**

३३. तहिन तेहिन

३४. एकव अकव

३३. रँहिन रँहिनोग

३७. रँहिन रँहिन

३१. रँहिन-रँहिनोग

**रँहिन-रँहिन**

३५. नहि/ ले

३६. कवरौ / कवरौया/ कवरौया



**VIDEHA**

७०. ठँ/ त २ तय/तय

७१. डैयावी ये डैय-डाय/डै, डैय-डाय/डाय

७२. ङितीये दू डाय/डाय/डाय

७३. ङ पौथी दू डाय/डाय/डाय/ डाय/ डाय। यारत डारत

७४. याय ये / याय दूद ययक ययत

७५. देह/ दय दय/ दय/ दय/ दय/ दय/ दय/ दय

७६. द / द/ द

७७. ड (संयोजक) ड (संयोजक)

७८. तका कय तकय तकय

७९. पौले (on foot) पयले कयक/ केक

१०.

**तहमे तहमे**

११.

**रुकी**

१२.

**रुकी कय कय / कय**

१३. रुकीय/रुकीय

१४. रुकी

१५.

**दिका दिका**

१६.

**तहमे**

१७. गवरुवह/ गवरुवह/

गवरुवह/ गवरुवह

१८. रौव रौव

१९.

**तेह तेह(थय)**





**VIDEHA**

+०. जे जे'

+१

. सो के से /के'

+२. अथुनका अथुनका

+३. तुमिनाव तुमिनाव

+४. सुगव

/ सुगवका सुगव

+५. सठलक सठलक +६.

**तुमि**

+७. कवगयो/उ कवेयो ल देवक /कवेयो-कवगयो

+८. सुवादि

**सुवादि**

+९. सगड १-सठि

**सगड १-सठि**

१०. गवे-गवे पौले-पौले

११. खेदेरौक

१२. खेदेरौक

१३. वगा

१४. लो- लो लोअ

१५. सुमव सुमव

१६.

**सुमव (सिवाधन अर्थमे)**

१७. यौह यथह / गथह/ सैह/ सथह

१८. तातिव

१९. अथलाय- अथलाग/ अथलाग/ एलाग

२०. निह- निह

२०१.



## VIDEHA

### बिनु बिन

१०२. ~~जाग~~ जाग

१०३.

~~जाग~~ (in different sense) - last word of sentence

१०४. ~~छत~~ गब थायि ~~जाग~~

१०५.

### ल

१०६. ~~थेवाथ~~ (pl ay) - ~~थेवाथ~~

१०७. ~~शिकागत~~- शिकायत

१०८.

### ठग- ठग

१०९

### . गठ- गठ

११०. ~~कमिअ~~/ ~~कमिये~~ ~~कमिये~~

१११. ~~वाकस~~- वाकसे

११२. ~~लोअ~~/ लोय ~~लोअ~~

११३. ~~खडवदा~~-

### उबदा

११४. ~~बुंमेवहि~~ (different meaning - got understand)

११५. ~~बुंमएवहि~~/~~बुंमेवनि~~/~~बुंमयवहि~~ (understood himself)

११६. ~~चलि~~- ~~चव~~/ ~~चमि~~ ~~लाव~~

११७. ~~खथाथ~~- ~~खथाय~~

११८.

~~मोष~~ ~~गाउवबिह~~/ ~~मोष~~ ~~गाउवबिह~~/ ~~मोष~~ ~~गावबिह~~

११९. ~~कैक~~- ~~कथक~~- ~~कअथक~~

१२०.



**VIDEHA**

**वग वग**

१२१. **जबेनाग**

१२२. **जबेनाग** जबेनाग- जबेनाग/

**जबेनाग**

१२३. **होगत**

१२४.

**गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि**

१२५.

**टिखेट- (to test) टिखेट**

१२६. **कबरेयो** (willing to do) कबरेयो

१२७. **जेकवा- जकवा**

१२८. **तकवा- तेकवा**

१२९.

**बिदेसब झामे/ बिदेसबे झामे**

१३०. **कबरेनहुँ/ कबरेनहुँ/ कबरेनहुँ कबरेनहुँ**

१३१.

**हबिक (ढाका लखक)**

१३२. **उज्ज रज्ज अखसोचा/ अखसोस कागत/ कागचा/ कागज**

१३३. **खोषे भाग/ खोषे-भागे**

१३४. **पिछा / पिछाया/ पिछा**

१३५. **खण/ ल**

१३६. **रेछा खण**

**(ल) पिछा जाय**

१३७. **तखण ल (खण) कहेत अछि। कहे/ सुल देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुलत-सुलत/ देखेत-देखेत**

१३८.

**कतेक लोठे/ कतेक लोठे**



**VIDEHA**

१३६. कमाँज-धमाँज/ कमाँज- धमाँज

१४०

- वग वग

१४१. खेवाँज (for playing)

१४२.

**डबिह डबिन**

१४३.

**होखत होख**

१४४. का कियो / केउ

१४५.

**कमे (hair)**

१४६.

**कस (court -case)**

१४७

- रैननाँज/ रैननाय/ रैननाय

१४८. खरेनाँज

१४९. ककरी कसी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कवग

१५२. डुराँरौं/ डुराँरौं/ डुराँरौं डुराँरौं/ डुराँरौं

१५३. एखनका/

**एखनका**

१५४. वग/ विखग (राकाक अतिम मेहें)- वग

१५५. कखनक/

**कवक**

१५६. गवग गग

१५७



**VIDEHA**

**बबदी बदी**

१३१. **बुना लोवाह** बुना / बुना२

१३२. **बुना-बुना**

१३३.

**बेना ल बेवबहि बेना ल बेवबहि**

१३४. **बेना / ले**

१३५.

**बेना बेना**

१३६. **बेना/ बेना** बेना

१३७. **बेना-बेना** बेना

१३८. **बेना**

१३९. **बेना/बेना** बेना

१४०. **बेना/बेना**

१४१.

**बेना**

१४२. **बेना/ बेना**

१४३. **बेना**

१४४.

**बेना बेना**

१४५.

**बेना बेना**

१४६. **बेना/बेना**

१४७. **बेना**

१४८. **बेना/ बेना**

१४९. **बेना/ बेना** (बेना/ बेना)

१५०. **बेना / बेना**

१५१.



**VIDEHA**

**कबरौंओ कबरौंओये**

११९. एकैठी

१२०. कबितनि / कबतनि

१२१.

**गहुँटा गहुँट**

१२२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१२३.

**वगवहि वगवनि वागवहि**

१२४.

**बुनि (उँटावा बुजा)**

१२५. बछि (उँटावण अगछ)

१२६. एवनि लावनि

१२७. रिंतोल/ रिंतोल/

**रिंतोल**

१२८. कबरौंओवहि/ कबरौंओवनि

**करेवबिह/ करेवबनि**

१२९. कबएवहि/ करेवनि

१३०.

**आकि/ कि**

१३१. गहुँटा

**गहुँट**

१३२. रँती जवाय/ जबाए जबा (आणि वगा)

१३३.

**से से**

१३४.

हाँ से हाँ (सेँसे हाँ रिंतोलसे ली कए)





**VIDEHA**

२१९. निथय/ नियग

२२०

**लेबदेथवा/ लेबदेयव**

२२१. पहिव अफव ठा/ रीदक/ रीचक ठ

२२२. तहि/ तहिं/ तमिं/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. ठँअ/

**ठै / तअ**

२२५. नँग/ नगँ/ नमिं/ नहि/ लै

२२६. हे/ हए / एवोहँ/

२२७. डमिं/ डै/ डैक / डग

२२८. दृष्टिँ/ दृष्टियँ

२२९. थी (come) / थीं (conjunction)

२३०.

**थी (conjunction) / थीं (come)**

२३१. कला/ कोला, कोना/ कोना

२३२. लोलह-लोलहि-लोलमि

२३३. लैरौक- लोएरौक

२३४. केलाँ- कएलाँ- कएनहँ/ केलाँ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. केहेन- केहन

२३७. थीं (come) - थीं (conjunction - and) / थीं । आरँ- आरँ / आरँह- आरँह

२३८. लएत- हेत

२३९. घुमेनहँ- घुमेनहँ- घुमेनहँ

२४०. एलाक- अएलाक

२४१. लोमि- लोमि/ लोहि

२४२. उ- वाय उ अंगक रीच (conjunction), उं कहवक (he said) / उ





**VIDEHA**

२४३. की ह्य/ कोसी थपवी ह्य/ की हे । की हज

२४४. दृष्टिअँ/ दृष्टियैँ

२४५.

**. गोपिय/ गोपेय**

२४६. ठौँ / ठँ/ तमिथ/ तहिँ

२४७. जौँ

**/ जाँ जौँ**

२४८. सभ/ सरौँ

२४९. सभक/ सरौँक

२५०. कहि/ कसि

२५१. कला/ कोला/ कोलहँ/

२५२. शबकती भय लय/ भय लय/ भय लय

२५३. कोना/ कोना/ कना/ कना

२५४. थः/ थह

२५५. जलौ/ जलप

२५६. लोवनि/

**लोवह (अर्थ परिवर्तन)**

२५७. केवहि/ केवहि/ केवनि/

२५८. नय/ नय/ नयह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कलक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवजल/ गठवजल/ गठवनि/ गठवनि/

२६१. निथय/ निथय

२६२. हेबटथव/ हेबटथव

**२६३. गह्वि थकव कहल ठा रीचमे कहल ठ**

२६४. आकावाञ्चमे रिंकावीक प्रयोग उँटित ले/ अपोद्धातकीक प्रयोग श्लाकक तकनीकी न्यूनताक परिचायक  
ठकव रँदना अरग्रह (रिंकावी) क प्रयोग उँटित

२६५. केव (पद्यमे जौह) / -क/ क२/ के



**VIDEHA**

२७३. छेहि- छहि

२७५. बलौष/ बलौये

२७५. लोएत/ लएत

२७६. जएत/ जएत

२७७. खएत/ खएत/ खओत

२७८

२७९. खएत/ खएत/ खेत

२८०. शिखएराक/ शिखराक/ शिखराक

२८१. गुरु/ गुरु

२८२. गुरुले/ गुरु

२८३. खएतल/ खओतल/ एतल/ एतल

२८४. जाहि/ जाग/ जग/ जे

२८५. जएत/ जेतए/ जएतए

२८६. खएव/ खएव

२८७. केक/ कएक

२८८. खएव/ खएव/ खएव

२८९. जए/ जखए/ जए (नामति जए नगदीह । )

२९०. ब्रकएव/ ब्रकएव

२९१. कर्तृखएव/ कर्तृखएव

२९२. तहि/ ते/ तग

२९३. गायरौ/ गाएरौ/ गएरौ

२९४. सकै/ सकए/ सकय

२९५. सेवा/ सवा/ सवए (भोत सवा जेव)

२९६. कहेत बली/ देखेत बली/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- एहिना चलेत/ गटेत

(गटे- गटेत अर्थ कथला काव परिवर्तित) - खी ब्रसे/ ब्रसेत (ब्रसे/ ब्रसे छी कदा ब्रसेत-ब्रसेत)/ सकैत/ सकै । कलेत/ कले । दे/ देत । छेक/ छे । ब्रसे/ ब्रसेक । बखरौ/ बखरौक । ब्रि/ ब्रि । वातिक/ वातिक ब्रसे खी ब्रसेत कव अण-अण जगहन शयौग समीप अछि । ब्रसेत- ब्रसेत खी ब्रसेत । हयह ब्रसे छी ।



**VIDEHA**

२१७. दुखीब/ द्वाब

२१०. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२११.

खन/ खीन/ खुना (लेब खन/ लेब खीन)

२१२. तक/ धवि

२१३. ग२/ लो (meaning different - जनरो ग२)

२१४. म२/ सँ (दूदा द२, न२)

२१५. उ२ (तीन अक्षरक मेल रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उँगयोग) आदिक रँदना ह्रु आदि । मह उ२/ मह उ२/ कर्ता/ कर्ता आदिसे त संशुद्धक कोना आरंभकता मैथिलीमे ले अछि । **रउर**

२१६. रौमी/ रौमी

२१७. रौना/ रौना रौना/ रौना (बहुरौना)

२१८

**रावी/ (रँदनेरावी)**

२१९. राती/ राती

२००. अस्तुर्विष्टीय/ अस्तुर्विष्टीय

२०१. लमथ/ लमथ

२०२. नमथ/ नमथ

२०३. वली/ वली (

**लेष्टे/ लेष्टे)**

२०४. वगव/ वगव

२०५. हरौ/ हरौ

२०६. बाखवक/ बाखवक

२०७. आ (come)/ आ (and)

२०८. पशताग/ पशताग

२०९. २ केब रारहाव शिष्टक अस्तुमे मात्र, यथासंभर रीटमे ले ।

२१०. कहैत/ कहै

२११.



**VIDEHA**

**बहू (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)**

३९. तागति/ ताकति

३९. खवाग/ खवारै

३९. लौगा/ लौगि/ लौगिनि

३९. जार्ति/ जार्ति

३९. कागज/ कागज/ कागज

३९. गिले (meaning different - swallow)/ गिल (थस)

३९. बह्दिय/ बह्दिय

**DATE-LIST (year - 2012-13)**

**(१४२० फसवी साव (**

**Marriage Days:**

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

**Upanayana Days:**

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21



**VIDEHA**

***Dvī ragaman Dīn:***

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

***Mundan Dīn:***

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

**FESTIVALS OF MTHILA (2012–13)**

Mauna Panchami –08 July

Madhushravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July

Raksha Bandhan – 02 Aug

Krishnastami – 10 August



**VIDEHA**

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 17 August

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Har t a l i k a Teej - 18 Sept ember

Chaut hChandr a-19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Eka dashi -26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 27 Sept ember

Anant Catur dashi - 29 Sep

Agast yar ghadaan- 30 Sep

Pi t r i Paksha be g i n s - 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji t i a-08 Oct ober

Mat r i Navami - 09 Oct ober

Somvat i Amavasya Vr at - 15 Oct ober

Kal ashst hapan- 16 Oct ober

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat r i k a P r a v e s h - 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober

Maha Navami - 23 Oct ober

Vi j aya Dashami - 24 Oct ober

Koj agar a- 29 Oct

Dhant er as - 11 November

Di yabat i , shyama pooj a-13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-14 November

Bhr at r i dwi t i ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 15 November



**VIDEHA**

Chhat hi -19 November

Devot t han Ekadashi - 24 November

r avi vr at ar ambh- 25 November

Navanna par van- 25 November

Kar t i k Poor ni ma- Sama Vi sar j an- 28 November

Vi vaha Panchmi - 17 December

Makar a/ Teel a Sankr anti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 08 Febr uar y

Bas ant Panchami / Sar aswati Pooj a- 15 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 17 Febr uar y

Mahashi var at ri -10 Mar ch

Hol i kadahan-Fagua-26 Mar ch

Hol i - 28 Mar ch

Var uni Trayodashi -07 April

Chai ti navar atr ar ambh- 11 April

Jur i shi t al -15 April

Chai ti Chhat hi vr at a-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -bar asait - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June



**VIDEHA**

Somavat i Amavasya Vr at a - 08 July

Jagannat h Rat h Yat r a - 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma - 22 Jul

**VI DEHA ARCHI VE**

१.पत्रिकाक सबठो पुरान अंक ब्रैल-बिदेह अ, तिवहूत आ देरणागरी कपमे Vi deha e j ournal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अंक ३.० पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अा सँ आगाँक अंक ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलन आँ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mthila Painting/ Mbdern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**बिदेहक एहि सब सहयोगी विकसक सेहो एक लेब जाई ।**

३. बिदेह मैथिली ब्लॉग :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>





**VIDEHA**

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटव :

<http://videha-aggregate.blogspot.com/>

+ बिदेह मैथिली साहित अग्रेजीमे अबुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

२. बिदेहक पुरि-कप "भानसबिक गाढ" :

<http://gajendrat-hakur.blogspot.com/>

३. बिदेह गडैर :

<http://videha123.blogspot.com/>

४. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

५. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलासब) जानबूत (बैरंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

६. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैव बिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

७. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY E JOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

८. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

९. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१०. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१२. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबूत)



**VIDEHA**

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. श्रुति शकशिल.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेअ

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२४. लषा लुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह लेडियोकलरिज आदिक गहिन लोडकास्ट मागठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio

२८.  Join official Videha facebook group.

२९. बिदेह मैथिली बाँठ उमेर

<http://maithilidrama.blogspot.com/>

३०. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३१. मैथिली फिल्ल

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३२. अलकलार आथर

<http://anchinharakhar kolkata.blogspot.com/>

३३. मैथिली हागकु

<http://maithili-haikublogspot.com/>



**VIDEHA**

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maitthili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maitthili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maitthili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maitthili-samalochna.blogspot.in/>

**महत्वपूर्ण सूचना:** The Maitthili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



VIDEHA



बिदेह:अदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:४:२०१० "बिदेह"क छिष्ट संस्करण: बिदेह-अ-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छनन बचना समिति।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to [shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



**VIDEHA**

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: निर कमार साँ आ कृष्णाजी (मलाज कमार कर्ण) । लेख-संपादन: नारायण कमार साँ आ पद्मिका बिष्टासद साँ । कवि-संपादन: ज्योति साँ टोषरी आ बग्गि लेखा सिन्हा । संपादक-सोध-अनुसंधा: डा. जया रमाँ आ डा. बंजरी कमार रमाँ । संपादक- नाटक-वैभव-चवचि-बैभव ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुण्य मंडल आ प्रिया साँ । संपादक- अनुवाद विभाग- विनोद उमेश ।

बचनाकाब अगण यौनिक आ अप्रकाशित बचना (जकर यौनिकताक संपूर्ण उन्तवदासिह्न लेखक पाक मध्य डहि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेन अटैचमेण्टक रुपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अगण संक्षिप्त परिचय आ अगण क्लेब कएन गेन फोर्मेट पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे ठाँगण बह्य, जे ई बचना यौनिक अछि, आ पहिने प्रकाशिक हेतु बिदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्ति होयबैक बाद यथार्थतः शीघ्र ( सात दिनक अंततः) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संरक्षित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि ई पत्रिकाकेँ शीघ्रता नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे प्रकाशित सभ्ठा बचना आ आर्काइवरक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमे छथि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काइवरक उपयोगक अघिकाब किनबैक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर संपर्क कर । एहि सांगठिकेँ प्रीति साँ ठाकुर, मधुनिका टोषरी आ बग्गि प्रिया द्वारा डिजाइन कएन गेन ।



सिद्धिबद्ध

